Written by
anurag
agnihotri

शम्भाला - राइज़ ऑफ ए डेविल

उसकी आंख खुली तो उसने आप को एक सुनसान निर्जन स्थान पर पाया, घने अंधेरे में वो जगह काफी भयानक लग रही थी.. चांद की रौशनी में बस थोड़ा बहुत ही नज़र आ रहा था और उतनी रौशनी में उसने देखा कि वो एक शमशान में चित पड़ा है, एक ऐसे शमशान में जिसकी अधिकांश चिताएं जल कर ठंडी होनी शुरू हो गई थीं सिवाय दूर एक चिता के... जो कि अब भी बुझते बुझते एकाएक बीच बीच में भड़क उठती थी जैसे किसी पर अपना क्रोध निकाल रही हो।

वो आश्चर्य और डर से आंखे फाड़े कभी उस जगह को देखता तो कभी उन बुझती चिताओं को... उसकी समझ में कुछ भी तो नहीं आ पा रहा था.. इसी कारण उसने कई बार अपनी आंखों को मसल कर खोला लेकिन हर बार उसे वही भयानक मंज़र नज़र आता। वो समझ नहीं पा रहा था कि आख़िर वो यहाँ कैसे आ गया... वो तो अच्छा भला शादी वाले घर मे था, उसके छोटे भाई की शादी हुई थी और वे सब नई ब्याहता को विदा करवा कर आज दिन में ही तो लाये थे, दिन भर हवेली में शादी के बाद कि रस्में और हंसी ठिठोली होती रही थीं और रात में अधिकांश मेहमानों को विदा करके वो थक कर चूर हो कर अपने पलँग पर बेसुध हो कर गिर पड़ा था... पत्नी ने कहा भी था कि कुछ खा कर सोइये.. लेकिन वो थकावट और एक रात जागने के कारण बिना खाये ही सो गया था। उसे अच्छे से याद था कि वो अपनी हवेली में ही सोया था फिर उसे यहाँ इस भयानक जगह पर कौन ले आया?

अभी वो इस उधेड़बुन में ही लगा था कि तभी उसे उस दूर जलती बुझती चिता में से एक साया निकलता हुआ दिखाई दिया, उस दृश्य को देखकर उसे इतनी गर्मी में भी अपना खून जमता हुआ महसूस हुआ... और उधर वो साया शनः शनः उसके नज़दीक आता जा रहा था।

कुछ ही देर में वो साया उसके इतने नज़दीक आ चुका था कि वो ये पहचान सकता था कि वो किसी औरत का साया है और कुछ ही पल में वो साया उसके सामने खड़ा था।

चांद के मद्धिम प्रकाश में उस औरत का चेहरा बहुत स्पष्ट तो नहीं हां इतना अवश्य दिख रहा था कि अच्छे से अच्छे मज़बूत दिल वाले कि ह्रदयगति रुक जाए और उसका दिल तो इतना मज़बूत भी नहीं था कि वो इतना भयानक दृश्य देख पाता, इसीलिए उसे अपने सीने में एक चुभन सी महसूस हुई। सीने पर हाँथ रख वो लड़खड़ाती जुबान से सिर्फ इतना ही बोल पाया "क.. क.. कौन हो तुम ?? और मैं यहाँ पर कैसे आ गया ??? "

चूँकि वो उस जलती चिता से निकल कर आई थी इसलिये उसके शरीर का ज्यादातर मांस जल चुका था और उसमें से मांस के जलने की बदबू अब भी आ रही थी.. चेहरे और हाँथ की खाल जलने के कारण गल गल के नीचे टपक रही थी, चेहरे पर आंख के नाम पर सिर्फ एक आंख थी और वो भी ऐसी लग रही थी कि अब नीचे गिरी की तब और दूसरी आंख की जगह पर सिर्फ एक गड्ढा नज़र आ रहा था... नाक के नाम पर सिर्फ दो छेद थे और होंठ भी चूंकि आग से जल चुके थे तो वहाँ से सिर्फ दांत दिख रहे थे और देखने में बड़े ही भयानक लग रहे थे।

उसका सवाल सुनकर वो बोली कुछ नहीं बस ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगाने लगी जैसे उसने उससे हंसी ठिठोली कर दी उसके साथ कोई हास्य विनोद कियाहो। वो सीने पर हाँथ रखे.. आंखे फाडे उसे हंसता हुआ देख रहा था। हंसते हुए वो और भी भयानक लग रही थी... उसकी इकलौती आंख कभी आंख के गड्ढे से बाहर आती तो कभी अंदर चली जाती। वो उसे हंसते हुए ऐसे देख रहा था जैसे कोई निरीह खरगोश अपने शिकारी भेड़िये को।

जब वो हंसते हंसते थक गई तो उसे अपनी इकलौती लाल लाल आंख से घूरते हुए बोली "मैं बदला हूँ.. तेरे पूरे परिवार का बदला, एक एक करके मैं तुम सब को तड़पा तड़पा कर मारूंगी.... और वीरेंद्र तू यहां नहीं आया है.. मैं आई हूँ तेरे पास.. तेरे अंदर, अब जो मैं चाहूंगी वो तू देखेगा... अपनी मौत भी " और इतना बोल कर वो उसके ऊपर ऐसे झपटी जैसे चील अपने शिकार पर।

आधी रात में अपने पति के मुंह से भयानक चीख सुनकर नैना की आंख खुल गई, उसने पास में स्टूल पर रखी लालटेन की लौ तेज़ करके अपने पति वीरेंद्र की ओर देखा तो उसके मुंह से भी एक घुटी घुटी सी चीख निकल गई। वीरेंद्र आंख बंद कर के पलँग पर लेटा लेटा बुरी तरह छटपटा रहा था और साथ ही बड़बड़ा रहा था "मुझे छोड़ दो... मुझे जाने दो, मैंने तुम्हारे साथ कोई अपराध नहीं किया.. मैं मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं "और अभी वो ये सब बड़बड़ा ही रहा था कि तभी वो पलँग से हवा में ऐसे ऊपर उठने लगा जैसे किसी ने उसकी गर्दन पकड़ कर उठा दिया हो, वो पूरी ताकत लगा कर अपने दोनों हाँथों से अपनी गर्दन छुड़ाने का असफल प्रयास कर रहा था, हवा में लटके होने के कारण उसका दम घुटना शुरू हो गया था और इसीलिए उसके पैर हवा में ही छटपटा रहे थे, लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी उसकी आंखें अब भी बंद थीं जैसे कि वो अब भी गहरी नींद में हो।

उसकी पत्नी नैना की कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि ये सब क्या हो रहा है इसलिए पहले तो उसने वीरेंद्र के हवा में लटके पैरों को पकड़ कर नीचे खींचने का प्रयास किया और जब सफल नहीं हुई तो वो डर से चीखती हुई हवेली के दूसरे लोगों को मदद के लिए बुलाने तेज़ी से भागते हुए बाहर निकल गई।

उसने वीरेंद्र को गर्दन से पकड़ कर हवा में टांग दिया था और धीरे धीरे उसकी पकड़ कसती जा रही थी, वीरेंद्र को अपने सामने साक्षात मौत नज़र आ रही थी इसीलिए वो गिड़गिड़ाते हुए उससे बोला "मुझे छोड़ दो... मुझे जाने दो, मैंने तुम्हारे साथ कोई अपराध नहीं किया.. मैं मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं "

"जानती हूँ की तू मुझे नहीं जानता... लेकिन मैंने भी मरते समय कसम खाई थी कि तेरे खानदान में किसी को ज़िंदा नहीं छोड़ूंगी, तेरी बदकिस्मती से तू मेरा पहला शिकार है... आज तू मरेगा बाकी के तेरे बाद "

"लेकिन ये तो बता दो की मैं यहाँ शमशान में कैसे आ गया"

"हा.. हा.. हा तू अभी तक नहीं समझा कि तू यहां पर नहीं है बल्कि तू अपनी हवेली पर ही है.. अपने कमरे में, मैंने तेरी नींद... तेरे दिमाग पर कब्ज़ा कर लिया है और तू सपने में वही देख रहा है जो मैं तुझेदिखा रही हूं, तेरे सपने में जो कुछ भी होगा वो सब तेरे साथ सच में होगा... यहाँ तक की तेरी मौत भी " और इतना बोल कर वो उस पर टूट पड़ी। वो अपनी उंगली के लम्बे लम्बे नाखून उसके माथे पर गड़ा कर खरोंच कर कुछ लिखने लगी और वो वीरेंद्र दर्द से तड़पने लगा। जब वो अपने नाखून से वीरेंद्र के माथे को खुरच कर हटी तो वहां पर एक स्वास्तिक का निशान बन चुका था।

नैना जब सभी को बुला कर अपने कमरे तक लाई... तब भी वीरेंद्र वैसे ही हवा में लटका दर्द से छटपटा रहा था। वीरेंद्र को ऐसे हवा में लटका देख कर उन सभी के मुँह से भयानक चीखें निकलने लगीं, अभी वो उस भयानक दृश्य को देखकर भयभीत हो ही रहे थे कि तभी वीरेंद्र के माथे पर अपने आप खुरचने का निशान उभरने लगा… कुछ ऐसे जैसे कोई चाकू की नोक से खुरच रहा हो। और फिर कुछ पल में ही उस खुरचने के निशान ने स्वास्तिक का रूप ले लिया।

वीरेंद्र के माथे पर अपने आप उभर आये उस स्वास्तिक के निशान को देखकर वीरेंद्र के पिता ठाकुर वीर प्रताप के मुँह से बड़ी ही दर्दनाक चीख निकल गई और साथ ही वे बड़ी ज़ोर से चिल्लाये "न न नहीं... वो वो लौटकर नहीं आ सकती, श शशम्भाला फिर से लौटकर नहीं आ सकती..न न नहीं आ सकती "

ठाकुर वीर प्रताप के मुंह से चीख के साथ निकले उस शब्द ' शम्भाला ' ने सभी को ठाकुर की ओर अचम्भे से देखने के लिए विवश कर दिया। लेकिन ठाकुर साब का ध्यान उन लोगों की तरफ नहीं था... वो तो अब भी बुरी तरह भयभीत होकर लगातार चीखे जा रहे थे। उनको सम्भलता ना देखकर उनके विश्वासपात्र नौकर शेर सिंह ने उन्हें बड़ी जोर से झिंझोड़ कर हिलाया और साथ ही धीरे से उनके कान में फुसफुसाया "खुद को संभालिये ठाकुर साब... सब लोग इधर ही देख रहे हैं, शम्भाला का राज़ आपने ही राज़ रखने के लिए कहा था और अब आप ही उसे जगजाहिर करना चाहते हैं "

शेर सिंह की बात सुनते ही ठाकुर वीर प्रताप तुरंत अपने होशोहवास में आ गए लेकिन उनके चेहरे पर डर की हवाईयां अब भी उड़ रही थीं।

उनका बड़ा लड़का वीरेंद्र सिंह अब हवा में नहीं पलँग पर पड़ा था मृत अवस्था में... उसके माथे पर उभरा वो स्वास्तिक का निशान अपने पीछे कई सवाल छोड़ रहा था और उसकी आँखे... दर्द से फैल कर बाहर को फट कर निकल आई थीं जो कि ऐसी लग रही थी जैसे वो ठाकुर वीर प्रताप को घूर रही हों।

लेकिन ठाकुर साब को वो आँखे वीरेन्द्र की ना लगकर शम्भाला की लग रही थीं... उन्हें ऐसे लग रहा था जैसे उनको शम्भाला घूर रही हो और यही महसूस कर के उन्होंने डर कर दूसरी ओर मुँह फेर लिया।

उस कमरे में मौजूद हर शख्स ठाकुर साब से शम्भाला के बारे में जानना चाहता था लेकिन ठाकुर साब की हालत और सामने वीरेंद्र की लाश पड़ी होने के कारण किसी की हिम्मत नहीं हुई कुछ पूँछने की।

कहते हैं बातों के, शब्दों के, अफवाहों के पैर नहीं होते वो हवा में घुल मिल कर बड़ी दूर तक पहुंच जाते हैं, इसी तरह ठाकुर वीर प्रताप की हवेली में हुआ वो दर्दनाक हादसा दूर दूर तक आसपास के गाँवों में फैल चुका था और साथ ही वो रहस्यमय शब्द 'शम्भाला '।

हर कोई उस भयानक हादसे के बारे में चर्चा कर रहा था और साथ ही उस शब्द के बारे में। गांवों के युवा तो उस शब्द से अनभिज्ञ थे परंतु जिस भी बुजुर्ग ने वो शब्द सुना उसने बाकियों को उस शब्द को ज़बान पर लेने से भी मना कर दिया.. ये कहकर की शापित शब्द मुँह से बोलना अपशकुन होता है और साथ ही ये भी बोल रहे थे कि अब भूलकर भी उस हवेली की ओर मत जाना... क्योंकि अब वो शापित हो चुकी है।

वीरेंद्र सिंह की अन्तिमक्रिया आदि करके ठाकुर साब का परिवार... उनकी पत्नी शांति देवी, वीरेंद्र सिंह की विधवा नैना, उनका मझला बेटा देवेंद्र और उसकी नई नवेली पत्नी दिव्या, उनका छोटा बेटा तेज़ प्रताप.. जो कि अभी मात्र 16 साल का ही था.. सभी लोग ठाकुर साब के कक्ष में प्रश्नवाचक मुद्रा में खड़े थे। उन सभी के चेहरों से लग रहा था कि वे ठाकुर साब से वीरेंद्र की इतनी भयानक मौत का कारण और शम्भाला के विषय में जानना चाहते थे लेकिन ठाकुर साब के पास उनके प्रश्नों का उत्तर होते हुए भी नही था इसीलिए उन्होंने उन्हें टालने के उद्देश्य से बोला "जितना आप लोग जानते हैं उतना ही हम भी जानते हैं और इसीलिए हमने अपने कुलगुरु को यहाँ बुलाया है... वे सिद्ध तांत्रिक हैं, वे निश्चित रूप से हमें इस समस्या से उबार लेंगे, इसलिए अभी आप सब लोग जाकर सो जाएं... रात भी काफी हो चुकी है। "

ठाकुर साब की बात किसी के गले नहीं उतरी... यहाँ तक की उनकी धर्मपत्नी के भी नहीं.. लेकिन उनके सामने किसी की मुँह खोलने की हिम्मत भी नहीं थी इसलिए सभी चुपचाप अपने अपने कमरों में चले गए सिवाय दो लोगों के... एक उनकी पत्नी और दूसरा शेर सिंह, ठाकुर साब ने शेर सिंह को वहां उनकी ओर चिंतित अवस्था में खड़ा देखकर उसे अपनी आंखों से वहां से जाने का संकेत किया.. जिसका अर्थ था कि अभी हमें कोई खतरा नहीं है। शेर सिंह ना चाहते हुए भी वहां से बाहर आ गया लेकिन अपने कमरे में ना जाकर वहीं ठाकुर साब के कक्ष के बाहर रुक गया उनकी सुरक्षा के लिए... क्योंकि और कोई जानता था या नहीं लेकिन वो अच्छी तरह से जानता था कि शम्भाला किस खतरे का नाम था।

देवेंद्र की आँख अजीब सी दुर्गंध के कारण खुली थी, उसने आँख खोलकर देखा तो उसे वहाँ चारों ओर सिर्फ धुँआ धुँआ सा ही नज़र आया और साथ ही किसी औरत की आवाज़, वो बेहद बुरी दुर्गंध उसी धुँए से आ रही थी जो उसके आसपास फैला हुआ था। उसकी समझ में नहीं आया कि उसके कमरे में ये धुँआ कहाँ से आ गया और ये किस औरत की आवाज़ है क्योंकि वो आवाज़ उसकी पत्नी की ना होकर किसी अनजान की थी। उसने लेटे लेटे ही अपने आसपास हाँथ फिराया तो वहाँ उसकी पत्नी नहीं थी.. वो घबराकर उठ गया और उसे तब पता चला कि वो अपने पलँग पर ना होकर एक पत्थर की शिला पर लेटा हुआ था। अब तक उसकी आंखें इतनी अभ्यस्त हो चुकी थीं कि वो उस धुँए के बावजूद उस जगह को देख सके, उसने अपने चारों ओर निगाह दौड़ाई तो उसने खुद को एक पत्थरीली गुफा में पाया। उसने देखा कि उसके सामने एक औरत बैठी थी जिसकी पीठ उसकी तरफ थी... उस औरत के ठीक सामने बड़ी सी माँ काली की मूर्ति स्थापित थी और उस मूर्ति और औरत के बीच एक बड़ा सा हवन कुंड था जिसके पास एक गंडासा रखा हुआ था, वो औरत ज़मीन पर बैठ कर अपने सामने जलते हवन कुंड में तेज आवाज़ से मन्त्रों का उच्चारण करते हुए समिधा डाल रही थी। उसे सुनाई दे रही वे आवाज़ें उसी औरत की थीं जो उस गुफ़ा में गूँजने के कारण बड़ी ही भयानक लग रही थीं। देवेंद्र अभी इसी असमंजस में था कि वो अपने कमरे से इस गुफ़ा में कैसे पहुंचा की तभी उसे उस औरत की आवाज़ सुनाई दी जो कि उसी को संबोधित कर के कह रही थी "तो उठ गया तू देवेंद्र... आश्चर्य हो रहा है अपने आप को इस अनजानी जगह पर देख कर, चल इधर आ मेरे पास.. मैं देती हूँ तेरे हर उस प्रश्न का उत्तर जो तेरे मन में चल रहे हैं "

ये उस आवाज़ की ताकत थी या देवेंद्र की जिज्ञासा जो खुद उसे देखना चाहता था.. इसलिए उसके पैर खुदबखुद उसकी ओर बढ़ चले थे।

देवेंद्र की तरफ उसकी पीठ थी और पीछे से सिर्फ इतना ही दिखाई दे रहा था कि वो एक सफ़ेद साड़ी पहने थी जिसके बाल झक्क सफेद थे, उसके पीछे से चलता हुआ देवेंद्र जैसे ही उसके सामने पहुंचा उसके मुँह से बड़ी ही भयानक चीख निकल गई.... उसे ऐसा लगा जैसे उसके सामने साक्षात मौत की देवी बैठी हो।

शरीर से गल गल कर टपकता मांस.. हाँथों के बड़े बड़े नाखून और उनमें जम कर सूख चुका खून... चेहरे पर इकलोती एक लाल आंख... जिससे वो उसे घूर रही थी और दूसरी

आंख की जगह खाली गड्ढा.. नाक की जगह सिर्फ छेद... दांत जो थोड़े बहुत बचे हुए होंठों से ढके थे और सबसे विशेष बात... माथे पर स्वास्तिक का निशान जिसमें से थोड़ा थोड़ा खून अब भी रिस कर उसकी आंख के खाली गड्ढे में जा रहा था।

उस भयानक रूप को देख कर देवेंद्र के मुंह से चीख भी नहीं निकल पाई, बस थर थर कांपती टांगों से खड़ा उसे देखता रह गया।

बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से अटक अटक के एक शब्द निकल पाया "स स स शम्भाला ?? "

उसके मुंह से शम्भाला सुनकर वो बड़ी ही खौफनाक तरीके से हंसी और हँसते हुए बोली "अरे वाह... तू तो बड़ा समझदार है.. स्वास्तिक के निशान से ही तूने मेरे नाम का अनुमान लगा लिया, समझदार होगा भी क्यों नहीं... आखिर संपोला तो तू उसी सांप का है ना.. लेकिन अब तुझे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि तेरी मुक्ति का समय आ गया है... तेरे पिता को बड़ा शौक था बलि देने का... तो देख आज मैं कैसे तेरे पिता को तेरी बलि चढ़ा कर दिखाती हूँ " और इतना बोलकर उसने पास रखे गंडासे को उठा लिया।

उसके हाँथ में गंडासा देखकर देवेंद्र के मुंह से ऐसी घुटी घुटी सी चीख निकल गई जैसे किसी बलि वाले बकरे के मुंह से....

देवेंद्र के मुंह से घुटी घुटी सी चीख सुनकर उसकी पत्नी गहरी नींद से हड़बड़ा कर उठ बैठी, उसने लालटेन के मद्धिम प्रकाश में देखा कि देवेंद्र आँखें बंद कर के पलँग पर बैठा किसी से हाँथ जोड़कर अपने प्राणों की भीख मांग रहा है.. उसका चेहरा डर के कारण बुरी तरह पीला पड़ चुका था,

"लेकिन उनके उस कमरे में हम दोनों के अलावा और दूसरा कोई है भी तो नहीं फिर वो किससे बातें कर रहे हैं "...दिव्या ने अपने मन में सोचा। उसे लगा कि वो शायद नींद में कोई

भयानक सपना देख रहा है इसीलिए उसने उसे नींद से जगाने के लिए पकड़कर ज़ोर से झिंझोड़ दिया.. लेकिन उस पर इसका कोई असर नहीं पड़ा वो अब भी वैसे ही अपने हाँथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा था। दिव्या के उसे उठाने के सारे प्रयास असफल हो गए लेकिन वो नींद से नहीं उठा। अभी दिव्या सोच ही रही थी कि अब मैं क्या करूँ की तभी उसने देखा कि देवेंद्र अपने आप एक ओर घिसटने लगा और घिसटते हुए पलँग से गिर कर कमरे के एक कोने तक पहुंच गया और फिर दिव्या ने देखा कि उस के माथे पर अपने आप सिंदूर लगना शुरू हो गया.... उसको वहां से अपने आप घिसटता और माथे पर सिंदूर लगता देख उसके मुंह से एक घबराहट भरी चीख निकल गई और वो बुरी तरह काँपती घबराती चिल्लाती हुई परिवार के लोगों को मदद के लिए बुलाने उस कमरे से बाहर की ओर भागती चली गई।

देवेंद्र उसके सामने गिड़गिड़ा कर अपनी जान की भीख मांग रहा था लेकिन उस पर उसकी गिड़गिड़ाहट का कोई असर नहीं पड़ा वो तो बस हाँथ में गंडासा पकड़ कर ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगा रही थी। और फिर अचानक उसके अधजले चेहरे से हँसी गायब हो गई और उसकी जगह क्रूरता और पाशविकता ने ले ली, उसने बड़ी बेदर्दी से देवेंद्र को सर के बालों से पकड़ कर खींचते हुए माँ काली की मूर्ति के सामने ला कर पटक दिया और फिर पास में रखी सिंदूर की थाली से सिंदूर उठा कर उसके माथे से पोत दिया और उसके बाद उसके सामने खड़ी हो कर वीभस्त तरीके से उछल उछल कर बलि मन्त्र पढ़ने लगी। उसके उछलने के कारण उसकी वो इकलौती आँख भी बाहर निकल कर इधर उधर उछल रही थी। इधर उसने मन्त्र पढ़ने शुरू किये और उधर हवन कुंड की अग्नि और तेज़ी से भड़क उठी जैसे वो भी देवेंद्र को भष्म कर देना चाहती हो। पता नहीं ये उसके मन्त्रों के जाप का असर था या फिर डर का प्रभाव... देवेंद्र बिल्कुल शान्त हो कर एक मूर्ति की तरह बैठ गया था। शम्भाला के मन्त्र जैसे जैसे पूरे होते जा रहे थे वैसे वैसे देवेंद्र के माथे पर सिंदूर के बीच से खाल को चीरते हुए स्वास्तिक का निशान अपने आप उभर रहा था और फिर कुछ देर में ही वो स्वास्तिक का निशान पूरी तरह से सिंदूर में अलग ही नज़र आने लगा। उधर वो स्वास्तिक का निशान देवेंद्र के माथे पर पूरी तरह उभरा और इधर शम्भाला के मन्त्र पूरे हो गए। मन्त्र पूरे होते ही शम्भाला ने उछलना बन्द कर के देवेंद्र के माथे की ओर देखा और वहाँ स्वास्तिक का निशान देखते ही उसने माँ काली का नाम लेते हुए गँड़ासे का एक जोरदार प्रहार उसकी गर्दन पर किया.... उस मारक प्रहार से एक झटके में ही देवेंद्र की गर्दन धड़ से अलग हो कर दूर छिटक कर जा गिरी और उसका धड़ उस हवन कुंड के पास बुरी तरह तड़पने लगा।

दिव्या के साथ जब ठाकुर साब और बाकी परिवार सदस्य आये तो देवेंद्र कमरे के कोने में पत्थर की मूर्ति बना हुआ एकदम शान्त बैठा हुआ था और तभी उसके माथे पर लगे सिंदूर के बीच से माथे की खाल अपने आप खुरचनी शुरू हो गई और कुछ ही क्षण में उस जगह पर स्वास्तिक का निशान उभर आया और उस स्वास्तिक के निशान मे से खून रिस रिस कर बाहर आने लगा। बड़ा ही भयानक दृश्य था वो, दिव्या उस दृश्य को देखकर एक जोरदार चीख के साथ वहीं बेहोश हो गई। देवेंद्र की माँ शांति देवी से अपने कलेजे के टुकड़े का ऐसा हाल देखा ना गया... वे उसका नाम लेकर उसे बचाने के लिए चिल्लाती हुई उसकी ओर दौड़ीं, अभी वे उसके करीब पहुँची ही थीं कि तभी देवेंद्र का सिर अपने आप कट कर उछलता हुआ ठीक ठाकुर साब के पैरों के पास आ कर गिर पड़ा और बाकी बचा धड़ उनके हाँथों में गिर कर बुरी तरह तड़पने लगा। शांति देवी अपने हाथों में अपने बेटे की सिर कटी तड़पती लाश देखकर गश खाकर ज़मीन पर गिर पड़ीं। ठाकुर साब अपनी पत्नी को ज़मीन पर गिरता देख जैसे ही उन्हें संभालने के लिए आगे बढ़े वैसे ही उनकी निगाह देवेंद्र के कटे हुए सिर पर पड़ी... देवेंद्र का सिर जिसकी कटते समय आँखें बंद थी... एकदम अचानक से उसकी आँखें खुल गई और उन खुली आँखों से ठाकुर को देखते हुए वो कटा सिर ज़ोर ज़ोर से हंसने लगा... लेकिन वो हंसी की आवाज़ किसी पुरुष की ना होकर एक औरत की थी, बड़ा ही डरावना दृश्य था वो... एक कटा हुआ सिर ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगा रहा था। उस खून जमा देने वाले दृश्य को देखकर उस कमरे में मौजूद हर शख्स के शरीर से ठंडे पसीने छूटने लगे।

अचानक देवेंद्र के कटे सिर से वो भयानक हंसी रुक गई और फिर उसके मुंह से औरत की आवाज़ सुनाई दी "ठाकुर... तुझे बड़ा शौक था ना बलि देने का, ले मैंने उपहार स्वरूप तेरे बेटे की बलि चढ़ा दी है तेरे लिए, अब एक एक करके तुझे तेरे पूरे परिवार का इसी तरह उपहार दूंगी और फिर सबसे आख़िर में तेरा शिकार करूंगी.. तब तक तू इन उपहारों से काम चला "और इतना बोलने के बाद देवेंद्र का कटा सिर एकदम शान्त हो गया।

ठाकुर साब का इकलौता बचा उनका छोटा बेटा वो दृश्य और वो सब सुनकर डर के मारे थर थर कांप रहा था, उसकी दशा देखकर ठाकुर साब ने दौड़कर उसे अपने सीने से लगा लिया और उससे बोले "तू घबरा मत बेटा.. मेरे रहते तुझे कुछ नहीं होगा बस तू जब तक कुलगुरु नहीं आ जाते तब तक तुझे सोना नहीं है जागते रहना है.. उनके आते ही सब ठीक हो जाएगा " ये सब बोलते समय उनकी आँखें शेर सिंह की आँखों से मिलीं और उन आंखों

की भाषा को शेर सिंह ने बखूबी पढ़ लिया था। ठाकुर की आँखें शेर सिंह से कह रही थीं "उस चंडालनी का अगला शिकार तू है शेर सिंह.... किसी तरह से हम सबको कुलगुरू के आने तक खुद को बचा कर रखना है, वे आते ही इसे ऐसी जगह पहुँचा देंगे जहाँ से ये फिर कभी लौट कर वापस नहीं आ पाएगी... बस किसी तरह आज की रात काटनी है हमें "

उन आँखों की भाषा समझते ही शेर सिंह जैसे हैवान के चेहरे पर भी हवाईयां उड़ने लगीं.. आखिर मौत का डर अच्छे अच्छे हैवानों को भी हिला कर रख देता है।

रात का तीसरा पहर बीत चुका था, ठाकुर वीर प्रताप और शेर सिंह की आंखों में नींद की जगह डर ने डेरा जमा लिया था, देवेंद्र का क्षत विक्षत शरीर अब भी उसके कमरे में पड़ा था बस फर्क इतना था कि उसका कटा सिर उसके धड़ से जोड़ दिया गया था, परिवार की औरतें अब भी होश में नहीं आईं थीं और ठाकुर साब ने उन्हें होश में लाने का प्रयास भी नहीं किया था।

भोर होने में कुछ ही समय रह गया था इसलिए ठाकुर साब शेर सिंह के साथ हवेली की छत पर आ गए और वहां से टहल टहल कर बैचेनी से बार बार उस दिशा में देखने लगे जिधर से कुलगुरु आने वाले थे,

कुछ देर बाद उधर पूरब में सूर्य की लालिमा ने आकाश के अंधेरे को चीरना शुरू किया और इधर ठाकुर साब को दूर से ही कुलगुरु की पालकी आती नज़र आ गई... वे अपने कुछ शिष्यों के साथ हवेली की ओर ही आ रहे थे। कुलगुरु को आता देख ठाकुर साब की आँखों में मौत के डर की जगह जीवन की उम्मीद ने ले ली। ठाकुर साब कुलगुरु को देख खुशी से चिल्लाते हुए हवेली के मुख्य द्वार की ओर दौड़ पड़े... और उनके पीछे पीछे शैतान सिंह।

कुलगुरु... देखने में एक अस्सी नब्बे साल के बुजुर्ग.. सिर के और दाढ़ी के बाल बिल्कुल चांदी की तरह सफेद... आँखों का तेज़ उनकी सिद्धता की पैरवी कर रहा था और शरीर गठा हुआ.. कहीं से भी इतने बुजुर्गों वाला नहीं, कुल मिलाकर उनका व्यक्तित्व... उनका आभामंडल.. हर किसी को उनके आगे सिर झुकाने के लिए विवश कर दे और वे तो आखिर ठाकुर साब के कुलगुरु थे इसलिए उन्हें तो उनके आगे झुकना ही था और ठाकुर साब कुलगुरु के चरणों में साक्षात दण्डवत हो कर गिर पड़े... उनके साथ ही शेर सिंह भी,

कुलगुरु हवेली के उसी कमरे में खड़े थे जहाँ देवेंद्र का शव ज़मीन पर पड़ा हुआ था, परिवार की औरतें वहाँ से दूसरे कमरे में ले जाई जा चुकी थीं जो कि अब भी होश में नहीं आईं थीं और साथ में छोटे पुत्र को भी जो कि अब तक सदमे से उबर नहीं पाया था, ठाकुर साब ने कुलगुरु को अब तक हुए सारे घटनाक्रम से अवगत करवा दिया था सिर्फ शम्भाला के बारे में छोड़कर।

ठाकुर साब की बात से मामले की गंभीरता को समझते हुए कुलगुरु ने बिना देर किये उसी कमरे में शम्भाला को सबक सिखाने के लिए तांत्रिक अनुष्ठान शुरू कर दिया।

कमरे में ठाकुर साब और शेर सिंह के अलावा सिर्फ कुलगुरु ही थे बाकी लोग कमरे से बाहर निकाल दिए गए थे। कमरे के बीचों बीच हवन कुंड की अग्नि में कुलगुरु आंख बंद कर मन्त्र पढ़ते हुए आहुति डाल रहे थे, आहुति डालते ही अग्नि भड़क उठती और उसमें से धुँआ उठ कर छत की ओर बढ़ जाता।

कुछ देर तक यही क्रिया चलती रही और फिर अचानक हवन कुंड से निकलते धुँए में से एक आकृति बननी शुरू हो गई जिसे कि ठाकुर साब और शेर सिंह देख पा रहे थे और जैसे ही उस आकृति ने आकार लिया... उसे पहचानते ही उनकी आँखों में फिर से मौत के डर ने जगह बना ली, वो आकृति शम्भाला की थी जो कि बड़ी होती जा रही थी और कुछ देर में ही उस धुँए की आकृति ने कुलगुरु को अपने अंदर पूरी तरह से ढंक लिया।

कुलगुरु को शम्भाला की धुँए की आकृति में ढंकता देख कर उन दोनों को लकवा मार गया.. वे वहीं पर जड़ हो गए, वे चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहे थे। जो वो देख रहे थे वो उनकी सोच से भी परे था।

कुलगुरु उस धुँए में पूरे ढंक चुके थे, इतने की उन दोनों को भी नज़र नहीं आ रहे थे, कुछ पल ऐसे ही बीते की तभी उन्हें उस धुँए से शम्भाला की गुर्राती हुई आवाज़ सुनाई दी... जैसे कि कोई जंगली जानवर किसी शिकार पर झपटा हो,

---

कुलगुरु ध्यानस्थ होकर मन्त्र पढ़ रहे थे और साथ ही बीच बीच में हवन कुंड में आहुति भी दे रहे थे। कुछ देर तक उनका मन्त्र और आहुतियों का सिलसिला ऐसे ही चलता रहा और

फिर कुछ देर बाद उन्हें ऐसा लगा जैसे उन्हें किसी ने पकड़ कर ज़ोर से झिंझोड़ दिया हो और साथ ही किसी की बड़ी ही डरावनी गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी। कुलगुरु ने चौंक कर अपनी आँखें खोल दीं। आँख खोलने के बाद वहां का दृश्य देख उनकी आँखें फैलती चली गईं, वे उस कमरे में ना होकर एक अनजान जगह पर मौजूद थे, वो एक गुफा थी जिसमें दुर्गंध युक्त धुँआ फैला हुआ था.... जैसे किसी जानवर की बलि दी गई हो और उसके मांस के जलने की दुर्गंध ही वहा चारों ओर फैली हुई थी, उन्होंने अपने चारों ओर नज़र घुमा कर देखा तो उन्हें अपने सामने एक हवन कुंड जलता हुआ नजर आया और उसके ठीक सामने माँ काली की बड़ी सी मूर्ति, अभी वे उस जगह को देख कर समझने का प्रयास कर ही रहे थे कि तभी उन्हें फिर से अपने पीछे से गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी... उन्होंने अपने पीछे पलटकर देखा तो वहाँ खड़ी उस बला का भयानक रूप देखकर उनकी आँखे आश्चर्य और भय मिश्रित होकर फैलती चली गईं। ठाकुर वीर प्रताप ने सब जानकारी दी थी उन्हें लेकिन उस बला के बारे में कुछ नहीं बताया था इसीलिए वो उसे और वो भी एक अनजान और डरावनी जगह पर खुद को पा कर चौंक गए थे लेकिन वो ज्यादा देर तक ऐसी स्थिति में नहीं रहे.... कुछ पल में ही उन्होंने अपने आप को संभाल लिया... संभलते भी कैसे नहीं आख़िर वो एक सिद्ध तांत्रिक जो थे।

"तुझे बुलाया है उस ठाकुर ने मुझसे बचाने के लिए... तू रोकेगा मुझे मेरा बदला लेने से... अब उस ठाकुर से पहले मैं तुझे नर्क का रास्ता दिखाऊंगी "उस वीभस्त चेहरे की स्वामिनी शम्भाला ने गुर्राते हुए कुलगुरु से बोला और हाँथ में पकड़े गँड़ासे को लेकर उनके ऊपर झपट पड़ी,

उसे अपनी ओर झपटता देख कर भी कुलगुरु एक दम शान्त बने रहे जैसे उन्हें अपनी मृत्यु का कोई भय ही ना हो.. बस उसे देख कर मुस्कुराते हुए वे कोई मन्त्र बड़बड़ाने लगे। और फिर जैसे ही वो उनके पास आई उन्होंने अपने दाढ़ी से एक बाल खींचकर उसको उस चुड़ैल पर उछाल दिया। आश्चर्यजनक रूप से उस बाल के शम्भाला के शरीर से छूते ही वो जहाँ थी उसी जगह पर जड़ हो गई... ऐसी जैसे कोई पत्थर की मूर्ति, उसने काफी प्रयास किये अपनी जगह से हिलने के लेकिन वो अपनी जगह से टस से मस भी नहीं हो पाई।

"तूने जितना हिंसा का नंगा नाच करना था तू कर चुकी.. मैं अब तुझे भस्म करके तेरे इन वीभस्त कृत्यों को यहीं रोक दूंगा... काश मैं और पहले आ जाता तो वो बेचारे निर्दोष तेरे

हाँथों ना मरते... चल अब तू भस्म होने के लिए तैयार हो जा।"और इतना बोलकर कुलगुरु ने अपने कमंडल में से जल निकाल कर अपनी हथेली पर उड़ेल लिया और आँख बंद कर के कोई मन्त्र पढ़ने लगे।

"न..न.. नही आप ऐसा नहीं कर सकते, मैं अपराधी नहीं हूँ... बल्कि मैं तो ख़ुद सताई हुई हूँ... उस ठाकुर की, वो मेरा अपराधी है, जब तक मैं उससे बदला नहीं ले लेती तब तक मैं यूं ही भटकती रहूंगी, मैं ब्राह्मणी थी इसलिए अगर कुलगुरु आपने मुझे भस्म कर दिया तो मैं ब्रह्मराक्षसी बन जाऊंगी... तब मैं अपने वश में नहीं रहूंगी और फिर मेरे हाँथों निर्दोष भी मारे जायेंगे, कुलगुरु मुझे ठाकुर ने बड़ी ही दर्दनाक मौत दी थी और जब तक मैं उसे मार नहीं देती मेरी मुक्ति असंभव है। मेरी आपसे विनती है कि मेरे और ठाकुर के बीच में मत आइये "शम्भाला कुलगुरु के सामने रो रही थी गिड़गिड़ा रही थी... अपने बदले की आग को शान्त करने के लिए विनती कर रही थी,

"तू झूठ बोल रही है.... ठाकुर ने आज तक कोई पाप नहीं किया है, वो तो सबकी भलाई करता आया है, उस जैसे सज्जन पुरुष पर तू झूठा आरोप लगा रही है... मैं तुझे किसी की हत्या करने के लिए नहीं छोड़ सकता "कुलगुरु की आँखों से क्रोध की ज्वाला फूट रही थी।

"मैं सच बोल रही हूं... एक ब्राह्मणी मरने के बाद झूठ नहीं बोल सकती, मैं माँ काली की कसम खा कर कहती हूँ जिनकी मैं सारे जीवन आराधना करती रही... ठाकुर और उसके नौकर ने मेरे साथ वो पाप किया है जिसे जानकर आप भी मेरी सहायता करने के लिए तैयार हो जाएंगे "शम्भाला कि गिड़गिड़ाहट अच्छे अच्छे पत्थर दिल को पिघला देती.... तो कुलगुरु तो फिर भी एक सात्विक इंसान थे।

"मैं तेरी बात पर तभी विश्वास करूँगा जब तू मुझे अपनी बात सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण देगी "

"कुलगुरु.. इसके लिए आपको मुझे बन्धनमुक्त करना होगा, मैं आपको अपनी सिद्धियों से वर्तमान में से उस समय में ले जाऊंगी जहां आप अपनी आँखों से सब कुछ अपने सामने घटित होता हुआ देख सकेंगे... सब कुछ देख कर तब आप स्वयं तय कर लीजिएगा की मैं

सही कर रही हूँ या नहीं, और उसके बाद अगर आप को लगता है कि मैं गलत हूँ तो आप जो सज़ा देंगे मैं उसे प्रसन्नता से स्वीकार कर लूंगी "

"ठीक है.. हम तुझे बन्धनमुक्त करते हैं, लेकिन याद रहे कि तू हमारे साथ कोई चालाकी करने का प्रयास मत करना वरना तेरा अंत बहुत बुरा होगा "और फिर इतना बोल कर कुलगुरु ने अपने कमंडल से जल अपनी हथेली पर लेकर कोई मन्त्र पढा और उसे शम्भाला के ऊपर छिड़क दिया।

अभिमंत्रित जल के शम्भाला के ऊपर गिरते ही वो बन्धनमुक्त हो गई, बन्धमुक्त होते ही उसने कुलगुरु को हाँथ जोड़कर प्रणाम किया और फिर अपनी आँखें बंद कर के ज़ोर ज़ोर से कुछ मन्त्रों का जाप करने लगी।

जैसे जैसे उसके मन्त्र की गिनती बढ़ रही थी वैसे वैसे उस गुफ़ा का नक्शा बदलने लगा। वहां की हर चीज़ बड़ी तेजी से बदल रही थी और फिर कुछ देर बाद.....

शम्भाला के मन्त्र पूरे हो चुके थे और साथ ही उस जगह का नक्शा भी पूरी तरह बदल चुका था। अब वहाँ पर वातावरण में दुर्गंध की जगह सुगन्ध ने ले ली थी। वो माँ काली की विशालकाय मूर्ति अब भी वैसे ही अपनी जगह विराजमान थी बस फर्क इतना था कि उसके ठीक सामने स्थित हवनकुंड में जलती अग्नि में किसी जानवर के अवशेष ना हो कर शुद्ध और सुगंधित हवन सामग्री की समिधा डाली जा रही थी और डालने वाली थी एक तीस बत्तीस साल की औरत.. दूध सी उजली... देखने में जैसे कोई अप्सरा.. सफेद सात्विक कपड़ों में लिपटी.. जिसने अपने माथे पर रोली से स्वास्तिक के निशान का टीका लगाया हुआ था.... वो और कोई नहीं.. वो शम्भाला ही थी.. मरने से पहले वाली शम्भाला।

उसके ठीक सामने आसन पर ठाकुर वीर प्रताप और शेर सिंह हाँथ जोड़े बैठे थे। देखने में दोनों ही जवान नज़र आ रहे थे.. यही कोई चौबीस पच्चीस साल के आसपास के। वे दोनों अपने सामने आँख बंद कर के हवनकुंड में मन्त्रों के साथ समिधा डालती शम्भाला को एकटक देखे जा रहे थे, शायद उसकी पूजा के समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

कुछ देर बाद पूजा समाप्त कर के शम्भाला ने अपनी आँखें खोल दी, सामने ठाकुर को बैठा देख उसने कहा "तुम आ गए ठाकुर... मैं तुम्हारा ही कार्य कर रही थी, इस पूजा के सम्पूर्ण होते ही तुम धन वैभव यश आदि से परिपूर्ण हो जाओगे, बस आज रात को मैं पूजा को सम्पूर्ण करके अपनी तंत्र शक्ति से तुम्हें जो चाहिए वो तुम्हें दिलवा दूंगी... बस पूजा की समाप्ति पर मुझे बलि के लिए ग्यारह जानवरों की आवश्यकता होगी, क्या तुम बलि के लिए वो जानवर साथ लाये हो ?? "

शम्भाला की बात सुनकर चौंकते हुए ठाकुर साब बोले "लेकिन शम्भाला... आपने तो मुझसे कहा था कि बलि छोटी कुंवारी कन्याओं की देनी है इसीलिए मैं आपको बताने आया था कि आज मैं कन्याओं का प्रबंध नहीं कर पाया इसलिए ये पूजा दो दिन बाद तक के लिए स्थगित कर दी जाये।"

"ठाकुर.. मैंने तुम्हें साथ ही ये भी तो कहा था कि मैं किसी इंसान की बलि नहीं देती, ये जरूरी नहीं की तुम इस राज्य के राजा बनो.. तुम अपनी इस एक रियासत में ही धन धान्य से परिपूर्ण और अधिक शक्तिशाली हो कर प्रसन्नतापूर्वक राज कर सकते हो "शम्भाला ने ठाकुर को समझाने का प्रयास किया।

"लेकिन शम्भाला... हमारी बरसों की महत्वाकांक्षा का क्या होगा, हम बचपन से यही सपना देखते आ रहे हैं कि हम बढ़ते बढ़ते एक दिन लोगों पर राज करेंगे और आप कह रही हैं कि हम अपने सपने को छिन्न भिन्न कर दें... नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता, हम अपनी महत्वाकांक्षा को अवश्य पूरा करेंगे और उसे पूरा करने में आपको हमारी सहायता करनी ही होगी... "ठाकुर वीर प्रताप के चेहरे पर क्रोध की लकीरें उभर आई जो कि स्पष्ट नज़र आ रही थीं जिन्हें शम्भाला ने देख लिया था।

"ठाकुर वीर प्रताप... मैं तुम्हारे क्रोध से या तुम्हारी महत्वाकांक्षा के कारण अपने नियम नहीं तोड़ने वाली, यदि तुम्हें मेरा सुझाव पसन्द आ रहा हो तो यहां रुको और शेष अनुष्ठान पूरा करवाओ... अन्यथा तुम यहाँ से जा सकते हो "शम्भाला ने लाल लाल आँखों से घूरते हुए लगभग गुर्राते हुए ठाकुर से कहा।

शम्भाला को किसी भी तरह मानता ना देख ठाकुर साब ने लाचारगी से शेर सिंह की ओर देखा, अपनी ओर उन्हें ऐसे देखता देख शेर सिंह उनका मतलब समझ गया और फिर उसने अपनी आँखों के इशारे से उनसे कुछ कहा जिसका अर्थ ठाकुर साब के तुरंत समझ में आ गया और इसी कारण उन्होंने फिर से आँखों के इशारों से उससे आश्वस्त होना चाहा.. शेर सिंह ने उन्हें इशारे में ही समझा दिया कि वे पूरी तरह आश्वस्त रहें उनका कार्य अवश्य हो कर रहेगा।

और फिर ठाकुर साब जैसे ही आश्वस्त हुए उन्होंने शम्भाला से कहा "ठीक है शम्भाला.. हम आपकी बात अच्छी तरह समझ गए, आप आगे के अनुष्ठान की प्रक्रिया प्रारंभ कीजिये हम तब तक शेर सिंह को भेज कर बलि के लिए जानवरों का प्रबंध करवाते हैं। " और फिर उन्होंने मुड़कर शेर सिंह की ओर देखा, शेर सिंह तुरंत वहाँ से उठ खड़ा हुआ और फिर ठाकुर की ओर सिर झुका कर उस गुफा से बाहर निकल गया।

कुलगुरु के सामने वो सारा घटनाक्रम एक चलचित्र की तरह चल रहा था, वे वहाँ घट रही सारी घटनाओं को और उन लोगों के बीच हो रहे वार्तालाप को स्पष्ट सुन और देख पा रहे थे इसीलिए उन्होंने ये भी देख लिया कि शेर सिंह उस गुफ़ा से बाहर ना निकल कर वहीं एक आड़ ले कर छिप गया था जिसका पता शम्भाला को नहीं लग पाया था।

और इधर शम्भाला ने... शेर सिंह से बेखबर अपने तांत्रिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए मन्त्रों और आहुतियों की प्रक्रिया पुनः प्रारंभ कर दी। हवनकुंड की अग्नि हर एक आहुति के साथ ज़ोर से भड़क उठती जैसे शम्भाला को सावधान कर रही हो... परन्तु शम्भाला आने वाली विपत्ति से बेखबर आँखें बंद कर पूरी तरह से उस तांत्रिक अनुष्ठान में डूबी हुई थी। जैसे जैसे शम्भाला के मन्त्रों की संख्या बढ़ रही थी वैसे वैसे ठाकुर की आँखों की चमक बढ़ रही थी।

रात का दूसरा पहर लग चुका था और शम्भाला के मन्त्र भी पूरे हो चुके थे, उसने आँख खोलकर ठाकुर की ओर देखा और बोली "ठाकुर.. बलि देने का मुहूर्त प्रारंभ हो चुका है और ये शुभ मुहूर्त अब से बस कुछ क्षणों तक ही रहेगा इसलिए मुझे बलि भी इसी मुहर्त में देनी होगी तभी हमें इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे... अगर माँ को बलि का भोग नहीं लग पाया तो माँ

काली रुष्ट हो जायेंगी, तुम्हारा सेवक अभी तक बलि के जानवर तक लेकर नहीं आ पाया है... "

"शम्भाला... आप चिन्ता ना करें वो बस आता ही होगा "ठाकुर वीर प्रताप ने हाँथ जोड़कर कनखियों से छिपे शेर सिंह को देखते हुए शम्भाला से कहा,

"ठीक है मैं बलि मन्त्र प्रारंभ कर रही हूँ... लेकिन ध्यान रहे इस मन्त्र के पूरा होते ही बलि देनी होगी अन्यथा परिणाम भयानक होंगे "और इतना बोल कर शम्भाला ने फिर से आँख बंद कर ध्यानस्थ हो कर बलि मन्त्र प्रारंभ कर दिया।

इधर शम्भाला ने बलि मन्त्र का जाप प्रारंभ किया और उधर ठाकुर का संकेत मिलते ही शेर सिंह अपने छिपे स्थान से बाहर आ कर शम्भाला के पास रखे गँड़ासे को चुपचाप उठा कर उसके ठीक पीछे खड़ा हो गया।

शम्भाला अपने सिर पर मंडराती मौत से अनजान.. ज़ोर ज़ोर से बलि मन्त्र का जाप कर रही थी।

और फिर जैसे ही शम्भाला ने वो बलि मन्त्र पूरा कर के आँखें खोली.... ठीक उसी समय शेर सिंह ने ठाकुर के संकेत पर वो गंडासा पूरी ताकत से शम्भाला की गर्दन पर दे मारा। गँड़ासे के एक ही मारक प्रहार से शम्भाला की गर्दन एक झटके से धड़ से अलग हो कर सामने जलते हवनकुंड में जा गिरी... और उसका बाकी का धड़ उसी आसन पर तड़पने लगा जिस पर वो बैठी थी, कुछ देर तक तड़पने के बाद उसका धड़ शान्त हो गया।

शम्भाला की बलि दे कर ठाकुर की आँखों में सुनहरे भविष्य की चमक स्पष्ट नज़र आ रही थी। उन्होंने खुशी के मारे शेर सिंह को गले से लगा लिया और उससे बोले "शेर सिंह अब हमें जग जीतने से कोई नहीं रोक सकता, सारी दुनिया अब हमारे कदमों के नीचे होगी और तुम्हें शेर सिंह मैं सोने से लाद दूंगा "

अभी ठाकुर और शेर सिंह भावनाओं में बहकर खुशी से नाच ही रहे थे कि तभी हवनकुंड में गिरा शम्भाला का कटा सिर अपने आप उस कुंड की अग्नि से बाहर निकल कर कुछ ऊंचाई पर हवा में स्थिर हो गया, वो कटा सिर अग्नि के कुंड में गिरने के कारण बुरी तरह जल चुका था... आधे चेहरे की खाल गल चुकी थी... एक आँख पूरी तरह आग से भस्म हो चुकी थी... नाक के नाम पर बस दो छेद नज़र आ रहे थे.. लेकिन उसके माथे पर स्वास्तिक का तिलक अब भी था बस फर्क इतना था कि वो तिलक रोली का ना होकर खून का था, कुल मिलाकर देखने में बेहद वीभस्त और डरावना।

दोनों को खुशी से नाचता देख शम्भाला का कटा सिर बड़ी ही भयानक गुर्राहट के साथ चिल्लाया "ठाकुर... तूने मेरे साथ इतना बड़ा विश्वासघात किया!! एक ब्राह्मणी के साथ..!!! तू क्या समझता है कि मेरी बलि दे कर तू अपनी महत्वाकांक्षा को सफल कर पायेगा ! नहीं तू कभी भी वो सब नहीं पा सकेगा जिसके लिए तूने इतना बड़ा पाप किया है, तू ये नहीं जानता कि ये अनुष्ठान अधूरा रह गया है.... तूने माँ की भोग की थाली में ही विघ्न डाल दिया, माँ तो तुझे सज़ा देंगी ही लेकिन अब तू मेरे क्रोध से भी बच नहीं पायेगा, मैं अब और भी ज़्यादा शक्तिशाली हो कर वापस आऊंगी और तब मैं तुझे और तेरे पूरे वंश का समूल नाश कर दूंगी.... "इतना बोलकर शम्भाला का कटा सिर वापस उसी हवनकुंड में जा गिरा और उसके गिरते ही उस कुंड में एक धमाका हुआ और फिर उसके साथ ही वो गुफा और वहाँ की प्रत्येक वस्तु भी जगह जगह से टूट टूट कर नष्ट होने लगीं।

इधर ठाकुर और शेर सिंह का विजय उल्लास शम्भाला के कटे सिर की मौत की धमकी से रुक गया। उनकी आँखों में कुछ क्षण पहले वाली प्रसन्नता की चमक की जगह मौत के अंधियारे ने ले ली। अभी वे अपने सिर पर हुए वज्रपात से उबरने का प्रयास कर ही रहे थे कि तभी वो गुफा नष्ट होना शुरू हो गई... नष्ट होती गुफा को देख कर वे दोनों सदमें से बाहर आये और अपनी जान बचाने के लिए सिर पर पैर रख कर तेज़ी से गुफा से बाहर निकलने के लिए बाहर की ओर भागे।

वो सारा लोमहर्षक दृश्य देख कर कुलगुरु की आँखें क्रोध से उबलने लगीं, उन्हें ठाकुर और शेर सिंह की वहाँ उपस्थिति मात्र से घिन का आभास होने लगा। उन्हें कई क्षण लग गए अपने आप को सम्भालने में और फिर जब कुछ क्षण पश्चात वे खुद को संभाल पाए तो वे

शम्भाला से बोले "सच में शम्भाला तुम सही कह रही थीं... तुम्हारे साथ सच में बड़ा ही अन्याय हुआ है, ये दोनों तुम्हारे अपराधी हैं और इन्हें इनके अपराध की सज़ा जरूर मिलनी चाहिए.... मैं तुम्हारे साथ हूँ, लेकिन तुमने भी बदले की आग में बहुत बड़ी गलती की है... तुमने ठाकुर के निर्दोष पुत्रों को मार दिया... जबकि वे बेचारे तो अपने पिता के कुकृत्यों से एकदम अनभिज्ञ थे, अब मैं तुम्हारा साथ तभी दूंगा जब तुम मुझसे वादा करो कि ठाकुर के जीवित पुत्र को तुम नहीं मारोगी "

"मैं वादा करती हूँ कुलगुरु... मैं ठाकुर के पुत्र को कुछ नहीं कहूंगी और ठाकुर और इस शेर सिंह से बदला लेने के बाद मैं यहां फिर कभी वापस नहीं आऊंगी "शम्भाला ने कुलगुरु के सामने अपना सिर झुका कर उन्हें आश्वासन दिया और फिर उसके बाद.... शम्भाला भूखी शेरनी की तरह शेर सिंह की ओर झपट पड़ी...

ठाकुर और शेर सिंह आँखों में ख़ौफ़ भरकर उस पिशाचिनी शम्भाला की धुएँ की आकृति में पूरी तरह डूब चुके कुलगुरु की ओर इस आशा से देख रहे थे कि शायद कोई चमत्कार हो और उनकी मौत... शम्भाला का अंत कुलगुरु के हाँथों हो जाये, लेकिन उस धुएँ के अंदर से आती अज़ीब सी अस्पष्ट आवाज़ें उन्हें अपनी सोच पर आशंकित कर रही थीं। वे दोनों अभी इस ऊहापोह वाली स्थिति से उबर भी नहीं पाए थे कि तभी कुलगुरु को घेरे हुए शम्भाला की धुएँ की आकृति ने उनके ऊपर से हटना शुरू कर दिया और कुछ ही देर में वो धुआँ कुलगुरु के ऊपर से हट चुका था। ठाकुर वीर प्रताप की सहमी आँखें कुलगुरु की आँखों से टकराईं तो उन्हें वहां अपने लिये सिर्फ घृणा नज़र आई, अभी वे कुलगुरु में आये इस परिवर्तन के बारे में कुछ सोच या समझ पाते कि तभी शम्भाला की धुएँ की आकृति कहर बनकर शेर सिंह पर टूट पड़ी, ना शेर सिंह सम्भल पाया और ना ठाकुर की कुछ समझ में आ पाया... बस शेर सिंह की ह्रदयविदारक चीखें गूंजने लगीं उस बड़े से कमरे में।

ठाकुर वीर प्रताप का खून सूख गया उस दृश्य को देखकर, उन्हें पता था कि अब वे भी नहीं बचेंगे और यही सोचकर उनके मुँह से बड़ी ही मार्मिक पुकार निकल पड़ी "कुलगुरु ... कृपा करके शेर सिंह को बचा लीजिये, वो निर्दोष उस पिशाचिनी के हाँथों मारा जाएगा।"

"ठाकुर तू किसे निर्दोष बता रहा है जबकि तू खुद निर्दोष नहीं है, अब मैं सब कुछ जान गया हूँ कि तूने और तेरे इस वफादार ने कैसे एक निर्दोष ब्राह्मणी की धोखे से हत्या की थी "ये

सब बोलते समय कुलगुरु की आँखों में गुस्से की ज्वाला भड़क रही थी।

"कुलगुरु मैं सच बोल रहा हूँ, यदि आपको मुझ पर विश्वास ना हो तो मैं अपनी बेटी की कसम खा कर कहता हूँ कि मैं और मेरा ये वफ़ादार बिल्कुल निर्दोष हैं, आप खुद अपनी शक्ति का प्रयोग कर के सच्चाई का पता लगा लीजिये... परन्तु उससे पहले उस बेचारे निर्दोष को बचा लीजिये... नहीं तो वो उसे जीवित नहीं छोड़ेगी "ठाकुर अपनी और शेर सिंह की जान बचाने के लिए कुलगुरु के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ा रहा था।

कुलगुरु को ठाकुर की बात पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि उन्होंने उन दोनों की वहशियत अपनी आंखों से देखी थी लेकिन वे ये भी जानते थे कि ठाकुर अपनी बेटी की कसम झूठी नहीं खा सकता था जिसे वो खुद उनके संरक्षण में छोड़ कर गया था और साथ ही कहा था कि इसकी जान को खतरा है और ये आपके पास सुरक्षित रहेगी.. तब से वो उन्हीं के पास पल बढ़ पढ़ रही थी। ठाकुर की बेटी की कसम ने कुलगुरु को सोचने पर विवश कर दिया, उन्होंने ठाकुर को पकड़ कर ज़ोर से झिंझोड़ते हुए पूंछा "कहना क्या चाहते हो तुम ठाकुर... क्या जो कुछ हमने देखा वो सब मिथ्या था ?? "

"हाँ कुलगुरु... आपने वही देखा होगा जो उस पिशाचनी ने दिखाया, आप अपनी शक्ति से सच्चाई का पता लगाइए.. हमने उस समय जो किया था वो मानवजाति की भलाई के लिए किया था "ठाकुर की आंख से बहते सच्चाई के आंसुओं ने कुलगुरु को असलियत की तह तक जाने के लिए विवश कर दिया। उन्होंने ठाकुर के सिर पर हाँथ रख कर अपनी आंखें बंद कर लीं और मन में कोई मन्त्र बुदबुदाने लगे।

कुलगुरु की बन्द आंखों में ठाकुर का जीवनचक्र तेज़ी से वर्तमान से भूतकाल की ओर एक चलचित्र की तरह बदलने लगा। कुछ समय पश्चात कुलगुरु उसी समय काल में पहुंच गए जिस काल में वो कुछ देर पहले पहुंचे थे, वहाँ सब कुछ वैसा ही था जैसा उन्होंने कुछ देर पहले देखा था... अप्सरा रूपी शम्भाला ठीक वैसे ही हवनकुंड में मन्त्रों के साथ समिधा डाल रही थी जैसे उन्होंने उसे कुछ देर पहले देखा था बस बदलाव ये था कि उसके हवन करने से सुगंध नहीं दुर्गंध आ रही थी.. जलते हुए मांस की दुर्गंध, उन्होंने देखा कि शम्भाला

के पास एक बड़े से थाल में मांस के टुकड़े पड़े हुए थे जिन्हें वो हवन सामग्री के साथ उस हवनकुंड में डाल रही थी... जिसके कारण ही वहां वातावरण में इतनी दुर्गंध फैली हुई थी।

अभी वे उस घिनौने दृश्य से उबरने का प्रयत्न कर ही रहे थे कि तभी उन्हें वहाँ ठाकुर और शेर सिंह आते हुए दिखाई दिए, वहाँ फैले धुएँ और उसमें समाहित दुर्गंध ने दोनों को ही अपनी नाक पर हाँथ रखने के लिए विवश कर दिया था। दोनों ने अपनी नाक पर हाँथ रखे हुए ही शम्भाला को प्रणाम किया और फिर ठाकुर उससे बोला "शम्भाला हमने आपके तांत्रिक अनुष्ठान में बलि देने के लिए जानवरों का प्रबंध कर दिया है, वे सब गुफा के बाहर हैं.. आप कहें तो हम उन्हें अंदर ले आयें। "

"ठाकुर... मैंने तुमसे जानवरों की नहीं ग्यारह बच्चों की बलि देने की बात की थी और तुम बच्चे ना ला कर ये जानवर ले आये "शम्भाला ने क्रोधित होते हुए ठाकुर से कहा,

"शम्भाला हमने आपसे उसी समय कह दिया था कि हमें ऐसा धन यश नही चाहिए जो मासूमों के जीवन के मूल्य पर प्राप्त हो, इसीलिए हम जानवर ले कर आये हैं ताकि आपका अनुष्ठान अधूरा ना रह जाये और माँ काली कुपित ना हों और उन का श्राप हमारी हवेली और हमारे लोगों का अनिष्ट ना करे "शम्भाला के क्रोध की चिंता किये बिना ठाकुर ने निडरतापूर्वक कहा।

"ठाकुर... तू माँ काली के कोप से तो बच जाएगा परन्तु मेरे कोप से तुझे कौन बचाएगा, अरे मूर्ख तुझे क्या लगा कि मैं ये अनुष्ठान तेरी संपन्नता के लिए कर रही थी ? नहीं.. मूर्ख ठाकुर ये अनुष्ठान मैं अपने लिए कर रही थी.. इस अनुष्ठान के पूरा होते ही मैं इतनी शक्तिशाली हो जाऊंगी की मृत्यु भी मुझे छू नहीं पाएगी.. मैं अमर हो जाऊंगी और फिर ये समस्त मानव जाति मेरे पैरों के नीचे होगी, अरे मूर्ख ठाकुर तू क्या समझ रहा था कि मेरे जैसी शक्तिशाली तांत्रिक तेरे भरोसे बैठेगी... देख इस थाल में... ये किसी जानवर के अवशेष नहीं हैं... ये वही बच्चे हैं जिन्हें तू लाने वाला था लेकिन लाया नहीं.. मैं जानती थी कि तू मेरा ये कार्य नहीं करेगा इसीलिए मैंने दस बच्चों की बलि पहले ही चढ़ा दी और वो भी तेरी जागीरदारी के लोगों के बच्चों की, बस अब ग्यारहवां बच्चा रह गया है... जानता है वो कौन है ?? वो है तेरी पांच साल की बेटी.. हां हां चौंक मत... तेरी ही बेटी, पता है तेरी ही बेटी क्यों ?? क्योंकि वो उस शुभ नक्षत्र में पैदा हुई है जिसमें जन्में बच्चे की बलि देने से मनवांछित फल प्राप्त होते हैं...

इसीलिए हमने इस शुभ कार्य के लिए तेरी बेटी को चुना "शम्भाला मुँह से ज़हर उगलती जा रही थी और ठाकुर वीर प्रताप खौफ़ से उसकी बातों को सुने जा रहे थे, वे उसकी शक्तियों से भली भांति परिचित थे इसीलिए उसके मुंह से अपनी बेटी का नाम सुनकर उनके शरीर में दौड़ता खून पानी बनता जा रहा था।

"ठाकुर.. देख मेरी ताक़त... मैं अपनी शक्तियों से तेरी बेटी को इसी समय तेरी हवेली से यहां ले आऊंगी और फिर तेरी आँखों के सामने उसकी बलि चढ़ाऊंगी.. तू कुछ नहीं कर पायेगा.. बस मूकदर्शक बन कर सब कुछ देखेगा और फिर उसके बाद तेरी और तेरे इस वफादार की गर्दन काट कर इस गुफा में लटका दूंगी, हा..हा...हा... अब मुझे कोई भी मेरे उद्देश्य की पूर्ति करने से नहीं रोक सकता "ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगाते हुए शम्भाला तेज़ी से कोई मन्त्र बुदबुदाने लगी।

ठाकुर की कुछ भी समझ में नहीं आ पा रहा था कि वो कैसे उस शक्तिशाली चंडालनी से खुद को और अपनी जान से भी प्यारी उस मासूम को बचाएं, उस चंडालनी ने पहले ही दस मासूमों की बलि दे दी थी और वे कुछ नहीं कर पाए, लेकिन अब तो उनकी ख़ुद की बेटी की जान का प्रश्न था.. वो भला अपनी आंखों के सामने अपनी बेटी की इतनी दर्दनाक मौत कैसे देख सकते थे ?? और फिर ये सोचते सोचते उन्होंने अपने अंदर के डर को निकाल फेंका और एक खतरनाक निर्णय ले लिया। उन्होंने शेर सिंह की ओर देखा और आंखों ही आंखों में संकेतों की भाषा में कुछ कहा... जिसे उनके वफादार ने तुरंत समझ भी लिया और उसने अपना सिर हिला कर हामी भर दी।

और इधर जैसे ही शम्भाला के मन्त्र पूरे हुए वहां एक तेज़ रोशनी का झनाका हुआ और जब वहाँ रोशनी कुछ कम हुई तो गुफा की जमीन पर एक बेहद प्यारी सी छोटी सी अबोध बच्ची बेहोश पड़ी थी, उसे देखते ही ठाकुर ज़ोर से चीख पड़े "मेरी बच्ची... !! " और फिर वे दौड़ कर शम्भाला के पैरों में गिर पड़े और ज़ोर ज़ोर से रोते हुए गिड़गिड़ाने लगे "शम्भाला... उस अबोध की जान मत लो, अभी तो उसने दुनिया में कुछ भी नहीं देखा, अभी तो उसे अपनी माँ का भरपूर प्यार भी नहीं मिला, अभी तो मैं उसे ढंग से सीने से भी नहीं लगा पाया... अभी तो मुझे उसे अपने इन्ही हाँथों से बड़ा कर के डोली में बिठाना है और तुम इसे... इस नन्ही सी जान को मार दोगी... इतनी पत्थर दिल मत बनो... मैं तुम्हारे हाँथ जोड़ता हूँ.. मेरी बेटी को जीवनदान दे दो, चाहो तो तुम मेरी बलि दे दो लेकिन उसे छोड़ दो "ठाकुर ये सब रोते बिलखते बोले जा रहे थे और उसके पैरों को पकड़े हुए थे।

"इतनी शीघ्रता भी क्या है ठाकुर... तेरी बलि भी दूंगी मैं लेकिन पहले तेरी इस मासूम की बलि तो दे दूं... तेरी बलि से मुझे कोई लाभ नहीं मिलने वाला और तेरी बेटी मुझे महाशक्तिशाली बना देगी, इसलिए बस थोड़ी सी प्रतीक्षा कर "और ये बोलते हुए शम्भाला ने अपने पैरों में गिरे ठाकुर को उनके कंधे पकड़कर उठाने लगी, बस उसी समय ठाकुर ने अपने वफादार शेर सिंह की ओर अपनी आँखों से संकेत कर दिया जैसे कह रहे हों कि बस यही वो मौका है, शेर सिंह भी उनके संकेत को समझ कर तेज़ी से आगे बढ़ा और पास रखे गँड़ासे को उठा कर बिजली की फुर्ती से एक ज़ोरदार प्रहार शम्भाला की गर्दन पर कर दिया। शेर सिंह ने इतनी बला की फुर्ती से ये सब किया था कि शम्भाला को ना समझने का और ना ही सम्भलने का मौका मिला.. उसकी गर्दन कट कर उसी हवनकुंड में जा गिरी जिसमें वो थोड़ी देर पहले उन बच्चों के अवशेष डाल रही थी। उस हवनकुंड में उसकी खोपड़ी के गिरते ही एक जोरदार धमाका हुआ और उसकी अग्नि और प्रचंड हो कर धधकने लगी।

शम्भाला का अंत करने में शेर सिंह ने जो भूमिका निभाई थी उसके ठाकुर साब कायल हो गए और इसीलिए उन्होंने दौड़कर उसे गले से लगा लिया साथ ही प्रसन्नता से उससे बोले "शेर सिंह.. आज तुमने मेरी बेटी का जीवन बचा कर मुझे अपना ऋणी बना दिया, मैं आजन्म तुम्हारा ऋणी रहूंगा, मैं तुम्हें सोने से तौल दूँगा "अभी ठाकुर साब शेर सिंह को गले लगा कर आभार प्रकट कर ही रहे थे कि तभी उस धधकते हवनकुंड से एकाएक शम्भाला का कटा सिर बाहर आ कर हवा में लटक गया, आधा जला उसका कटा सिर बड़ा ही भयानक लग रहा था और उस पर वो अपनी बची इकलौती आंख से ठाकुर को घूरते हुए जब गुर्राई तो उसे देख कर ठाकुर और शेर सिंह के भी सारे शरीर से पसीने छूट गए।

"ठाकुर... मुझे मार कर बड़ा प्रसन्न हो रहा है, उत्सव मना रहा है, लेकिन ज़्यादा दिन तक नहीं मना पायेगा... मैं वापस आऊंगी, जरूर वापस आऊंगी और तब ना तू बचेगा और ना ही तेरा खानदान, तब मैं तेरी इसी बेटी की बलि अपने हाँथों से दूंगी मगर अफसोस तू तब जीवित नहीं रहेगा इसे बचाने के लिए और फिर मुझे दुनिया की कोई ताकत सर्वशक्तिमान बनने से नही रोक पाएगी "और इतना बोलते ही उसका कटा सिर उस धधकते हवनकुंड में जा गिरा और उसके गिरते ही उस गुफा की हर वस्तु धमाके के साथ टूट टूट कर बिखरने लगी।

गुफा को नष्ट होता देख ठाकुर जैसे नींद से जागे और फिर उन्होंने ज़मीन पर मूर्छित पड़ी अपनी बेटी को गोद में उठा कर तेज़ी से उस गुफा के बाहर की ओर भागने लगे, उनके पीछे पीछे शेर सिंह भी उतनी ही तेज़ी से भागता आ रहा था हाँथ में वही रक्तरंजित गंडासा पकड़े।

कुलगुरु का हाँथ अब भी ठाकुर के सिर पर था जो कि उन लोमहर्षक दृश्यों को देख कर थरथरा रहा था और साथ ही उनका ओजस्वी चेहरा विकृत हो चुका था...."शम्भाला.... इतनी पाशविकता "बन्द आँखों में ही वे बड़बड़ाये और फिर हड़बड़ा कर उन्होंने अपनी आँखें खोल दी, उन भयानक दृश्यों और शम्भाला के धोखे के कारण उनका पूरा शरीर क्रोध से कंपकपा रहा था। उन्होंने उस कमरे में शम्भाला को ढूंढने के लिए चारों ओर निगाह दौड़ाई तो उनकी दृष्टि शेर सिंह पर पड़ी.. उसे देखते ही उन्हें एक झटका सा लगा, अब उस जगह पर जीवित शेर सिंह की जगह... उसका मृत शरीर पड़ा हुआ था, उसे देखकर कुलगुरु के चौंकने का कारण उसके मृत शरीर की दशा थी, उसके शरीर से खून की एक एक बूंद चूस ली गई थी... खाल हड्डियों से चिपकी हुई थी.. दर्द की अधिकता से दोनों आँखें उबल कर बाहर निकल आई थीं और वे फटी फटी सी आँखें अब भी छत को घूर रही थीं.. और माथे पर वही रक्तरंजित स्वास्तिक का निशान.. शम्भाला की पहचान।

अभी कुलगुरु शेर सिंह के विकृत हो चुके मृत शरीर को देख ही रहे थे कि तभी उन्हें ठाकुर की दर्दनाक चीत्कार सुनाई दी, उन्होंने चौंक कर ठाकुर की ओर देखा तो उन्हें एक तेज़ झटका लगा। ठाकुर के शरीर पर एक एक करके काटने के निशान उभर रहे थे और उन निशानों के साथ उस जगह के वस्त्र भी कट रहे थे... जैसे कोई उनके शरीर पर किसी धारदार हथियार से हमला कर रहा हो लेकिन वे निशान शरीर के बाहर की ओर से ना हो कर शरीर के अंदर से उभर रहे थे जैसे कोई उनके शरीर के अंदर से उन्हें हथियार से काट रहा हो। हर एक काटने के निशान के साथ ठाकुर की एक दर्दनाक चीख उस कमरे में गूंज रही थी।

बड़ा ही भयानक दृश्य था वो... ठाकुर बड़ी ही तेज़ी से मौत के मुंह में जा रहे थे और इसी का आभास होते ही कुलगुरु ज़ोर से चीखे "ठहर जा शम्भाला... देख तेरा में क्या हस्र करता

हूँ "और इतना बोल कर कुलगुरु ने अपने कमंडल में से पवित्र जल अपनी हथेली पर लेकर ज़ोर ज़ोर से मन्त्र पढ़ने लगे।

अभी उन्होंने मन्त्र पढ़ने प्रारंभ ही किये थे कि तभी उन्हें ठाकुर की कराहती हुई आवाज़ सुनाई दी.. वे उन्हें ही बुला रहे थे "क.. क.. कुलगुरु... शम्भाला यहाँ से जा चुकी है और शायद वो मेरे बेटे को मारने गई होगी... और फिर उसके बाद वो मेरी बेटी की बलि दे कर अपने कुत्सित उद्देश्य की पूर्ति कर लेगी... कुलगुरु यदि वो अपने मकसद में सफल हो गई तो प्रलय आ जायेगी.. कुलगुरु बस अब एक आप ही हैं जो मेरे पुत्र और पुत्री के साथ साथ इस दुनिया का अंत होने से बचा सकते हैं... मैं तो अब नहीं बचूंगा लेकिन आप उन्हें बचा लीजिये " मुँह से खून की उल्टी करते हुए ठाकुर ने हाँथ जोड़कर कुलगुरु से विनती की।

ठाकुर का अंत समय निकट देख कर कुलगुरु उनके पास जमीन पर बैठ गए और उनका सिर अपनी गोद में रख कर उनका सिर बडे प्यार से सहलाते हुए बोले "ठाकुर वीर प्रताप.. तुम चिंता मत करो... हम जब इस हवेली में आये थे तो उसी समय हमने तुम्हारे परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक अभिमंत्रित माला पहना दी थी ताकि उनका कोई अहित ना कर पाए... बस हमसे यही एक चूक हो गई कि हम तुम्हें और शेर सिंह को सुरक्षित नहीं कर पाए, और रही बात तुम्हारी पुत्री की सुरक्षा की तो उसकी ओर से तुम पूरी तरह निश्चिंत हो जाओ... तुम्हारी पुत्री अब वो एक साधारण बच्ची नहीं रही जिसे तुम मेरे हवाले कर गए थे.. अब वो एक असाधारण बालिका बन चुकी है, हम तभी जान गए थे कि ये कोई साधारण बच्ची नहीं है इसीलिए हमने उसका नाम माँ काली के नाम पर वैष्णवी रखा.. जिसका अर्थ होता है अपराजेय.. यानी कि जिसे कोई पराजित ना कर सके.. और हमने उसे अपनी हर उस तांत्रिक विद्या में पारंगत किया जिन्हें हम जानते हैं और तुम्हे जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि वो हमारी इतनी श्रेष्ठ शिष्या है कि उसने दिन रात डूब कर हमसे भी ज़्यादा सिद्धि प्राप्त कर ली हैं... इसलिए तुम इस बात से निश्चिंत रहो की तुम्हारी पुत्री का कोई बाल भी बांका कर पायेगा... हाँ यदि शम्भाला उस तक पहुंचती है तो समझ लो वो अपने काल के पास पहुंच गई। "

कुलगुरु की बातें सुनकर अपने अंतिम समय की प्रतीक्षा कर रहे ठाकुर के चेहरे पर एकाएक असीम शान्ति के भाव उभर आये, अब उनकी आंखों में चिंता की जगह निश्चिन्तता ने ले

ली... अब उनका परिवार सुरक्षित था। कुछ क्षण हाँथ जोड़े वे कुलगुरु की ओर श्रद्धापूर्वक देखते रहे और फिर उनकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई।

निर्दोष ठाकुर की दर्दनाक असामयिक मृत्यु से कुलगुरु की आंखों में दुःख और क्रोध के आँसू छलक आये, वे अपनी मुट्ठी क्रोध से भींचकर ज़ोर से चिल्लाये "शम्भाला... "

लेकिन शम्भाला उस कमरे में होती तभी तो उनकी गर्जना सुनती, वो तो कब का अपना कार्य पूरा कर के ठाकुर के छोटे पुत्र की मौत बन कर उसकी ओर बढ़ चली थी।

शम्भाला अब भी धुंवे की आकृति में ही थी, ठाकुर और शेर सिंह को ठिकाने लगा कर अब उसका अगला शिकार ठाकुर का सबसे छोटा इकलौता जीवित पुत्र था... वो जल्द से जल्द उसे भी ठिकाने लगा कर ठाकुर की बलि देना चाह रही थी.. वो जान चुकी थी कि वो उसे कहाँ मिलेगी इसीलिए वो कुलगुरु के आश्रम में पहुंचने से पहले ठाकुर की पुत्री की बलि दे कर सर्वशक्तिशाली बन जाना चाहती थी। कुछ ही क्षणों में वो उस कमरे में पहुंच गई जिस कमरे में ठाकुर का छोटा बेटा तेज़ प्रताप कुछ देर पहले ही डरते डरते सोया था। तेज़ प्रताप को शम्भाला ने ऐसे देखा जैसे भेड़िया शिकार करते समय अपने शिकार को देखता है। बिना एक पल गवाएं वो तेज़ी से उसके ऊपर झपटी और उतनी ही तेज़ी से उसे एक ज़ोरदार झटका लगा और वो दूर जा कर छिटक पड़ी। उसे कुछ पल लग गए खुद को संभालने में और समझने में की वो मन्त्रों के सुरक्षा घेरे में है। लेकिन उसका भी नाम शम्भाला था... भला इतनी जल्दी और आसानी से कैसे हार मान जाती। वो वहीं पर खड़ी हो कर मन्त्र कवच की काट का मन्त्र पढ़ने लगी और फिर कुछ क्षण पश्चात वो एक भूखी शेरनी की तरह तेज़ प्रताप पर टूट पड़ी।

कुलगुरु के सुरक्षा कवच को उस चंडालनी ने भेद दिया था और उस पिशाचनी ने इतनी भी दया नहीं दिखाई की उस सोलह वर्ष के बालक की जान बक्श दे। उस मनहूस कमरे में एक निर्दोष और मासूम बच्चे की चीखें गूंज रही थीं... और फिर कुछ देर बाद उस कमरे में सन्नाटा छा गया।

उस मासूम की चीखों की आवाज़ सुनकर सारी हवेली में हड़कंप मच गया। सभी दौड़ते हुए उस कमरे में आ गए और सबसे पहले आने वालों में थे कुलगुरु।

तेज़ प्रताप अपने पलँग पर मृत पड़ा था। उसके शरीर का भी वही हाल किया था उस पिशाचनी ने जो उसने शेर सिंह का किया था। उसके माथे पर भी वैसे ही स्वास्तिक का निशान बना था जैसा शेर सिंह के बना था। ये सब देख कर कुलगुरु अपना सिर पकड़ कर वहीं ज़मीन पर बैठ गए। एक अपराधबोध उन पर हावी हो गया था। वो ठाकुर से किया वादा पूरा नहीं कर पाए थे... वे उनके पुत्र को उस चंडालनी से बचा नही पाये थे। अभी वे इस अपराधबोध से उबरने का प्रयास कर ही रहे थे कि तभी उन्हें औरतों के ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ें सुनाई दीं.. उन आवाज़ों से वे अपने सन्ताप से बाहर आये और होश में आते ही उन्हें ठाकुर की पुत्री वैष्णवी का ध्यान आया।

उनका ह्रदय और मस्तिष्क दोनों वैष्णवी की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठा। अब उन्हें अपनी शक्तियों पर शंशय हो चला था। वे खुद अपने आप से ही प्रश्न कर रहे थे कि क्या मैं वैष्णवी को बचा पाऊंगा या फिर मेरी शिष्या खुद अपने आप को बचा पाएगी ??

शम्भाला को ज्यादा समय नहीं लगा कुलगुरु के आश्रम तक पहुंचने में... उसे कोई चल कर तो आना नहीं था जो वो समय लेती।

घने जंगल के बीचों बीच स्थित था कुलगुरु का वो सुंदर और पवित्र आश्रम। उस आश्रम में चारों ओर छोटी छोटी कुटिया बनी हुईं थीं और उनके चारों ओर औषधिय फूल पौधे लगे हुए थे। उस आश्रम के बीचों बीच एक बड़ा सा हवन कुंड बना हुआ था जिस में पवित्र अग्नि प्रज्वलित थी... उस हवन कुंड के ठीक सामने एक 19-20 साल की लड़की सफेद सात्विक वस्त्रों में अकेली बैठी मन्त्रों का उच्चारण करते हुए उस हवन कुंड में समिधा डाल रही थी।

शम्भाला ने दूर से देखते ही उसे पहचान लिया... वही तो थी उसकी सर्वशक्तिमान बनने की सीढ़ी।

कुछ देर उसे दूर से निहारने के बाद वो अपनी जीभ लपलपाते हुए उस की ओर झपट पड़ी...

वैष्णवी.. जैसे माँ दुर्गा का प्रतिरूप... चेहरे पर दिव्य तेज़... दूर से देखने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे साक्षात देवी माँ स्वयं अपने हाँथों से हवन कुंड में समिधा डाल रही हों।

वैष्णवी का वो दिव्य रूप देख कर एकबार तो शम्भाला के बढ़ते कदम भी ठिठक गए, उसे भी यही लगा कि माँ दुर्गा स्वयं वहां विराजमान हों और स्वयं तांत्रिक साधना कर रही हों... इसी सोच ने उसके अंदर भय की एक सिहरन सी पैदा कर दी, लेकिन ज्यादा देर तक वो उस अवस्था में नहीं रही... कुछ क्षण में ही उसने अपने आप को संभाल लिया, उसने डर की उस सोच को एक झटके में अपने से दूर कर दिया। उसे वैष्णवी के रूप में खुद के सर्वशक्तिमान बनने की सीढ़ी जो नज़र आ रही थी... इसीलिए वो बिना समय गवाएं दुगनी तेज़ी से उसकी ओर झपटी।

लेकिन शम्भाला उस पवित्र आश्रम की सीमा के पास अभी पहुंच भी नहीं पाई थी कि उसे एक तेज़ झटका लगा और उसकी धुंवे की आकृति आग की लपटों में घिर गई..

शम्भाला को आश्रम की मन्त्रों द्वारा अभिमंत्रित अदृश्य सुरक्षा दीवार का पता नहीं चल पाया था जो कि उस आश्रम को अजनबियों और खतरनाक जानवरों से सुरक्षा के लिए बनाया गया था और इस भूल का उसे बड़ा ही भयानक परिणाम भुगतना पड़ा.. वो अग्नि की प्रचंड लपटों में घिर चुकी थी।

उस अग्नि में पता नहीं ऐसा कौन सा ताप था कि उसकी तपिश शम्भाला जैसी शक्तिशाली चंडालनी भी बर्दाश्त नहीं कर पाई और वो ज़ोरदार चीत्कार कर उठी।

उसकी चीख सुनकर वैष्णवी का ध्यान तांत्रिक साधना से भंग हो गया और वो उस दिशा में आश्चर्यचकित हो कर देखने लगी जिस दिशा से उसे वो चीखने की आवाज़ सुनाई दी थी... वहाँ उसे एक औरत की आकृति आग की लपटों में घिरी हुई नज़र आई.. उसे लगा शायद कोई गांववासी भूलवश आश्रम में प्रवेश करते समय उस सुरक्षा दीवार की चपेट में आ गया है और यही सोच कर वो अपनी तांत्रिक साधना अधूरी छोड़ कर उसे बचाने दौड़ पड़ी.. लेकिन उस बेचारी को क्या पता था कि जिसे वो बचाने जा रही है वो खुद उसका काल बन कर आई है।

वैष्णवी अभी आश्रम के उस सुरक्षा कवच से बाहर निकलने ही वाली थी कि तभी उसे एकाएक कुलगुरु की आवाज़ अपने कानों में गूंजती हुई महसूस हुई। उसने चौंक कर आसपास देखा तो वहां कोई नहीं था। तब उसने ध्यान दिया कि ये तो कुलगुरु उससे मानसिक संपर्क स्थापित कर रहे थे। उसने तुरंत अपनी आंखें बंद कर ली और कुलगुरु की ओर ध्यान लगाने लगी और फिर शीघ्र ही उसका मानसिक सम्पर्क कुलगुरु से जुड़ गया।

"बेटी वैष्णवी... हमने तुम्हें आने वाले खतरे के प्रति सचेत रहने के लिए तुमसे सम्पर्क किया है "और फिर कुलगुरु वैष्णवी को शम्भाला और उसके पिता के बारे में सब कुछ विस्तार से बताने लगे। जैसे जैसे कुलगुरु वैष्णवी को वो सब बता रहे थे वैसे वैसे वैष्णवी के चेहरे के भाव बदल रहे थे.. दुःख क्रोध घृणा .. सारे भाव आ रहे थे और जा रहे थे।

"बेटी.. तुम पूरी तरह से सचेत रहना, या तो वो वहाँ पहुँचने वाली होगी या फिर वो पहुंच गई होगी, वो दुष्ट बेहद खतरनाक.. शक्तिशाली और धूर्त है, हम शीघ्र ही वहाँ पहुँचने का प्रयास करेंगे तब तक तुम सावधान रहना "और इतना कह कर उन्होंने सम्पर्क तोड़ दिया।

कुलगुरु से शम्भाला और अपने परिवार के बारे में जानकर वैष्णवी के अंदर शम्भाला के प्रति क्रोध की अग्नि धधकने लगी, उसे अब शम्भाला से भी ज़्यादा जल्दी थी उससे मिलने की।

वैष्णवी अभी शम्भाला का ध्यान करके क्रोध की ज्वाला में धधक ही रही थी कि तभी उसे फिर से उस औरत के चीखने की आवाज़ सुनाई दी, उस आवाज़ को सुनकर वैष्णवी को ध्यान आया कि वो तो उस संकट में पड़ी औरत के प्राणों की रक्षा करने जा रही थी लेकिन कुलगुरु से बात करने के कारण देरी होने से वो बेचारी और भी ज्यादा संकट में आ गई थी। वैष्णवी ने बिना देरी किये उसे बचाने के लिए उस सुरक्षा दीवार को पार कर उसके पास जाने का निर्णय ले लिया।

अभी वो उस सुरक्षा दीवार को पार करने ही वाली थी कि तभी उसे कुलगुरु के वे शब्द ध्यान आ गए कि किसी पर भी विश्वास मत करना और यही सोच कर वैष्णवी ने उस चीखती औरत की सच्चाई जान लेना उचित समझा।

वैष्णवी ने वहीं पर रुक कर अपनी आंखें बंद कर लीं और मन ही मन कोई मन्त्र बुदबुदाने लगी और फिर कुछ क्षण पश्चात अपनी आंखें खोल दीं, आँखें खोलते ही उसे वो नज़र आया जो वो थोड़ी देर पहले नहीं देख पाई थी... उसे सामने धधकती उस औरत की आकृति में छिपी शम्भाला साफ साफ नजर आ गई थी, डरावनी बदसूरत घिनौनी शम्भाला... जिसे देखकर वैष्णवी के अंदर दब चुकी घृणा और क्रोध की अग्नि फिर से धधक उठी।

वैष्णवी पहचान चुकी थी कि ये वही शम्भाला है जिसने उसके पिता और भाइयों की बड़ी ही निर्दयता से हत्या की थी और उसका बचपन माँ पिता के प्रेम से वंचित किया था, वो उसका इससे भी बुरा और भयानक अंत करना चाहती थी लेकिन उसके कुछ करने से पहले ही शम्भाला का अपने आप अंत होने जा रहा था.. इसीलिए वो वहीं खड़ी हो कर उसे घृणित नज़रों से आग में तड़पता देखने लगी।

उस आग में लिपटी शम्भाला को ऐसा लगा कि अगर उसने शीघ्र ही कुछ ना किया तो उसका अंत समय निकट है और यही सोच कर वो उस रक्षा कवच को भेदने के लिए ज़ोर ज़ोर से कवच भेदन मन्त्र पढ़ने लगी। कुछ देर तक वो अनवरत मन्त्र जपती रही... लेकिन वो अग्नि शान्त होने की जगह और तेज़ी से भड़क उठी और इसके साथ ही शम्भाला के मुँह से मन्त्रों की जगह बेहद दर्दनाक चीखें निकलने लगीं... ठीक वैसी ही जैसी उसके द्वारा किये हुए निर्दोष लोगों के मुँह से निकली थीं, कुछ देर तक लगातार चीखने के बाद वो एकदम शान्त हो गई... ठीक वैसी ही शांत जैसे कोई जीवित व्यक्ति मर कर शान्त होता है। अब वहां पर राख के ढेर के सिवा कुछ नज़र नहीं आ रहा था। शांति ऐसी जैसे कि वहां कोई मरघट हो।

वैष्णवी ने अपनी आँखों के सामने उस पिशाचनी का तड़पते हुए अंत देखा था लेकिन पता नहीं क्यों उसके मन को शांति नहीं मिली थी... शायद उस पिशाचनी को अपने हाथों से दंड ना दे पाने के कारण। कुछ देर वो उस चंडालनी के राख के ढेर को घृणित नज़रों से देखती रही फिर मुड़कर हवन कुंड की ओर चल पड़ी।

अभी वैष्णवी कुछ दूर ही चली होगी कि उसे अपने पीछे से किसी के ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगाने की आवाज़ सुनाई दी... वो अचंभित हो कर तेज़ी से पलटी तो वहाँ का दृश्य देखकर उसकी आँखें आश्चर्य से फैलती चली गईं। वो राख का ढेर धीरे धीरे अपने आप इंसानी आकृति में परिवर्तित हो रहा था और वो भयानक अट्टहास की आवाज़ें उसी से आ रही थीं, कुछ ही पल में वो राख का ढेर शम्भाला का रूप ले चुका था... भयानक भद्दी और खूँखार शम्भाला का रूप। अपने असली रूप में आकर शम्भाला वैष्णवी की ओर देखकर और भी ज़ोर से ठहाके लगाने लगी, कुछ देर यूं ही अट्टहास करने के बाद वो वैष्णवी को घूरते हुए ज़हर बुझी गुर्राहट के साथ बोली "तू क्या समझी की तेरी ये मामूली सी मन्त्रों की सुरक्षा दीवार मेरा कुछ बिगाड़ लेगी... शक्तिशाली शम्भाला का कुछ बिगाड़ लेगी ?? यदि तू ऐसा सोचती है तो तू उस कुलगुरु से भी ज्यादा मूर्ख है! मैं तो तुझे मारने से पहले तुझसे खेल खेल रही थी.... ठीक वैसे ही जैसे बिल्ली हाँथ में आये चूहे को अधमरा करके खेलती है, जब तेरा गुरु ही मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाया तो तू मेरा क्या बिगाड़ पाएगी, आज पहली बार तुझसे मिलने आई हूँ तो सोचा क्यों ना तेरे लिए एक उपहार ही लेती चलूँ... ले देख में तेरे लिए क्या उपहार लाई हूँ "और ये बोल कर उसने अपने हाँथ में पकड़ी हुई उस वस्तु को उसकी ओर उछाल दिया।

वैष्णवी ने उसके द्वारा उछाली उस वस्तु को ध्यान से देखा तो उसकी आंखें क्रोध से जल उठीं, वो वस्तु और कुछ नहीं ठाकुर वीर प्रताप का कटा हुआ सिर था जिसे उस पिशाचनी ने बड़ी ही निर्दयता से वैष्णवी की ओर उछाल दिया था। वैष्णवी ने अपने पिता के कटे सिर को पहचान लिया था और वो जानती थी कि यदि उसने जल्दी ही उस सुरक्षा दीवार को ना हटाया तो उसके पिता का सिर जलकर राख हो जाएगा और यदि उसने उस सुरक्षा घेरे को हटाया तो वो चंडालनी वहाँ आ जायेगी, और फिर उसने इसका उपाय ढूंढ लिया और वो आंख बंद कर के कोई मन्त्र पढ़ने लगी। वैष्णवी के मन्त्र पढ़ने के कुछ ही पलों में उस सुरक्षा दीवार में उस जगह एक छोटा सा छिद्र बन गया जहाँ पर ठाकुर का कटा सिर टकराने वाला था.. अब वो कटा सिर उस छोटे से छिद्र से निकल कर सीधे वैष्णवी के हाँथों में आ गिरा था।

वैष्णवी अपने पिता की ऐसी दुर्दशा देखकर अपनी आँखों से बहते आंसुओं को रोक नहीं पाई, कुछ क्षण वो उसी दशा में खड़ी रही और फिर अपनी मानसिक शक्ति से खुद को संभाल कर क्रोध में फुँफकारते हुए उस चंडालनी की ओर मुड़ी। लेकिन वो पिशाचनी उस

जगह होती तभी तो उसे मिलती... शम्भाला तो उस सुरक्षा दीवार में बने उस छोटे से छिद्र में से अपने लिए रास्ता बना कर कभी की उस आश्रम में प्रवेश कर चुकी थी।

"देखा तूने मूर्ख.. शम्भाला को कोई भी रुकावट रोक नहीं सकती, तू क्या समझी थी कि मैं तेरे लिये कोई उपहार लाऊंगी ! अरे मूर्ख उपहार तो तू है मेरे लिए मेरे सर्वशक्तिशाली बनने के लिए... ठाकुर का कटा सिर तो मेरे लिए ताले की कुंजी भर था और देख उस कुंजी से कितनी आसानी से तूने ताला खोल दिया, अब मैं तेरी बलि दे कर अपनी वर्षों की महत्वकांक्षा पूरी करूंगी... चल अब चुपचाप अपनी बलि के लिए तैयार हो जा.. देख शुभ मुहूर्त भी निकला जा रहा है "कुटिल हंसी के साथ बोलते हुए अब उसके हाँथ में वही गंडासा नज़र आ रहा था जिससे उसने पहले पता नहीं कितने निर्दोषों की बलि दी थी.. और आज शायद उस गँड़ासे की धार का स्वाद वैष्णवी की गर्दन चखने जा रही थी।

और फिर शम्भाला तेज़ आवाज़ में हुंकारते हुए उस रक्त में डूबे गँड़ासे को लेकर वैष्णवी की गर्दन की ओर झपट पड़ी।

शम्भाला को रक्तरंजित गँड़ासे के साथ अपनी ओर झपटता देख कर भी वैष्णवी के चेहरे के भाव यथावत थे, उसके चेहरे के भावों से ऐसा लग रहा था कि जैसे वो स्वयं ही प्रतीक्षा कर रही हो कि शम्भाला उस पर प्रहार करे।

और इधर गंडासा लेकर उस पर झपटती शम्भाला के मन में भी उसकी आँखों में निडरता का भाव देख कर असमंजसता आ गई, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो मौत को सामने देखकर भी इतनी निर्भीकता पूर्वक कैसे खड़ी है ?

वो समझ नहीं पा रही थी कि उसके साक्षात मृत्यु स्वरूप भयानक रूप को देख कर जहाँ बड़े से बड़ा ताकतवर ह्रदय का स्वामी भी डर कर थरथर काँपने लगता हो वहीं वो एक दुबली पतली सी बालिका उसकी आंख में आंख डाल कर ऐसे खड़ी थी कि जैसे उसके लिए वो एक साधारण खेल दिखाने वाली जादूगरनी हो।

वैष्णवी का इस तरह निर्भीकता पूर्वक अपने सामने खड़ा होना शम्भाला के लिए अपनी अब तक बनी बनाई प्रतिष्ठा धूल में मिलती दिख रही थी.. इसी कारण उसकी आँखें क्रोध की अग्नि से धधक उठीं और वो एक घायल नागिन की तरह फुँफकारते हुए उस पर झपट पड़ी।

शम्भाला ने अपनी पूरी शक्ति के साथ उस रक्तरंजित गंडासे से वैष्णवी की गर्दन पर प्रहार कर दिया.. उसके एक ताकतवर प्रहार ने वैष्णवी की गर्दन धड़ से अलग कर दी। लेकिन शम्भाला की अपमान की अग्नि मात्र एक प्रहार में शान्त नहीं हुई इसीलिए वो वैष्णवी के गर्दन रहित धड़ पर वीभत्सता की सीमा को भी पार कर के उस गँड़ासे से लगातार प्रहार करने लगी.... वो उसके धड़ पर तब तक प्रहार करती रही जब तक की वो थक नहीं गई, अपनी क्रोध और अपमान की अग्नि में वो ये भी भूल गई कि उसे तो वैष्णवी की बलि देनी थी... और जब उसकी वो क्रोध की अग्नि शान्त हुई तो उसके सामने वैष्णवी का छत-विछत शव पड़ा था। वैष्णवी के शव को देखकर शम्भाला के चेहरे पर ठीक वैसे ही भाव उभर आये थे जैसे कि किसी के हाँथ में आया हुआ बहुमूल्य खजाना उसके हाँथ से निकल गया हो। उसे स्वयं अपने आप पर इतना क्रोध आ रहा था कि अगर वो जीवित होती तो शायद उसी गँड़ासे से अपनी गर्दन धड़ से अलग कर देती, लेकिन अब वो कर भी क्या सकती थी.. उसको सर्वशक्तिमान बनाने की सीढ़ी को तो उसने स्वयं ही ध्वस्त कर दिया था।

अभी शम्भाला पछतावे की आग में झुलस ही रही थी कि तभी उसके कानों में किसी के ज़ोर ज़ोर से हँसने का स्वर सुनाई दिया। वो अचंभित हो कर उस दिशा में देखने के लिए विवश हो गई जिधर से वो स्वर उसे सुनाई दे रहा था। उसने अपने पीछे पलट कर देखा तो उसकी इकलौती आँख सामने का दृश्य देखकर आश्चर्य से फटती चली गई... उसके वीभत्स चेहरे पर ऐसे भाव उभर आये जैसे उसने संसार की कोई ऐसी वस्तु देख ली जिसकी उसने कभी कल्पना ही न की हो।

सच में ही शम्भाला ने संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य देख लिया था।

उसके ठीक सामने कुछ फर्लांग की दूरी पर खड़ी वैष्णवी ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगा रही थी.. ठीक वैसे ही अट्टहास जैसे शम्भाला अपने शिकार का शिकार करते हुए लगाती थी। शम्भाला के लिए ये तो एक आश्चर्यजनक बात थी ही की जिस वैष्णवी को उसने अभी थोड़ी

देर पहले अपने गँड़ासे का शिकार बनाया था वो अब उसके ठीक सामने जीवित और पूर्णतः स्वस्थ खड़ी थी... लेकिन शम्भाला के लिए केवल वैष्णवी का मात्र जीवित होना ही आश्चर्यचकित होने का एक कारण नहीं था.. उसके लिए तो सबसे बड़ा आश्चर्य इस बात का था कि उसके सामने केवल मात्र एक वैष्णवी नहीं अपितु दस दस वैष्णवी खड़ी अट्टहास लगा रहीं थीं और उन दस वैष्णवी के मुंह से निकल रही वो अट्टहास की ध्वनि शम्भाला के कानों में प्रवेश कर के उसके मस्तिष्क में बड़ा ही शक्तिशाली प्रहार कर रही थी, उन ध्वनियों का प्रहार इतना शक्तिशाली था कि शम्भाला जैसी पिशाचनी भी अपने सिर के बाल पकड़ कर नोचने लगी।

"अरे पिशाचनी... अभी से ही तू अपने बाल नोचने लगी, अभी तो मैंने तुझसे खेलना प्रारंभ ही किया है और तू अभी से निर्बल हो रही है, देख ऐसे तो खेल खेलने में आनंद नहीं आएगा जब तक की सामने वाला बराबर की टक्कर ना दे पाए... तो इसलिए ऐ पिशाचनी तू कुछ क्षण तो मेरे सम्मुख टिक कर खड़ी रह और फिर जब मैं तुझसे खेल खेलते हुए ऊब जाऊंगी तब मैं तुझे स्वयं नर्क के दर्शन करवा दूंगी... बस तब तक के लिए तू मेरा मनोरंजन कर "ये सारे शब्द एक वैष्णवी के मुंह से ना निकलकर एक एक करके उन दसों वैष्णवी के मुंह से निकल रहे थे.. यहाँ तक कि वो अट्टहास भी एक साथ ना करके अलग अलग लगा रही थीं।

उन दसों वैष्णवी के मुंह से निकले कटाक्ष ने शम्भाला को तिलमिला कर रख दिया।

वो क्रोध में फुफकारते हुए वैष्णवी से बोली "मुझ मायावी को माया दिखा रही है तुच्छ लड़की, ये खेल खेलते हुए मुझे सदियां बीत गई और तू मुझे अपनी इन बचकानी हरकतों से मेरे उद्देश्य से रोकना चाहती है... एक बार छलावा दे देने से तू क्या समझती है कि तू मुझसे विजय प्राप्त कर लेगी ? बहुत बड़ा भ्रम है तुझे... अभी तक तो मैं तुझे एक बच्ची समझ रही थी लेकिन अब देख मैं कैसे तुम सारी वैष्णवी को एक वैष्णवी में परिवर्तित करती हूँ और फिर क्या हश्र करती हूँ "और इतना बोल कर वो गुस्से से अपने दांत किटकिटाते हुए आंख बंद कर के मन में कोई मन्त्र बुदबुदाने लगी। कुछ क्षण ऐसे ही मन्त्र पढ़ने के बाद उसने अपनी आंख खोलकर उन दसों वैष्णवी की ओर एक ज़ोर से फूंक मार दी, उसके ऐसा करते ही एक मोटी सी रस्सी पता नहीं कहाँ से आकर उन दसों से लिपट गई और धीरे धीरे कसने लगी, उस अभिमंत्रित रस्सी की पकड़ इतनी शक्तिशाली थी कि वे दसों वैष्णवी रस्सी के घेरे में कसती जा रही थीं... उन्हें देख कर लग रहा था कि यदि उन्होंने शीघ्र ही कुछ ना किया तो वे सब उस रस्सी के घेरे की पकड़ के कारण काल के पंजे से बच नहीं

पायेंगी। कुछ क्षण वे इसी तरह उस घेरे की पकड़ में कसमसाती रहीं और फिर उन सभी ने एक साथ अपनी आंखें बंद कर के मन्त्र पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें मन्त्र पढ़ते हुए अभी अधिक समय नहीं बीता होगा कि उस रस्सी में एकाएक अग्नि जल उठी और कुछ ही पलों में वो राख हो कर धरती पर गिर पड़ी।

शम्भाला अपने वार को यूं खाली जाता देखकर बुरी तरह छटपटाई और फिर उसने हाँथ में पकड़े गँड़ासे को उन दसों की ओर उछालते हुए कोई मन्त्र बुदबुदाया। उसके ऐसा करते ही वो गंडासा एक से दस गंडासों में परिवर्तित हो कर उन दसों की गर्दन की ओर तेज़ी से बढ़ चला।

अपनी ओर उन गंडासों को बढ़ता देखकर वे सब फिर से अपनी आंखें बंद कर के शम्भाला के मन्त्र को निष्क्रिय करने के लिए कोई काट मन्त्र पढ़ने लगीं। अभी वे मन्त्र पढ़ ही रहीं थीं कि वे सारे गँड़ासे जो उनकी ओर बढ़ रहे थे वे अपनी दिशा बदल कर वापस शम्भाला की ओर बढ़ने लगे... अब उन गंडासों का लक्ष्य वैष्णवी की गर्दन ना हो कर शम्भाला की गर्दन थी।

अपने ही हथियार को अपनी ओर बढ़ता देख कर शम्भाला के चेहरे पर डर और क्रोध के भाव एक साथ उभर आये.. लेकिन उसने शीघ्र ही डर के भावों पर काबू पा लिया और फिर से कोई मन्त्र पढ़ने लगी। उसके मन्त्र का ये प्रभाव रहा कि उसकी ओर बढ़ते वे दस गँड़ासे एक गँड़ासे में परिवर्तित हो गया और वापस उसके हाँथ में आ गया ठीक उसी तरह जैसे कोई पालतू पशु अपने मालिक के पास आता है।

इतना सब होने के बाद शम्भाला समझ चुकी थी कि जिसे वो बालक समझ रही थी वो किसी भी मायने में एक सिद्ध तांत्रिक से कम नहीं थी। उसे कमज़ोर समझ कर उसने बहुत बड़ी भूल की थी। उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था कि अब इसे कमज़ोर ना समझ कर एक शक्तिशाली शत्रु के रूप में देखना होगा और इसके साथ उसी तरह से निपटना होगा। शम्भाला अभी वैष्णवी के बारे में ये सब सोच ही रही थी कि तभी उसकी दृष्टि सामने उन दसों की ओर गई.. वहाँ उनका वो रूप देखकर शम्भाला जैसी पिशाचनी की आत्मा भी डर

के मारे सफेद हो गई। उसे अपने सामने वैष्णवी साक्षात माँ दुर्गा के रूप में दिखाई दे रही थी।

शम्भाला का डर कहीं से भी अनुचित नहीं था। उसके सामने खड़ी वे दस की दस वैष्णवी माँ दुर्गा के अस्त्र शस्त्र से सुशोभित दिख रही थीं, किसी के हाँथ में तलवार तो किसी के हाँथ में त्रिशूल, तो किसी के हाँथ में चक्र तो किसी के हाँथ में गदा। देवी माँ के वे सभी अस्त्र शस्त्र उन दसों के हाँथ में देख कर ही शम्भाला की वो हालत हुई थी, उसे देख कर यही लग रहा था जैसे स्वयं देवी माँ उससे युद्ध करने वहां आ गई हों।

उन दस वैष्णवी में से एक अपना त्रिशूल उठा कर शम्भाला का अंत करने के लिए अभी उसकी ओर फेंकने ही जा रही थी कि तभी उन्हें आश्रम के मुख्य द्वार से कुलगुरु की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने वहीं से बड़ी जोर से चिल्ला कर वैष्णवी से कहा "बेटी बिल्कुल भी विलम्ब मत कर, इस पिशाचनी को इसके किये की सज़ा शीघ्र दे दे, इसको अतिशीघ्र अग्नि की ज्वाला में भष्म कर दे "

अभी वैष्णवी कुलगुरु की बात सुनकर कुछ कर पाती की तभी उसे उस पिशाचनी शम्भाला की आवाज़ सुनाई दी जो कि जहाँ कुलगुरु खड़े थे उस दिशा से आ रही थी।

वैष्णवी ने चौंककर उस ओर देखा तो शम्भाला अपना गंडासा कुलगुरु की गर्दन पर रखकर फुफकारते हुए बोल रही थी "वैष्णवी यदि तूने मेरी बात नहीं मानी तो मैं तेरे इस कुलगुरु की गर्दन धड़ से अलग कर दूंगी, इसलिए तेरी और तेरे इस कुलगुरु की भलाई इसी में है कि तू चुपचाप मेरी बात मान ले, सबसे पहले तू अपने एक रूप में आ जा और फिर बिना विलम्ब किये उस हवन कुंड के पास पहुंच कर आसन पर बैठ जा... मैं आज तेरी बलि देकर रहूंगी.. शुभ मुहूर्त निकट ही है और ध्यान रख यदि तूने कोई भी चतुराई दिखाई तो मैं तेरे कुलगुरु को जीवित नहीं छोडूंगी "

कुलगुरु को उस पिशाचनी के चंगुल में फंसा देख कर उन सभी दसों के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं, उन में से एक वैष्णवी का हाँथ अब भी त्रिशूल हवा में उठाए हुए था, उस वैष्णवी के मन में आया कि इसके एक वार से उस पिशाचनी का सर धड़ से अलग कर दे

लेकिन वो कुलगुरु को अपने एकदम सामने करके ढाल बना कर खड़ी थी इसलिए वैष्णवी का कोई भी प्रहार कुलगुरु का अहित कर सकता था। कुछ क्षण इसी उहापोह में व्यतीत करने के बाद उसने निर्णय ले लिया और फिर अपना चेहरा कठोर करके हाँथ में पकड़े त्रिशूल को लक्ष्य की ओर फेंक दिया।

त्रिशूल बिजली की गति से आगे की ओर बढ़ा और अपने लक्ष्य से भटक कर कुलगुरु की गर्दन को धड़ से अलग करता हुआ वापस वैष्णवी के हाँथों में आ गया।

अब वहाँ धरती पर कुलगुरु का गर्दन विहीन धड़ पड़ा छटपटा रहा था और शम्भाला आंखे फाड़े उस तड़पते शव को देख रही थी। कुलगुरु की मृत्यु ने उसकी योजना पर पानी जो फेर दिया था। वो अचंभित सी अभी सोच ही रही थी कि उस शक्तिशाली वैष्णवी से कैसे निपटा जाए कि तभी उसे उन दसों वैष्णवी के ज़ोर ज़ोर से अट्टहास लगाने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

अपने कुलगुरु की मृत्यु पर उसे अट्टहास लगाते देख उस पिशाचनी की इकलौती आँख डर और आश्चर्य से फैलती जा रही थी।

कुलगुरु का सिरविहीन धड़ कुछ देर तड़प कर शांत हो चुका था और साथ ही शम्भाला का वो विचार भी जिसकी सहायता से वो वैष्णवी को अपने वश में करने की सोच रही थी।

कुछ क्षण आँखे फाड़े आश्चर्यचकित हो वो कुलगुरु के शव को देखती रही और फिर क्रोध में फुँफकारते हुए वैष्णवी से बोली "अरे नराधम... कैसी शिष्या है तू ? तूने अपने कुलगुरु का ही वध कर दिया ? तनिक भी लज्जा नहीं आई ?? अरे कृतघ्न... कम से कम ये ही सोच लेती की इसी कुलगुरु ने तुझे शिक्षा दीक्षा दे कर इस योग्य बनाया था की तुझ जैसी तुच्छ साधारण कन्या मेरे सामने युद्ध में खड़ी हो पा रही है... और तूने उनके सारे उपकारों को भूल उनका ही वध कर दिया ?? अरे पापिन.. तुझे तो इस महापाप के कारण नर्क में भी स्थान नहीं मिलेगा। "

"हा... हा.. हा.. स्वर्ग नर्क की बातें तेरे मुँह से शोभा नहीं देतीं ऐ चंडालनी... क्योंकि तेरे लिए तो मैंने नर्क से भी बुरे स्थान का चयन किया हुआ है जहाँ पर मैं तुझे कुछ क्षण पश्चात भेज दूंगी। बस उससे पहले मैं कुछ क्षण तेरे मायावी करतब देख कर आनंद तो उठा लूँ... ठीक वैसे ही जैसे कि कुछ क्षण पहले मैंने तेरी कुलगुरु वाली करामात का आनंद उठाया था.. और फिर उसके बाद मैं तुझे कष्टरहित नर्क यात्रा पर भेज दूंगी। "उन दसों वैष्णवी के मुँह से एक ज़ोरदार अट्टहास के साथ वो गूंजती हुई ध्वनि शम्भाला के कानों में पिघलते हुए शीशे की तरह घुस रही थी।

"क.. क.. क्या तात्पर्य है तेरे कहने का ?? "ये वाक्य बोलते समय शम्भाला की जिव्हा तालु से जा चिपकी और उसकी इकलौती वो भयानक आँख भयमिश्रित आश्चर्य से और भी अधिक फैल गई।

"अरे दुष्टा.. मेरे कहने का तात्पर्य तू अच्छी तरह समझ चुकी है, मैं कुलगुरु की तरह सीधी सरल नहीं हूँ जिन्हें तूने अपनी मायावी शक्तियों से मूर्ख बना दिया था... मैं वैष्णवी हूँ.. वो वैष्णवी जो तेरे हर उस षड्यंत्र को पहले ही भांप लेती है। मैं तेरी ये कुलगुरु वाली चाल को पहले ही भांप गई थी कि ये मेरे वास्तविक कुलगुरु ना होकर अपितु तेरे द्वारा रचित एक माया है... और तू उसी माया को अपनी ढाल बना कर मुझे इस युद्ध में पराजित करना चाह रही थी। जिस क्षण तू मुझे अपने मायावी कुलगुरु की आड़ लेकर धमका रही थी उसी क्षण मैंने अपने कुलगुरु से मानसिक सम्पर्क स्थापित कर लिया था और ये जान लिया था कि ये तेरी कोई मायावी चाल है, इसीलिए मैं तेरी मायावी चाल के झांसे में नहीं आई। "उन दसों वैष्णवी के मुँह से निकले वे शब्द शम्भाला को ऐसे लगे जैसे उन्होंने वे विष में डुबो कर उसके मुख पर फेंक दिए हों।

"तनिक ठहर... अभी मैं तुझे मज़ा चखाती हूँ, बहुत सह लिया मैंने अपना अपमान... देख अब मैं एक एक कर के कैसे तुम सब का घमंड चूर करती हूँ "क्रोध में फुँफकारते हुए शम्भाला उन दसों वैष्णवी से बोली और फिर वो एकाएक धुंए की आकृति में परिवर्तित होने लगी।

कुछ पल में ही वो पूरी तरह धुंवे में परिवर्तित हो चुकी थी और फिर वो उन दसों वैष्णवी में से एक वैष्णवी की ओर तेज़ी से झपट पड़ी।

और उधर वे दसों वैष्णवी शम्भाला को धुंवे की आकृति में परिवर्तित होते और अपनी ओर झपटता देख कर भी बिना विचलित हुए मंद मंद मुस्कुरा रहीं थीं... जैसे उनके लिए शम्भाला का ये भी कोई नया करतब था।

और इधर शम्भाला के लिए उनका यूं मुस्कुराना आग में घी डालने जैसा था, वो और भी ज्यादा क्रोध की अग्नि में जलते हुए उन वैष्णवी में से एक पर झपट पड़ी।

शम्भाला बिल्कुल उसी तरह से उस वैष्णवी पर झपटी थी जैसे उसने शेर सिंह का अंत किया था, वो उसी तरह उस वैष्णवी के शरीर के अंदर प्रवेश कर गई और उसी तरह से उसके शरीर के अंदरूनी भागों को छिन्न भिन्न करने का प्रयास करने लगी।

अभी वो उस वैष्णवी के शरीर को कुछ हानि पहुंचा ही पाती की तभी अचानक उसे एक तीव्र झटका लगा और उसने अपने आप को एक पांच वर्ष की बालिका के सम्मुख बैठा पाया।

उस पाँच वर्ष की बालिका के ठीक सामने एक हवनकुंड प्रज्वलित था। वो ध्यानस्थ हो कर कोई मन्त्र पढ़ते हुए उस हवनकुंड में समिधा डाल रही थी।

शम्भाला अपनी इकलौती आँख को फाड़े उस अप्रत्याशित दृश्य को देख रही थी। उसने अपनी इकलौती आँख को हथेली से मसलते हुए देखा तो उसने खुद को अपनी उसी गुफा में पाया जिसमें उसने सैकड़ों निर्दोषों की बलि दी थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो वैष्णवी के शरीर के अंदर न हो कर अपनी उस गुफा में कैसे पहुंच गई ? और ये छोटी सी बालिका इस गुफा में कहाँ से आ गई ? और ये है कौन?

शम्भाला अभी आश्चर्य के सागर में गोते लगा ही रही थी कि तभी उसे उस बालिका की आवाज़ सुनाई दी। उसकी आवाज़ सुनकर शम्भाला की इकलौती आँख आश्चर्य से और भी ज्यादा फैल गई।

वो आवाज़ वैष्णवी की थी जो कि उस पाँच वर्षीय बालिका के मुख से निकल रही थी।

"स्वागत है शम्भाला, हम सब बीते बीस वर्षों से तेरी यहां प्रतीक्षा कर रहे थे कि तू यहाँ आएगी और हम सब मिलकर तुझे नर्क से भी बुरे स्थान पर भेजेंगे। अब वो समय आ गया है जब तुझे उचित स्थान पर भेज कर इस पृथ्वी को तुझ जैसी आतिताई से मुक्ति दे दी जाए। "उस बालिका वैष्णवी ने मन्द मन्द मुस्कुराते हुए शम्भाला की ओर देखते हुए बोला।

और इतना बोलते ही बालिका वैष्णवी के शरीर से एक एक कर के उसी की आयु की दस और कन्यायें वहां पर प्रकट हो गईं। उन सभी ने वैष्णवी को श्रद्धा पूर्वक प्रणाम किया और उसी के पास पंक्तिबद्ध हो कर बैठ गईं। उनके वहाँ बैठते ही उन सभी के सम्मुख अग्नि से प्रज्वलित हवनकुंड अपने आप प्रकट हो गए और वे सभी ध्यानस्थ हो कर मंत्रोच्चारण करते हुए उस हवनकुंड में समिधा डालने लगीं।

अब वहां उस गुफा में बालिका वैष्णवी के साथ साथ उसी की आयुवर्ग की दस बालिका और उपस्थित थीं।

शम्भाला.... अंधेरी दुनिया की स्वामिनी, जिससे स्वयं अंधकार डर कर छिप जाता हो, वो वहाँ का दृश्य देखकर स्वयं डर कर सहम गई थी। उसकी खौफ़ से इकलौती आँख तब और फैलती चली गईं जब उसने उन दस अबोध कन्याओं को पहचाना।

वे और कोई नहीं थीं, वे सब वही थीं जिनकी शम्भाला ने अपने हाथों से तब बलि दी थी जब वो ठाकुर वीर प्रताप की अबोध पुत्री वैष्णवी की भी बलि देने जा रही थी और ठाकुर की हिम्मत और बुद्धिमत्ता के कारण नहीं दे पाई थी।

किसी भी योद्धा के लिए उस युद्ध को जीतने के लिए आवश्यक होता है कि वह योद्धा मानसिक रूप से शक्तिशाली और दृढ़इच्छाशक्ति का स्वामी हो।

और वैष्णवी ने शम्भाला की उसी मानसिक शक्ति और दृढ़ता पर एक शक्तिशाली प्रहार कर दिया था... उसे उस काल में ला कर। वो न सिर्फ उसे उस काल में ले आई थी अपितु उसे उसके पाप कर्मों के बीच ला कर बिठा दिया था जिनके कारण वो न चाहते हुए भी एक अपराध बोध में घिर गई थी जिसके कारण शम्भाला की बुद्धि विवेक ने उसका साथ छोड़ दिया था।

शम्भाला अभी वैष्णवी द्वारा दिये हुए झटकों से सम्भल भी नहीं पाई थी कि एकाएक वहाँ घटी नई घटना ने उसे एक और झटका दिया।

वहाँ बैठी ध्यानस्थ कन्याओं जिनमें की वैष्णवी भी थी के सामने स्थित हवनकुण्डों के आकार एकाएक परिवर्तित होने लगे। चौकोर हवनकुंड स्वास्तिक के आकार में परिवर्तित

हो चुके थे। ठीक वैसे ही जैसे कि शम्भाला के माथे पर स्थित स्वास्तिक का चिन्ह।

शम्भाला.... काली दुनिया की स्वामिनी, हवनकुण्डों के परिवर्तित आकारों का अर्थ अच्छी तरह समझ रही थी और इसीलिए अब उसकी इकलौती आंख केवल डर से फैल नहीं रही थी अपितु उसमें मृत्यु का वास हो रहा था। वो समझ चुकी थी कि उसकी वास्तविक मृत्यु निकट ही है। वो समझ चुकी थी कि यदि उसने शीघ्र ही कुछ न किया तो वो बच नहीं पाएगी क्योंकि जैसे ही उन कन्याओं ने उस स्वास्तिक हवनकुंड में विशेष मन्त्रों के साथ आहुतियाँ देनी प्रारम्भ की तो वो अपने स्थान से हिल भी नहीं पाएगी और उसकी काली शक्तियां कमज़ोर पड़ जाएंगी, उनका अहित या उनकी तांत्रिक क्रिया को भंग करना तो बहुत दूर की बात होगी।

आने वाली विप्पत्ति को भांप कर उसने वहां से... वैष्णवी के शरीर से बाहर निकलने में ही अपनी भलाई समझी और फिर उसने वहां से निकलने के लिए कोई मन्त्र मन ही मन बुदबुदाना प्रारम्भ कर दिया। जैसे ही उसका वो मन्त्र पूरा हुआ उसने ये सोच कर अपनी इकलौती आंख खोली की वो वहां से बाहर आ गई होगी लेकिन उसे तब एक भयंकर झटका लगा जब उसने अपने आप को उसी स्थान पर पाया।

अभी वो अपनी मन्त्र शक्ति के विफल होने पर विस्मित हो ही रही थी कि तभी उसे अपने कानों के पास एक स्वर की फुसफुसाहट सुनाई दी।

"शम्भाला तू यहां आई तो अपनी इच्छा से थी लेकिन जाएगी हमारी इच्छा से ही, क्योंकि ये औरों की तरह एक अशक्त शरीर नहीं है जिनको तूने अपने इस कुकृत्य से मृत्युलोक भेजा था। मैं वैष्णवी हूँ... वो वैष्णवी जो तुझ से आज सदैव के लिए मानवजाति को मुक्ति दिलवाएगी। "

बड़ी ही भयंकर भूल हुई थी शम्भाला से जो वो वैष्णवी को एक साधारण कन्या समझ कर उसके शरीर में प्रवेश कर गई थी, उसे क्या पता था कि वो काल की भूलभुलैया में प्रवेश कर रही हैं जहाँ से सिर्फ उसका काल ही उसे बाहर निकाल सकता है। वो वैष्णवी के चक्रव्यूह में आकर स्वंय ही फंस गई थी।

उसके कान में चेतावनी दे कर वैष्णवी उन नन्ही बालिकाओं के साथ अपनी मन्त्र क्रियाओं में फिर से व्यस्त हो गई।

उन सभी को पुनः ध्यानस्थ देख कर शम्भाला ने अपने आप को बचाने का अंतिम प्रयास किया, उसके मन में फिर से एक भयानक विचार अंगड़ाई लेने लगा। उसने वहां पर फिर से

इतिहास दोहराने का प्रयास किया। उसने वहां हवनकुंड के पास रखे अपने उसी गँड़ासे को उठाने का प्रयास किया जिससे वह पहले भी कई निर्दोषों का रक्त बहा चुकी थी और साथ ही उन अबोध बालिकाओं का भी।

उसने आगे बढ़ कर अपने गँड़ासे को उठाने का प्रयास किया ही था कि एकाएक उसे स्पर्श करते ही उसके मुँख से एक भयानक चीत्कार निकल गई, उसका वो अधजला अपवित्र शरीर जल उठा। अब तड़पते हुए उसे पता चल रहा था कि उसका आज्ञाकारी गंडासा वैष्णवी के मन्त्रों से अभिमंत्रित था। अग्नि की तपिश में उसे समझ आ रहा था कि वहाँ की प्रत्येक वस्तु अब उसकी न होकर उस वैष्णवी के अधिकार क्षेत्र में थी, यहां तक कि शायद वो भी।

"शम्भाला तुझे अभी तक समझ में नहीं आया कि तेरा खेल अब समाप्त हो चुका है, तू अब इस अग्नि में तड़पते हुए बस अपने अंत की प्रतीक्षा कर... मैं तुझे वादा करती हूँ कि शीघ्र ही तुझे तेरे उस स्थान पर पहुंचा दूंगी जहां से तू कभी भी वापस नहीं आ सकेगी। "वैष्णवी का स्वर फिर से उसके कान में फुसफुसाया। शम्भाला ने चकित हो कर वैष्णवी की ओर देखा तो पाया कि वो पहले की तरह ही ध्यानस्थ थी।

शम्भाला अग्नि में घिरी तड़पते हुए अपनी ओर बढ़ते अपने अंत को अनुभव कर पा रही थी और सम्भवतः इसी कारण उसके अंदर छटपटाहट बढ़ती ही जा रही थी।

पानी में डूब रहा मनुष्य अपना जीवन बचाने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है फिर शम्भाला तो इंसान न हो कर एक दुष्टात्मा थी जो कि अपने आप को महाशक्तिशाली बनाने और सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज करने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए इतने वर्ष की प्रतीक्षा और इतने लोगों की बलि देने के बाद इस पड़ाव तक पहुंची थी जिसे की वैष्णवी अपने तपोबल से नष्ट किये दे रही थी और न केवल वो उसका उद्देश्य नष्ट कर रही थी अपितु वो उसे ऐसे स्थान पर भेजने वाली थी जहाँ उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

यही सब सोच कर शम्भाला ने अपनी समस्त शक्तियों को अपनी मानसिक इच्छाशक्ति से अपने अंदर इकट्ठा करना प्रारम्भ कर दिया। वो अपनी समस्त शक्तियों को अपने मस्तक पर बने स्वास्तिक के चिन्ह के अंदर समाहित करने लगी। कुछ क्षण पश्चात उसके मस्तक पर बना वो स्वास्तिक एक असीम ऊर्जा का केंद्र नज़र आ रहा था, वो ऐसे दिख रहा था जैसे वहाँ कई सूर्य उदय हो रहे हों। अब शम्भाला के उस वीभस्त चेहरे पर बस वो असीम ऊर्जा का पुंज ही दमक रहा था, उस ऊर्जा पुंज का ताप आसपास अनुभव किया जा सकता था।

शम्भाला ने अपनी वो इकलौती आँख बंद कर के अपना समस्त ध्यान अपने मस्तक पर स्थित उस ऊर्जा पुंज के केन्द्र पर केंद्रित किया और फिर बन्द आँख से ही उसने अपने सामने ध्यानस्थ बालिकाओं जिनमें की वैष्णवी भी थी कि ओर उस ऊर्जा पुंज से उन्हें एक साथ भस्म करने के लिए प्रेसित कर दिया। उस ऊर्जा पुंज से कई ऊर्जा किरणें निकल कर सामने बैठी अबोध बालिकाओं को भस्म करने के लिए उनकी ओर बढ़ चलीं।

वे असीम ऊर्जा की किरणें उन अबोधों को भस्म करने के लिए उनकी ओर काल के रूप में बढ़ रही थीं और वे अनभिज्ञ हो कर पहले की तरह अपनी तांत्रिक क्रियाओं में व्यस्त थीं।

इस बीच ये अवश्य हुआ कि उन सभी अबोध बालिकाओं के मन्त्र उच्चारण की ध्वनि और भी तीव्र हो गई और साथ ही सभी के मन्त्रों की लय भी एक समान हो गई और साथ ही हवनकुंड में समिधा डालने का समय भी।

जैसे ही शम्भाला की भेजी वो ऊर्जा की किरणें उन अबोधों को भस्म करने के लिए उनके शरीर को छूने ही वाली थीं कि तभी वैष्णवी समेत उन सभी ने अपनी दाईं हथेली उस ऊर्जा की किरण के सामने कर दी और फिर वहां पर एक आश्चर्यजनक घटना घटी, वे किरणें उनकी हथेलियों से टकरा कर बगैर उन्हें कोई हानि पहुंचाए सीधी उनके सामने स्थित स्वास्तिक के हवनकुण्डों में जा कर समाहित होने लगीं। उन सभी हवनकुण्डों की अग्नि की ज्वाला और अधिक तीव्रता से भभकने लगीं जैसे उन्हें और भी अधिक शक्ति प्राप्त हो रही हो।

इधर वो ऊर्जा की किरणें उन स्वास्तिक के हवनकुण्डों में समाहित होनी प्रारम्भ हुईं और इधर अपनी एक इकलौती आंख बंद किये हुए शम्भाला को ऐसा लगा जैसे कोई धीरे धीरे उसकी शक्ति उसके अंदर से खींच रहा हो। उसने घबराकर अपनी वो इकलौती आँख खोल दी। सामने का दृश्य देखकर उसकी घिग्गी बंध गई। उसकी कई वर्षों के अथक परिश्रम से इकट्ठी की हुई उसकी काली शक्तियां उन स्वास्तिक के हवनकुण्डों में समाहित हो रही थीं और उसे शक्तिविहीन किये दे रही थीं। उसने बहुतेरा प्रयत्न किया कि वो ऊर्जा की किरणें उन हवनकुण्डों में समाहित होने से रुक जाएं परन्तु उसका वो हर प्रयास विफल रहा। वे ऊर्जा की किरणें अनवरत हवनकुण्डों में समाहित होती रहीं।

शम्भाला का अंत निकट ही था, शक्तिविहीन शम्भाला एक चींटी समान थी जिसे कुचलना वैष्णवी के लिए बच्चों का खेल था।

शम्भाला ने तीव्र स्वर में चीखना चाहा लेकिन उसके मुख से स्वर बाहर ही नहीं निकल पाए, उसने आगे बढ़ कर अपने हाथों से उनकी तांत्रिक क्रियाओं को भंग करना चाहा

लेकिन वो अपने स्थान से हिल भी नहीं पाई। वो अपने उस स्थान पर जड़ हो चुकी थी एक पत्थर की शिला की तरह। वो अपने आप को बेहद निर्बल अनुभव कर रही थी। अब उसकी स्थिति उस व्यक्ति के समान थी जो केवल खड़ा हो कर अपने अंत को आते हुए देख तो सकता था पर कर कुछ नहीं सकता था, वैष्णवी ने उसे असहाय कर दिया था।

वैष्णवी और वो बालिकाएं अब भी उसी प्रकार हवनकुण्डों में समिधा डाल रहीं थीं बगैर शम्भाला की ओर ध्यान दिए।

और फिर कुछ समय पश्चात, शम्भाला की समस्त काली शक्तियां उन स्वास्तिक के हवनकुण्डों में समाहित हो चुकी थीं।

अब वहाँ पर जो शम्भाला उपस्थित थी वो किसी भी मायने में उस शम्भाला के आसपास भी नहीं ठहरती थी जिसके नाम मात्र से लोगों के मन में भय का वास हो जाता था। वहाँ पर एक दीनहीन सी कमज़ोर कृशकाय शम्भाला उपस्थित थी, ऐसी की जिससे कोई बालक भी न डरे।

वैष्णवी और उन अबोध बालिकाओं का कार्य सम्पूर्ण हो चुका था इसलिए उन्होंने उन हवनकुण्डों में मन्त्र का अंतिम चरण पूर्ण करते हुए समिधा डालते हुए अपनी आंखें खोल दीं।

सामने शक्तिहीन शम्भाला पत्थर की मूर्ति बनी खड़ी थी, उसकी इकलौती आँख से भय टपक रहा था।

"शम्भाला... देख अपनी दशा, तू वही शक्तिशाली शम्भाला है न जिसकी कल्पना मात्र से गांव नगर इत्यादि सुनसान हो जाया करते थे और अब तेरी स्थिति ऐसी है कि तुझसे कोई बालक भी न डरे। अब तेरा अंत ये बालिकाएं करेंगी जिन्हें तेरी अतिमहत्वाकांक्षा ने सम्पूर्ण जीवन जीने से वंचित कर दिया था। तूने बड़ी ही निर्दयता से इन्हें तड़पा तड़पा कर मारा था न, अब ये भी तुझे उसी प्रकार गति प्रदान करेगी, तुझे तेरे उचित स्थान पर पहुंचा कर इनकी भी आत्माओं को मुक्ति मिल जाएगी जो कि तभी से तड़प रही थीं। "वैष्णवी ने क्रोध में अपनी लाल लाल आँखों से उसे घूरते हुए उसे कहा और फिर उन बालिकाओं की ओर देखते हुए उन्हें शम्भाला को उचित दण्ड देने के लिए संकेत किया।

वैष्णवी का संकेत पाते ही वे दसों बालिकाएं भूखी शेरनी की तरह हाँथ में गंडासा ले कर शम्भाला पर टूट पड़ीं।

वे शम्भाला पर उसी तरह प्रहार कर रही थीं जैसे कि वो स्वयं अपने शत्रुओं पर करती आई थी। एक बालिका उसके मस्तक पर बने स्वास्तिक के चिन्ह को चाकू की धार से कुरेदने लगी तो दूसरी हाँथ में पकड़े गँड़ासे से शम्भाला की हथेली के पंजों को एक एक कर के काट काट कर अलग करने लगी, इसी प्रकार वे दसों अबोध बालिकाएं शम्भाला के अपवित्र शरीर को अपने तरीके से यातनाएं दे रही थीं।

अब वहां पर उस गुफा में शम्भाला की दर्दनाक चीत्कारों के अतिरिक्त कुछ और सुनाई नहीं दे रहा था।

और वैष्णवी.... दूर खड़ी हो कर मन्द मन्द मुस्काते हुए उस दृश्य को देख रही थी, उसके चेहरे और आँखों में इस समय स्पष्ट रूप से संतोष देखा जा सकता था। आखिरकार शम्भाला का अंत किसे नहीं अच्छा लगता ?

कुछ क्षण उस गुफा में शम्भाला की हृदयविदारक चीत्कारें गूंजती रहीं और फिर कुछ समय पश्चात वहां ऐसे शांति छा गई जैसे कि किसी निर्जन वन में शांति होती है।

अब वहां पर शम्भाला का वो वीभस्त और घृणित शरीर न हो कर राख का ढेर पड़ा था।

कुछ क्षण वहां ऐसी ही स्थिति बनी रही, फिर वहां उन बालिकाओं का समवेत स्वर सुनाई दिया, वे वैष्णवी को सम्बोधित कर रही थीं।

"माँ... आपकी कृपा से हमारी आत्माओं को आज मुक्ति मिल गई, माँ हम सभी आपके कृतज्ञ हैं। माँ अब हमें यहां से जाने की आज्ञा दीजिये "और ये बोलकर वे सभी वैष्णवी के सम्मुख अपना शीश झुकाकर करबद्ध हो गईं।

वैष्णवी ने उनकी ओर मुस्काते हुए देखा और फिर अपना दायाँ हाँथ आशीर्वाद स्वरूप ऊपर उठा कर उनकी आत्मा को परमात्मा से मिलन के लिए अग्रसर कर दिया।

"बेटी वैष्णवी, तुम ठीक तो हो न ? और वो दुष्ट शम्भाला कहाँ है ? उसने तुम्हारा कोई अहित तो नहीं कर दिया ? " कुलगुरु का उत्तेजित स्वर सुनकर वैष्णवी अपने ध्यान से बाहर आई। उसने धीरे धीरे आँखे खोली तो सामने कुलगुरु चिंतित अवस्था में खड़े थे। उनकी अवस्था देखते ही वैष्णवी समझ गई कि कुलगुरु शम्भाला के कारण इतने चिंतित हैं। उसने मन्द मन्द मुस्कुराते हुए आश्रम में घटित सारा वृतांत कुलगुरु को कह सुनाया, साथ ही कि किस तरह शम्भाला ने उसके शरीर में प्रवेश कर के उसे हानि पहुंचानी चाही

और किस तरह उसने अपने शरीर के अंदर चक्रव्यूह की रचना कर के शम्भाला को उसके स्थान पर पहुंचाया। साथ ही उन दस अबोध बालिकाओं के विषय में भी बताया कि किस तरह उन्हीं के हाथों शम्भाला का अंत करवाया और उन्हें मुक्ति दिलवाई।

वैष्णवी के मुख से ये सब सुनकर कुलगुरु कुछ क्षण तो अचंभित खड़े रह गए और फिर जैसे ही उन्हें चेतना आई वे लपक कर वैष्णवी के चरणों में गिर पड़े और अश्रुपूरित आंखों से बोले "माँ.. तुम कौन हो ? तुम मेरी वो अबोध वैष्णवी नहीं हो सकतीं जिसका लालन पालन मेरे हाँथो हुआ है, उसमें इतनी शक्ति नहीं की वो शम्भाला जैसी राक्षसनी का संहार कर सके। इसलिए हे देवी कृपा कर के मुझ तुच्छ प्राणी को अपना परिचय देने की कृपा करें। "कुलगुरु अब भी उसी तरह वैष्णवी के पैरों में लिपट कर उसके चरणों को अपने अश्रुओं से धो रहे थे।

"हे कुलगुरु... कृपया कर के आप मेरे चरणों में न पड़े, मैं हूँ तो वैष्णवी ही परन्तु मेरा जन्म इस पृथ्वी पर इस शम्भाला नामक राक्षसनी का अंत करने के लिए ही हुआ था। हे कुलगुरु... मैं काली का अंश हूँ और अब मेरा यहां का कार्य सम्पूर्ण हो चुका है इसलिए मैं अब पृथ्वी लोक से प्रस्थान करूँगी। कुलगुरु आप एक अंतिम कार्य अवश्य कर दीजियेगा, मेरे कमण्डल में जो पवित्र जल है आप उससे ठाकुर और उनके मृत पुत्रों के शरीर को धो कर अंतिम क्रिया करवा देना। चूंकि मैंने ठाकुर के घर में जन्म लिया था इसलिए मेरे हाँथो से ही उन सभी का अंतिम संस्कार होना आवश्यक था परन्तु मेरा अब इस लोक में रुक पाना असंभव है इसलिए हे श्रेष्ठ... आप मेरे द्वारा अभिमंत्रित जल द्वारा उन सभी को मुक्ति दिलवा देना। "

वैष्णवी का गूंजता स्वर सुनकर कुलगुरु ने अपना सर ऊपर उठाकर देखा तो वहां साक्षात माँ काली को खड़े देख कर वे पुनः उनके चरणों में गिर पड़े।

"माँ... मैं भी कितना बड़ा मूर्ख हूँ जो जगतजननी को न पहचान सका, माँ यदि जाने अनजाने मुझसे कोई भूल हुई हो तो मुझे क्षमा कर देना। माँ मुझ तुच्छ मनुष्य पर अपनी कृपा बनाये रखना। "कुलगुरु काली अवतार वैष्णवी के चरणों में पता नहीं क्या क्या बोले जा रहे थे और वैष्णवी मन्द मन्द मुस्काते हुए कुलगुरु को आशीर्वाद देते हुए एक प्रकाशपुंज में परिवर्तित हो रही थीं और फिर कुछ क्षण पश्चात वहां पर उस स्थान पर एक कमण्डल और कुछ पुष्प पड़े हुए थे, ठाकुर और उनके मृत पुत्रों की आत्माओं की मुक्ति के लिए।

एक करोड़ का मुर्दा

दीपक को आज ऑफिस से घर आने मे काफी देर हो गई थी, रात के लगभग दस बज चुके थे। आज उसने अपनी पत्नी सोनिया को वादा किया था की वो ऑफिस से घर जल्दी आ कर उसे बाहर डिनर पर ले जायेगा लेकिन बॉस ने उसकी प्लानिंग पर पानी फेर दिया था उसे एक्स्ट्रा काम बता कर, इसीलिए वो जानता था की सोनिया उससे नाराज़ होगी और वो चाहता था की किसी भी तरह उसकी नाराज़गी दूर करके उसे और अपनी एक साल की बेटी गुनगुन को लेकर कहीं पास ही किसी रेस्टोरेंट में डिनर के लिए ले जाए। इसीलिए वो जल्दी जल्दी कार पार्किंग में पार्क करके लिफ्ट से बिल्डिंग के सातवें फ्लोर पर अपने फ़्लैट के सामने आ खड़ा हुआ था।

बीवी के गुस्से से डरते डरते उसने अपने फ़्लैट की डोर बेल बजाई लेकिन थोडा इंतज़ार करने के बाद भी गेट नहीं खुला, उसने फिर बेल बजाई लेकिन गेट नहीं खुला, उसे लगा शायद सोनिया सच में नाराज़ है इसीलिए वो गेट नही खोल रही।

कुछ देर इंतजार करने के बाद उसने बड़े प्यार से अपनी बीवी को आवाज़ लगाते हुए उसे मनाने की कोशिश की डार्लिंग.. प्लीज गेट तो खोल दो, देखो बाबा मैंने दोनों कान पकड़ रखे हैं और वादा करता हूँ की आगे से कभी लेट नहीं आऊँगा, प्लीज यार अब तो गेट खोल दो नहीं तो मैं डुप्लीकेट चाबी से गेट खोल कर अंदर आ जाऊँगा फिर मत कहना की मैं तुमसे प्यार नहीं करता।

कुछ देर और इंतज़ार करने के बाद जब उसे लगा की सोनिया शायद आज उससे कुछ ज्यादा ही नाराज़ है और वो गेट नहीं खोलेगी तो उसने डुप्लीकेट चाभी जो कि वो अपने पास हमेशा रखता था से फ़्लैट का गेट खोल कर अंदर आ गया।

अंदर आ कर उसे झटका सा लगा क्योंकि वहा पर घुप्प अँधेरा था, किसी अनहोनी की आशंका से उसका दिल बैठने लगा क्योंकि सोनिया उससे कितनी भी नाराज़ क्यों न हुई हो लेकिन वो इस तरह सारे घर में लाइट बंद कर के कभी नही बैठी थी, वो घबराकर कमरे की लाइट ऑन करने के लिये जैसे ही आगे बढ़ा तो उसका पैर किसी चीज़ मे उलझ गया और वो धड़ाम से नीचे गिर पड़ा, हाथ मे कुछ चिपचिपा सा लग गया, उसने उठने के लिये जैसे ही हाथ आगे किया तो उसे लगा की जैसे कोई नीचे लेटा हुआ है, वो और भी ज्यादा घबरा गया और हड़बड़ा कर तेजी से उठा और अंदाज़े से स्विच बोर्ड की तरफ बढ़ गया।

स्विच बोर्ड के पास जा कर उसने जैसे ही लाइट ऑन की तो सामने का द्रश्य देख कर उसके होश ही उड़ गये।

सामने उसकी बीवी सोनिया की लाश पड़ी थी, किसी ने उसकी गर्दन धारदार चाकू से बड़ी ही बेरहमी से काट दी थी। सारे कमरे मे खून फैला हुआ था और वही खून दीपक के हाथों और कपड़ों पर भी लग गया था।

थोड़ी देर तक वो वैसे ही बदहवास सा खड़ा रहा फिर एकाएक उसे अपनी एक साल की बेटी गुनगुन का ख्याल आया जो की उस कमरे मे नहीं थी।
वो दौड़ कर दूसरे कमरे मे पहुँचा और सामने का द्रश्य देख कर वो जोर जोर से चीखने चिल्लाने लगा, सामने उसकी वो मासूम नन्ही परी भी मरी पड़ी थी जो उसकी जान थी, उस बेचारी को भी उस दरिन्दे ने बड़ी ही बेरहमी से चाकुओं से गोद दिया था।
वो बेसुध हो कर वहीँ ज़मीन पर गिर पड़ा, उस बेचारे की तो सारी दुनिया ही उजड़ चुकी थी।
उसकी चीख सुनकर उसके पडोसी भी वहां फ़्लैट पर आ गये और वहाँ का भयानक द्रश्य देख कर उनका कलेजा भी मुँह को आ गया।
पडोसी शर्मा जी दीपक को ढूँढ़ते हुए दूसरे कमरे में पहुंचे तो वहां उस मासूम की क्षत विक्षत लाश देख कर उन्हें भी चक्कर आ गया. कुछ देर लगी उन्हें अपने आप को सँभालने में और फिर उन्होंने बेसुध पड़े दीपक के मुंह पर पानी के छींटे मारे, कुछ देर बाद दीपक ने आँखें खोल दी और जैसे ही उसे अपनी दुनिया उजड़ने का ख्याल आया वो फूट फूट कर रोने लगा. शर्मा जी ने बड़ी कोशिश की उसे सँभालने की लेकिन वो वैसे ही रोता रहा।
तभी थोड़ी देर बाद पुलिस भी वहाँ आ गई शायद पड़ोसियों मे से किसी ने पुलिस को सूचना दे दी थी।
पुलिस ने वहाँ पर आकर सबसे पहले तो वो फ़्लैट लोगों से खाली करवा लिया सिर्फ दीपक को छोड़कर, और फिर अपनी तहकीकात शुरू कर दी।
फिंगरप्रिंट वाले और फोटोग्राफर भी थोड़ी देर बाद वहां आ गये और अपने काम पर लग गये।
केस इंचार्ज इंस्पेक्टर त्यागी था… रविन्द्र त्यागी, अपने महकमे में सबसे तेज़ तर्रार और कड़क। उसने बारीकी से मौकाए वारदात का मुआयना शुरू कर दिया। त्यागी की आँखें उन कमरों में सबूत को ऐसे ढूंढने लगीं जैसे चील मांस का टुकड़ा। काफी देर तक ढूंढने के बाद भी त्यागी के हाँथ कुछ खास नहीं लगा जिससे वो किसी नतीजे पर पहुंचता।
कोई महत्वपूर्ण सबूत हाँथ न लगने पर त्यागी की निगाह दीपक पर गई जो अब भी कोने में खड़ा सुबक रहा था, त्यागी को उसकी हालत देख कर उस पर थोड़ा तरस आया जो कि उसके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था क्योंकि वो ऑन ड्यूटी इमोशन्स को किसी अलमारी के लॉकर में रखना पसंद करता था, उसका मानना था कि कोई भी केस दिमाग से सॉल्व होता है न की दिल से। लेकिन आज पता नहीं वो कैसे दीपक से सहानुभूति महसूस कर रहा था ? शायद उसकी एक साल की बेटी के खोने की वजह से।
लेकिन उसे उस केस को सॉल्व भी करना था इसीलिए उसने दीपक की हालत को नजरअंदाज करते हुए उसे सामने पड़े सोफे पर बैठने का इशारा किया और फिर उससे

सवाल पूँछने लगा।
"देखो मुझे पता है कि तुम्हारी मनोदशा अभी बात करने के लायक नहीं है लेकिन हमारी भी मज़बूरी है और वैसे भी ये मर्डर केस है और वो भी दो दो मर्डर्स का, हम लोगों पर मीडिया और अपने सीनियर्स का काफी प्रेसर रहता है जल्दी से जल्दी केस सॉल्व करने के लिए... इसीलिए मैं चाह कर भी तुम्हारे साथ सिमपेथी नहीं दिखा सकता। अच्छा तो दीपक मुझे तुम शुरू से सब कुछ बताओ की तुम बन्द दरवाज़े से अंदर कैसे पहुंचे ? और फिर जब तुम यहाँ पर आए तो तुमने क्या देखा ? "
"सर.. मैं जब पार्किंग में कार पार्क करके यहाँ अपने फ़्लैट पर पहुंचा तो गेट अंदर से बंद था, मैने कई बार डोरबेल बजाई और जब काफी देर तक भी नहीं खुला तो मैंने अपने पास रखी गेट की डुप्लीकेट चाबी से गेट खोल कर अंदर पहुंचा "और उसके बाद दीपक ने भर्राए गले से त्यागी को वो सब कुछ बता दिया जो उसने देखा था।
"तुम अमूमन इतने बजे ही ऑफिस से घर आते हो ? "
"नहीं सर... रोजाना मैं लगभग सात बजे तक आ जाता हूँ बस आज ही बॉस ने कुछ एक्स्ट्रा काम बता दिया था जिसके कारण मैं लेट हो गया "दीपक की आवाज़ में अब भी भारीपन था।
"अच्छा तुम्हारी या तुम्हारी वाइफ की किसी से कोई दुश्मनी तो नहीं थी ? "त्यागी ने उसकी आँखों में घूरते हुए पूंछा जैसे उसकी आँखों से उसके मन में झांक लेना चाहता हो।
"नहीं सर, हम लोग एक सीधे साधे मिडल क्लास लोग हैं.. हमारी भला किसी से क्या दुश्मनी हो सकती है "
"ठीक है, तुम दोनों की शादी अरेंज मैरिज थी या फिर लव मैरिज और साथ ही तुम दोनों के आपसी रिश्ते कैसे थे ? "त्यागी ने सवाल पूंछ कर अपनी तजुर्बेकार निगाहें दीपक के चेहरे पर गड़ा दीं जैसे उसके चेहरे से ही सब कुछ पढ़ लेना चाहता हो।
"सर हमारी शादी अरेंज मैरिज थी और हमारे बीच में रिश्ते एक सामान्य पति पत्नी जैसे ही थे "
"ठीक है, अभी तो हम लोग यहाँ से जा रहे हैं जल्द ही फिर से आना पड़ेगा तहकीकात के सिलसिले में। अगर इस बीच तुम्हें कुछ नई बात पता लगे तो तुम मुझे इस नम्बर पर बता सकते हो "त्यागी ने उसे अपना विजिटिंग कार्ड थमाते हुए बोला।
और फिर अपने जूनियर आकाश वत्स को इशारा कर के कमरे के कोने में ले जाकर उससे फुसफुसा कर बोला "आकाश अभी समझ में नहीं आ रहा कि ये पूरा सच बोल रहा है या फिर आधा... अभी हम इसे ज्यादा सख्ती भी नहीं दिखा सकते, फिलहाल तुम ऐसा करो कि इसके पड़ोसियों से और बिल्डिंग के गार्ड आदि से भी इन्क्वायरी कर लेना... हो सकता है हमें वहां से कोई क्लू हाँथ लगे।और हाँ दोनों बॉडी को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा कर उन

दोनों कमरों को सील करवा देना। मैं अब थाने निकल रहा हूँ, तुम जल्दी से सारे काम निपटा कर मुझे आ कर रिपोर्ट करो... साला अब तक दो बार कप्तान साब का फोन आ गया है इस केस के सिलसिले में... वो वहां मेरा इंतज़ार कर रहे हैं केस के बारे में बात करने के लिए, उन्होंने जैसे मुझे चिराग का जिन्न समझ लिया है कि चुटकी बजाते ही मैं केस सॉल्व कर लूँगा। साला इन क्रिमनल्स के कारण अपनी पर्सनल लाइफ ही नहीं रह गई है... बच्चे भी अपने बाप को पहचानने से इंकार करने लगे हैं अब तो। "त्यागी भुनभुनाते हुए वहां से निकल गया। त्यागी के जाने के बाद आकाश ने बची हुई इन्क्वायरी शुरू कर दी। थोड़ी देर में ही उसने वहां का काम निपटा लिया और फिर कुछ देर बाद उसकी जीप थाने की ओर तेजी से भागी जा रही थी।

सब इंस्पेक्टर आकाश को त्यागी के रूम में बैठे हुए काफ़ी देर हो चुकी थी, रात के तीन बज चुके थे और उससे नींद से भारी हो चुकी पलकें खोलनी भारी पड़ रही थीं। उसने जम्हाई लेते हुए अपनी मनहूस नौकरी को मन ही मन गाली दी ही थी कि तभी त्यागी रूम में आ गया।

उसे जम्हाई लेते और नींद से लाल हो चुकी उसकी आंखों को देखते हुए वो बोला "साली बड़ी मनहूस नौकरी है हमारी, साला न दिन को चैन और न रात को आराम और ऊपर से हमारे ये सीनियर... सालों को हमारे डंडा घुसेड़ कर रखना है बस। अब कप्तान साब को कौन समझाये कि आदमी आराम नहीं कर पायेगा तो काम कैसे करेगा ? और घर आधी रात को पहुंचो तो बीवी भूखी शेरनी बन कर टूट पड़ती है। साला तंग आ गया हूँ ऐसी ज़िन्दगी से। चल यार तू बता कुछ नया पता चला या नहीं ? "

त्यागी को खुद ही अपने दुखड़े रोते देख उसकी हिम्मत नहीं हुई अपना कुछ बोलने की, उसने उसे केस की प्रोग्रेस बताना ही ठीक समझा।

"सर दीपक के पड़ोसियों से पूछताछ में कुछ खास पता नहीं चला, सब लोग यही बता रहे थे कि इन मियां बीवी के बीच रिश्ते सामान्य थे और बिल्डिंग के गार्ड भी कुछ खास नहीं बता पाए "

आकाश से सारी बात सुनने के बाद त्यागी सोच में पड़ गया और फिर उससे बोला "केस देखने में जितना आसान लग रहा था उतना आसान है नहीं, साला अब तक हमारे हाँथ कोई भी क्लू नहीं लगा है जिससे इस केस में हम आगे बढ़ सकें, अब तो पोस्टमार्टम की रिपोर्ट से ही कुछ उम्मीद की जा सकती है। उसके बाद ही आगे की कार्यवाही हो पाएगी। ठीक है तुम अब अपने घर निकलो और मैं भी निकलता हूँ शेरनी का सामना करने के लिए। लेकिन कल तुम सुबह थोड़ा जल्दी आ जाना क्योंकि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट तुम्हें ही लानी है "

आकाश त्यागी की जल्दी आने की बात सुनकर कहना तो यही चाहता था कि घर भेज ही क्यों रहे हो यहीं खटिया डलवा दो लेकिन उसके मुंह से बस इतना ही निकला पाया "जी सर "

अगले दिन सुबह ठीक दस बजे त्यागी थाने आ चुका था, लेकिन उसके जूनियर आकाश का कुछ पता नहीं था, उसके इंतजार में वो अब तक तीन चार सिगरेट धुएँ में उड़ा चुका था। उसका इंतज़ार करते हुए उसे अब एक घण्टा हो चुका था इसीलिए वो गुस्से में आकाश को मन ही मन कोई भद्दी सी गाली देने ही वाला था कि तभी आकाश ने कमरे में प्रवेश किया और उसे एक जोरदार सेल्यूट ठोंक कर उससे बोला "गुड मॉर्निंग सर "

"काहे की गुड मॉर्निंग आकाश, मैंने तुम्हें सुबह जल्दी आने को बोला था और तुम जानबूझकर लेट आ रहे हो "त्यागी की आवाज़ गुस्से में लिपटी हुई थी।

"सर मैं अपने घर से तो नौ बजे ही निकल गया था लेकिन सीधे यहां न आकर पोस्टमार्टम हाउस चला गया था ताकि जितनी जल्दी पोस्टमार्टम रिपोर्ट हाँथ आएगी उतनी जल्दी हम इस केस को सॉल्व करने के करीब पहुंच पाएंगे "आकाश ने अपने देर से आने का कारण त्यागी को कह सुनाया।

"ओह सॉरी… मैंने तुम्हें खामख्वाह डांट दिया, अच्छा बताओ क्या हुआ ? रिपोर्ट मिल गई क्या ? "

"नहीं सर, जब तक मैं वहां पर था तब तक वहां पर सीनियर डॉक्टर नहीं आया था तो मेरी जूनियर डॉक्टर से बात हुई, उसने बताया कि सीनियर डॉक्टर बारह बजे से पहले नहीं आने वाले और वैसे भी पोस्टमार्टम दो डेड बॉडी के होने हैं जिसमें की टाइम लगेगा इसलिए दोनों की रिपोर्ट या तो आज शाम तक मिलेंगी नहीं तो कल दोपहर तक "

"साला इन पोस्टमॉर्टम वाले डॉक्टरों के मज़े हैं जब मन में आया तब ड्यूटी बजा ली और एक हम लोग हैं जो कोल्हू के बैल की तरह पिले पड़े हैं। "त्यागी अपनी हालत पर गुस्से में बड़बड़ा रहा था।

"अब यहां बैठ कर टाइम खराब करने से तो अच्छा है कि हम लोग फिर से मौका ए वारदात पर चलें, देखें शायद वहां पर कुछ नया क्लू हाँथ लगे "

"ओके सर "आकाश चेयर से उठते हुए बोला।

कुछ देर बाद इंस्पेक्टर त्यागी अपने जूनियर सब-इंस्पेक्टर आकाश के साथ दीपक के फ़्लैट के सामने था, वो दोनों अकेले ही वहाँ आये थे, चूंकि सिर्फ़ पूछताछ ही करनी थी इसलिए ज्यादा भीड़भाड़ करना त्यागी ने ठीक नहीं समझा।

त्यागी दीपक के फ़्लैट की डोर बेल बजाने ही वाला था कि तभी उसकी निगाह फ़्लैट पर लगी सील पर पड़ी और उसे अपनी याददाश्त पर तरस आ गया, अरे वो खुद ही तो वहां सील लगा कर गया था ताकि वहां बचे हुए सबूतों से कोई छेड़छाड़ न हो सके।
दीपक के मोबाइल पर कॉल करने से पता चला कि वो अपने पड़ोसी शर्मा के फ़्लैट पर रह रहा था जो कि उसके फ़्लैट के पास ही था।
कुछ मिनटों के बाद त्यागी आकाश के साथ शर्मा के ड्राइंगरूम में बैठा था और उनके ठीक सामने दीपक।
त्यागी समय बर्बाद करने की जगह सीधे मुद्दे पर आ गया, उसने छूटते ही दीपक के सामने सवाल दाग दिया।
"दीपक जरा दिमाग पर जोर देकर याद करो कि कल पूरे दिन तुम्हारे साथ या फिर आसपास कोई भी ऐसी बात या फिर कोई घटना घटी जो जो तुम्हें अजीब सी लगी हो या फिर पहली बार हुई हो "
"नहीं सर ऐसा तो कुछ खास नहीं हुआ था कल मेरे साथ….. हां एक बात जरूर हुई थी लेकिन मुझे नहीं लगता कि ये बात आपके काम की हो सकती है "दीपक ने कुछ सोचते हुए कहा।
"ये तुम कैसे सोच सकते हो कि कौन सी बात काम की है और कौन सी नहीं ? इसलिए बगैर दिमाग चलाये तुम कल सुबह से लेकर रात कत्ल होने से पहले तक जो भी तुम्हारे साथ घटा हो और जो कल से पहले नहीं हुआ हो वो सब मुझे बताओ, हमारे लिए छोटी से छोटी बात भी मायने रखती है। "त्यागी थोड़ा उखड़ते हुए बोला।
"सर मैं ऑफिस में सामान्य दिनों की तरह ही काम कर रहा था कि तभी मेरे मोबाइल पर एक बजे के करीब किसी लैंडलाइन नम्बर से फोन आया, मैंने रिसीव किया तो उधर से कोई अनजान व्यक्ति मुझे शहर के बाहरी हिस्से में स्थित लवर्स पार्क में अकेले बुला रहा था, पहले तो मैंने साफ मना कर दिया लेकिन जब उसने मेरी बीवी सोनिया का नाम लेकर कहा कि वो उसके बारे में कुछ बताना चाहता है तो मैं वहां जाने के लिए राजी हो गया और फिर उसने मुझे वहां दोपहर में तीन बजे आने का बोल कर उसने फोन काट दिया। "दीपक एक एक बात याद करके बोल रहा था।
"फिर क्या किया तुमने ? क्या देखा वहां पर ? क्या बताया उस अनजान शख्स ने ? "त्यागी ने उत्तेजना में दीपक के आगे सवालों की झड़ी लगा दी, बड़ी मुश्किल से उसके हाँथ में कोई क्लू जो आया था।
"सर मैं उसकी बताई हुई जगह पर आधा घंटा पहले ही पहुंच गया था लेकिन वहां पर मुझे कोई भी नज़र नहीं आया, मैं उसका वहां पर दो घंटे तक इंतजार करता रहा लेकिन फिर भी

जब कोई नहीं आया तो मैं किसी का भद्दा मजाक समझ कर वापस ऑफिस आ गया। बस सर यही एक अजीब सी घटना घटी थी कल मेरे साथ। "
"तुमने आसपास ध्यान से देखा था ? क्या पता वहां कोई ऐसा शख्स रहा हो जो तुम पर निगाह रख रहा हो "त्यागी ने अभी भी उम्मीद का दामन छोड़ा नहीं था।
"नहीं सर ऐसा तो मुझे कोई भी नहीं लगा और फिर वहां पर ठीक ठाक भीड़भाड़ थी इसलिए ऐसे शख्स की पहचान कर पाना मुश्किल था। "दीपक ने निराशा में अपना सिर हिलाते हुए कहा।
त्यागी के हाँथ बड़ी मुश्किल से एक क्लू लगा था और वो भी उसके हाथों से फिसल गया था। वो सोचने लगा कि अगर सच में किसी ने उसे फोन किया था तो उसका मकसद क्या रहा होगा ? उसे दीपक को वहां बुला कर क्या फायदा मिला होगा ? केस के धागे सुलझने की जगह और उलझते जा रहे थे। वो किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पा रहा था। फिलहाल वहां रुकने का कोई फायदा नहीं था इसीलिए वो दीपक से ये बोलकर की अगर उसे और भी कुछ याद आये तो उसे तुरंत बताये और फिर वो आकाश के साथ वापस थाने के लिए निकल पड़ा।

त्यागी अभी अपने रूम में आ कर बैठा ही था कि तभी हवलदार दोनों मर्डर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट उसे थमाते हुए बोला "सर आपके पीछे से पोस्टमार्टम हाउस से वहां का कर्मचारी ये रिपोर्ट दे गया था "
त्यागी को उस समय सबसे ज्यादा जरूरत पोस्टमार्टम रिपोर्ट की ही थी जो कि अब उसके हाँथों में थी, उसने बगैर देर किये वो रिपोर्ट खोलकर पढ़नी शुरू कर दी।
जैसे जैसे वो उन्हें पढ़ रहा था वैसे वैसे उसकी आंखें फैलती जा रही थीं, उन दोनों रिपोर्ट में लगभग सब कुछ एक जैसा ही था.. मर्डर वेपन सेम था, कत्ल करने का तरीका भी एक जैसा था और टाइम भी एक था। त्यागी की आंखे फैलने का कारण वो टाइम था जो उस रिपोर्ट में शो हो रहा था, क्योंकि दीपक का उस दिन पार्क में जाने का टाइम और मर्डर के टाइम मैच कर रहे थे, उस रिपोर्ट के मुताबिक मर्डर 3 बजे से 6 बजे के बीच किये गए थे और दीपक भी अपने ऑफिस से लगभग इसी टाइम गायब रहा था।
त्यागी की आँखे अब कुछ सोच कर सिकुड़ने लगीं और फिर उसने आकाश को वो पोस्टमार्टम रिपोर्ट देते हुए उसे पढ़ने का इशारा किया। आकाश भी उन रिपोर्ट्स को पढ़ कर अचंभित था।
"आकाश.. इन रिपोर्ट से जानकारी मिलने के बाद अब हमें ये पता लगाना है कि दीपक सच बोल रहा है या झूठ ? तुम पता कर के दीपक की उस दिन की लोकेशन पता करो खास तौर

पर उस टाइम की जिस टाइम वो पार्क में जाने की बात बता रहा है और अगर वो सही बता रहा है तो फिर उस फोन की लोकेशन ट्रेस करो जिससे उसे वहां बुलाया गया था। "
"ओके सर, मैं अभी जा कर पता करता हूँ "और वो तेज़ी से बाहर निकल गया।
उसके जाने के बाद त्यागी फिर से उन रिपोर्ट्स में डूब गया। वो केस की कड़ी से कड़ी जोड़कर किसी नतीजे पर जल्दी से जल्दी पहुंच जाना चाहता था। दिमाग तेज चले इसलिए उसके होंठों पर उसकी मनपसंद ब्रांड की सिगरेट फिर से शोभा बढ़ाने लगी।
अभी उसने दूसरी सिगरेट जला कर होंठों से लगाई ही थी कि तभी उसका मोबाइल बज उठा, उसने चौंक कर उसकी स्क्रीन देखी तो बुरा सा मुँह बना लिया... उधर कॉल पर कप्तान साब थे। जरूर केस के बारे में पता करने के लिए फोन किया होगा, ये सोचते हुए उसने कॉल रिसीव कर ली।
कप्तान साब ने फोन पर ज्यादा बात न करके उसे सीधे अपने ऑफिस बुला लिया था। वो सिर पर कैप पहन कर भुनभुनाते हुए उनके ऑफिस चल दिया।
एक घंटे बाद जब वो अपने सीनियर से डांट की खुराक ले कर वापिस अपने थाने पहुंचा तो उसने आकाश को अपना इंतज़ार करते पाया।
"सर मैं दीपक की उस दिन कॉल डिटेल निकलवा लाया हूँ, इसमें उसकी ये बात तो सच है कि वो उस दिन वहां पर उस टाइम गया था लेकिन वापस वो एक घंटे बाद ही आ गया था न की दो घंटे रुक कर। और जिस लैंडलाइन से उसे फोन किया गया था वो वहां से तीन किलोमीटर दूर एक चर्च के पास के पब्लिकबूथ से किया गया था। "आकाश ने एक सांस में उसे सारी जानकारी दे दी।
आकाश से सारी जानकारी पता चलने के बाद त्यागी सोच में पड़ गया। केस और भी ज्यादा पेंचीदा होता जा रहा था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि दीपक वहाँ पर अपने रुकने का टाइम ज्यादा क्यों बता रहा था जबकि वो वहां केवल एक घण्टा ही रुका था और उसे फोन कर के किसने बुलाया था और क्यों ? अगर उस अनजान फोन वाले को ट्रेस कर लिया जाये तो ये पता लग जायेगा कि दीपक झूंठ क्यों बोल रहा है और यही सोच कर उसने आकाश को अगला काम बता दिया।
"आकाश.. अब तुम ये और पता लगाओ की दीपक को जिस पब्लिकबूथ से फोन किया गया था उस बूथ के आसपास उस टाइम कितने मोबाइल फोन एक्टिव थे और फिर उन एक्टिव नम्बरों को फिल्टर कर के जो नम्बर हमारे केस से संबंध रखता हो उसकी पूरी डिटेल निकलवा लाना, देखते हैं शायद वहीं से हमें इस केस में आगे बढने का रास्ता मिले। "
"ओके सर, मैं अभी ये सब डिटेल पता करता हूँ। "अब आकाश भी इस केस में दिलचस्पी ले रहा था और वो भी चाहता था कि जल्दी से जल्दी ये केस सॉल्व हो इसीलिए वो अपनी

नींद और भूख प्यास भूल कर त्यागी के ऑर्डर फॉलो कर रहा था।
अभी आकाश को वहां से गये कुछ देर ही हुआ था कि तभी त्यागी के मोबाइल की घण्टी घनघना उठी, उसने चौंक कर मोबाइल की स्क्रीन पर नज़र दौड़ाई तो वहां पर कोई अनजान नम्बर शो हो रहा था।
उसने कॉल रिसीव की तो पता चला कि उधर से कॉल करने वाला दीपक का पड़ोसी कोई श्याम लाल गुप्ता था, वो त्यागी को उस केस के सिलसिले में कोई महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहता था। उसकी बात सुनकर त्यागी ने उसे अपने ऑफिस में ही बुला लिया।
तकरीबन आधे घंटे बाद दीपक के पड़ोसी गुप्ता जी जो कि 38-40 साल के इकहरे बदन के साधारण से दिखने वाले व्यक्ति थे, वो एक 11-12 साल के बच्चे के साथ त्यागी के रूम में खड़े थे। उनका परिचय जान कर त्यागी ने अपने सामने चेयर पर बैठने का इशारा किया।
"हां तो श्याम लाल जी, कहिये आप इस केस के सिलसिले में क्या महत्वपूर्ण बात बताना चाह रहे थे ? "त्यागी ने बगैर टाइम बर्बाद किये गुप्ता जी के सामने सवाल दाग दिया।
"सर मैं नहीं, मेरा बेटा आदि आपको इस बारे में कुछ बताना चाहता है। "गुप्ता ने अपने बेटे की ओर इशारा करते हुए कहा।
"बेट उस दिन तुमने जो कुछ देखा था वो सब इंस्पेक्टर अंकल को बताओ। "गुप्ता ने अपने बेटे को त्यागी की ओर इशारा करते हुए कहा।
"इंस्पेक्टर अंकल उस दिन मैंने 4.30 बजे के करीब एक कूरियर वाले को दीपक अंकल के फ़्लैट की ओर जाते हुए देखा था। "
उस बच्चे के मुंह से ये बात सुनकर त्यागी के कान खड़े हो गए।
"बेटा तुमने ध्यान से उसे देखा था ? जैसे कि उसकी कदकाठी उसका हुलिया आदि और तुम्हें उसके वहां पर आने का सही सही टाइम कैसे पता है ? "
"अंकल वो एक सामान्य कदकाठी और हाइट का आदमी था जिसके चेहरे पर दाढ़ी मूंछ थी और सिर पर उसने कैप पहनी हुई थी जिसके कारण उसका चेहरा साफ नजर नहीं आ रहा था, और टाइम का इसलिए पता है क्योंकि वो टाइम मेरी ट्यूशन का होता है। "बच्चे ने याद करते हुए त्यागी को बताया।
त्यागी के लिए ये एक बेहद ही इम्पोर्टेन्ट इन्फॉर्मेशन थी, जिस केस में वो अब तक अंधेरे में तीर चला रहा था वहां उस एक सूचना से थोड़ी थोड़ी रोशनी दिखाई देने लगी थी।
"गुप्ता जी आपका शुक्रिया जो आपने इतनी महत्वपूर्ण जानकारी मुझे दी और बेटे आपको भी एक बिग थैंक्स, अच्छा गुप्ता जी अब आप जाइये और इस केस के बारे में और कुछ नया पता लगे तो आप पहले की तरह बिना संकोच मुझे फोन कर सकते हैं और हाँ इस बारे में आप किसी को कुछ भी मत बताना। "त्यागी ने खड़े होकर श्यामलाल जी से हाँथ मिलाया और प्यार से उनके बेटे आदि के सिर पर अपना हाँथ फिरा दिया।

त्यागी के लिए ये सूचना काफी महत्वपूर्ण थी इसीलिए उसने फ़ौरन दो कॉन्स्टेबल अपने रूम में बुला लिए और उन्हें निर्देश देते हुए बोला "तुम दोनों तुरन्त डबल मर्डर वाले केस के सिलसिले में उस बिल्डिंग पर चले जाओ और वहाँ पर पता करो कि उस बिल्डिंग में या आसपास कहाँ कहाँ सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, तुम्हें उन कैमरों में मर्डर वाले दिन की 3 बजे से 6 बजे तक की फुटेज़ चेक करनी है.. स्पेशली उसमें तुम्हें एक दाढ़ी वाले कूरियर बॉय की फुटेज़ चेक करनी है और वो सब फुटेज़ निकाल कर यहाँ लानी है और साथ ही उस कूरियर वाले के बारे में सारी मालूमात भी निकालनी है "
"जी जनाब "उनमें से एक ने त्यागी को सेल्यूट ठोंकते हुए बोला और फिर दोनों उस कमरे से बाहर चले गए।
त्यागी अभी उस बच्चे की बताई हुई जानकारी से इस केस की कड़ियाँ जोड़ने की कोशिश कर ही रहा था कि तभी उसका जूनियर आकाश वहां आ गया।
"हां आकाश, बताओ क्या पता लगा तुम्हें। कोई काम की जानकारी हाँथ लगी या नहीं ?
"त्यागी ने उसके कुछ बोलने से पहले ही सवालों की झड़ी लगा दी।
"काफी महत्वपूर्ण जानकारी हाँथ लगी है सर "आकाश की आंखों की चमक बता रही थी जैसे उसके हाँथ कोहिनूर हीरा लग गया हो।
"जल्दी से सारी डिटेल बताओ मुझे "त्यागी से एक मिनट भी इंतज़ार करना मुश्किल हो रहा था।
"सर.. उस चर्च से थोड़ी दूरी पर वो पब्लिकबूथ है, जहाँ पर वो बूथ है वो अपेक्षाकृत सुनसान जगह पर है। मैंने वहां पर जा कर देखा तो उस जगह ज्यादा चहलपहल नहीं थी, इसीलिए शायद उस अनजान कॉलर ने वो जगह चुनी होगी ताकि उसका कोई विटनेस न मिल सके। फिर मैंने वहाँ पर उस दिन एक बजे के आसपास जितने भी एक्टिव मोबाइल थे उनकी डिटेल निकलवाई, उनमें ज्यादातर तो चर्च आने जाने वाले और आसपास के दुकानदारों के थे और कुछ 6-7 ऐसे भी थे जिनका वहाँ से कोई लेनादेना नहीं था, इसीलिए मुझे उन पर शक हुआ। फिर मैंने उन सभी सातों नम्बर की छानबीन की तो उनमें छन कर सिर्फ एक नम्बर बाहर आया जिसे मैं प्राइम सस्पेक्ट कह सकता हूँ। "आकाश की आवाज़ की खनखनाहट से लग रहा था जैसे वो कोई किला फतह कर आया हो।
"सिर्फ वो एक नम्बर ही तुम्हारे शक के दायरे में क्यों आया "त्यागी ने उत्सुकता से पूंछा।
"सर… पहली बात तो वो नम्बर इस शहर का नहीं है और दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात ये की उस कत्ल वाले दिन उस नम्बर की लोकेशन 4.30 बजे से लेकर 6 बजे तक उसी बिल्डिंग के आसपास की आ रही है जहां वो दोनों मर्डर हुए थे। "आकाश चहकते हुए बोला।
"तुमने पता किया कि वो नम्बर किसके नाम है और उसका एड्रेस क्या है ?"ये जानकारी मिलते ही त्यागी की आंखे भी चमक उठीं।

"जी सर, ये नम्बर किसी अनुज के नाम रजिस्टर है जो कि पास के ही शहर का रहने वाला है। "
"ठीक है तुम अभी उस शहर के लिए निकल जाओ और साथ ही जरूरी पेपर लेकर उस अनुज को अरेस्ट कर के यहां ले आओ, अब आगे की सारी बात हमें ये अनुज ही बताएगा। वैसे मुझे लगता है कि हम लोग इस केस को सॉल्व करने के बेहद करीब हैं "त्यागी पूरे कॉन्फिडेंस के साथ बोला।
"ठीक है सर, मैं अभी सारे जरूरी कागजात तैयार करवाता हूँ। मुझे भी अब आपसे ज्यादा जल्दी है इस केस के सॉल्व होने की। "आकाश ने एक जोरदार सेल्यूट मारा और कमरे से बाहर निकल गया।

आज आकाश को गए हुए दो दिन हो चुके थे और उसकी कोई ख़बर नहीं थी, न तो उसका कोई फोन आया था और न ही कोई मैसेज। त्यागी ये सोच सोचकर परेशान था कि आकाश ने अब तक क्या क्या पता लगा लिया होगा ? उसे कातिल का पता चला होगा या नहीं ? अनुज उसकी गिरफ्त में आ पाया होगा या नहीं ? आखिर उसने अभी तक मुझसे कोई कॉन्टैक्ट क्यों नहीं किया ?
अभी वो अपने रूम में बैठा हुआ ये सब सोच ही रहा था कि तभी उसके मोबाइल की रिंगटोन बज उठी। उसने चौंक कर देखा तो वो आकाश की कॉल थी।
बड़ी लम्बी उम्र है इस बन्दे की और ये सोचते हुए उसने कॉल रिसीव कर ली।
"गुड मॉर्निंग सर... "त्यागी के कान में आकाश की चहकती आवाज़ सुनाई दी।
"गुड मॉर्निंग आकाश, तुम्हारी खुशी से लगता है कि तुमने वहां पर इस केस से सम्बंधित काफी मसाला इकट्ठा कर लिया है "त्यागी ने हंसते हुए कहा।
"हां सर आप सुनेंगे तो आप भी खुशी से झूम उठेंगे। "
"तो फिर देर क्यों कर रहे हो ? जल्दी से बताओ भाई "आकाश की पहेलियों से त्यागी की जिज्ञासा भी बढ़ती जा रही थी।
"सर जब मैं यहां अनुज के बारे में मालूमात कर रहा था तो मुझे कई चौंकाने वाली बातें पता चलीं। सर पता चला है कि सोनिया और उसका परिवार उसकी शादी से कुछ टाइम पहले इसी शहर में रहता था और सर ये भी पता चला है कि अनुज और सोनिया एक दूसरे के पड़ोसी थे, साथ ही साथ इन दोनों ने एक साथ ही एक ही स्कूल से स्कूलिंग की थी और साथ ही इन दोनों ने कॉलेज की स्टडी भी एक ही कॉलेज से की थी। "आकाश बोलता जा रहा था और इधर त्यागी की आँखें सौ वाट के बल्ब की तरह चमक रही थीं।
"वाह आकाश... बेहतरीन काम किया है तुमने। अब तुम ज्यादा देर मत करो, फौरन उस अनुज नाम के लड़के को अरेस्ट कर के यहाँ ले आओ बाकी की पूछताछ हम लोग यहाँ कर

लेंगे, और हाँ इस लड़के के बारे में जितनी जानकारी और इकट्ठी हो सके वो कर लेना, वो सब सबूत हमारे आगे काफी काम आएंगे। "
"ओके सर.. मैं सारी जानकारी और सबूत इकट्ठे कर के अनुज के साथ जल्दी ही वापस आता हूँ "इतना कह कर आकाश ने कॉल डिसकनेक्ट कर दी।
आकाश से बात कर के त्यागी काफी रिलेक्स फील कर रहा था, दो दो मर्डर्स का कातिल हाँथ लग गया था, सारे सबूत उस लड़के अनुज के खिलाफ थे उसे कातिल ठहराने के लिए बस आकाश के आने की देर थी। उसे अपने सिर पर से बोझ हटा हुआ महसूस हो रहा था जो कि उसके सीनियर और प्रेस रिपोर्टर्स ने बना दिया था। बस अब केस सॉल्व होने ही वाला था, कई दिनों के बाद आज उसे एक अच्छी नींद मिलने वाली थी।
त्यागी अभी अपने ख्यालों में खोया हुआ ही था कि तभी किसी की आहट से उसका ध्यान भंग हो गया, उसने नज़र उठा कर देखा तो उसके सामने वो दोनों कॉन्स्टेबल खड़े थे जिन्हें उसने दीपक की बिल्डिंग के आसपास उस कूरियर बॉय और सीसीटीवी फुटेज के बारे में पता करने भेजा था।
"हाँ ! क्या पता किया तुम लोगों ने ? उस कूरियर वाले के बारे में कुछ पता लगा ? "त्यागी ने उनसे छूटते ही सवाल किया।
"जनाब मर्डर वाली बिल्डिंग में तो सीसीटीवी कैमरे लगे ही नहीं थे, इसलिए हमने बिल्डिंग के आसपास देखा तो हमें बिल्डिंग के ठीक सामने एक जनरल स्टोर पर कैमरे लगे हुए नज़र आ गए तो हमने वहाँ पर उस दिन की फुटेज़ देखी तो उसमें वो कूरियर वाला शाम को 4.30 बजे उस बिल्डिंग में जाता हुआ दिखाई दे रहा और फिर लगभग एक घण्टे बाद 5.40 पर वहाँ से बाहर निकलता हुआ दिखाई दे रहा है, लेकिन ज्यादा दूरी होने के कारण उस फुटेज़ में उसका चेहरा साफ नज़र नहीं आ रहा। उसके बारे में हमने उस स्टोर वाले से और उसके स्टाफ से पूछताछ की तो उन्हें उसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी, फिर हमने आसपास भी लोगों से पूछताछ की, लेकिन उसके बारे में कोई भी कुछ भी नहीं जानता था। इसके बाद हम वो सीसीटीवी फुटेज अपने साथ ले आये हैं ताकि आप भी देख लें। "उसने एक सांस में सारी बात त्यागी के सामने रख दी।
त्यागी ने उनकी लाई हुई फुटेज़ जो कि एक पेनड्राइव में थी को अपने कम्प्यूटर में लगा कर चेक किया। वो कॉन्स्टेबल सही कह रहा था, उस फुटेज़ में सही में कूरियर वाले का चेहरा साफ नजर नहीं आ रहा था। उस फुटेज़ से सिर्फ इतना पता चल रहा था कि वो कितने बजे बिल्डिंग में घुसा और कितने बजे निकला। लेकिन फिर भी वो फुटेज़ इस केस की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी, इसीलिए त्यागी ने दोनों हवलदारों की तारीफ़ की और वो फुटेज़ संभाल कर रख ली।
—----------

सबइंस्पेक्टर आकाश ने त्यागी को ज्यादा देर तक इंतजार नहीं करवाया, अपने वादे के मुताबिक वो बताये हुए टाइम से पहले ही अनुज को ले आया था।
वो मरियल सा, साधारण सी कदकाठी वाला इंसान जिसके चेहरे पर नज़र का चश्मा लगा था त्यागी के सामने ऐसे खड़ा था जैसे शेर के सामने बकरी। त्यागी ने ऊपर से लेकर नीचे तक उसे देखा, उसे देखकर त्यागी को महसूस हुआ कि अगर वो थोड़ा ज़ोर से भी बोल देगा तो शायद वो अपनी पेंट में ही पेशाब न कर दे। उसे अपने सामने खड़ा वो मरियल सा शख्स किसी भी एंगल से खूनी नहीं लग रहा था, खून करना तो दूर उसने शायद ही कभी कोई मच्छर भी मारा हो। त्यागी को एक बारगी तो लगा शायद उसका जूनियर कोई गलत आदमी उठा लाया है फिर उसे ख्याल आया कि जब उसे अपनी पुलिस की ट्रेनिंग दी जा रही थी तो उसे ये भी बताया गया था कि इन्वेस्टिगेशन के समय अपनी आंखों पर भरोसा न कर के सबूतों को ही अपनी आंखें बना लेना चाहिए, और फिर ट्रेनिंग की बात याद आते ही उसके देखने का नज़रिया बदल गया।
उसने आकाश को इशारा किया कि उसे इंट्रोगेशन रूम में ले जाया जाए।
इंट्रोगेशन रूम में कुल जमा छः प्राणी मौजूद थे, बीचोबीच कुर्सी पर बैठा अनुज और चारों तरफ से उसे घेरे हुए त्यागी, आकाश और तीन कॉन्स्टेबल।
अपने आप को चारों तरफ से घिरा हुआ और उन सभी को उसे लाल लाल आंखों से घूरता हुआ देख कर उसका शरीर सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था, अंदर से मुंह सूख चुका था और दिल की धड़कन धौंकनी की तरह चल रही थी। कुल मिलाकर उसकी हालत सही नहीं थी।
"क्या काम करता है तू ? "त्यागी ने रौबदार और कड़कती आवाज़ में उससे पूंछा।
"सर मैं सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा हूँ "अनुज के मुंह से मिमियाती हुई आवाज़ निकली।
"तेरे घर में तेरे अलावा और कौन कौन है ? "
"सर मेरे अलावा मेरे माँ पिताजी और बड़ी बहन, जिनकी अब शादी हो चुकी है, अब घर में हम तीन लोग ही रहते हैं। "अनुज की आवाज़ में खौफ अब भी साफ झलक रहा था।
"तू सोनिया को जानता था ? "
"हाँ सर, वो हमारी पड़ोसी थी और हमने साथ साथ पढ़ाई भी की थी। "सोनिया का नाम आने से वो थोड़ा विचलित हुआ जिसे की त्यागी की तेज नज़रों ने नोटिस किया।
"अच्छा अब ये बता की तू सोनिया से आखरी बार कब मिला था ? "
"सर लगभग दो साल पहले, मेरा पेपर था उसके शहर में और पेपर शुरू होने में दो घंटे का टाइम था तो मैं उससे मिलने उसके घर चला गया था।"
"जब तू उसके घर पहुंचा तो क्या तेरी मुलाकात उसके पति से हुई थी ? "

"नहीं सर, उसका पति उस समय अपने ऑफिस में था "
"अच्छा अब तू ये बता की जिस दिन सोनिया का मर्डर हुआ उस दिन तू कहाँ था ? "त्यागी ने एक एक शब्द चबाते हुए उससे पूंछा।
"सर उस दिन मैं अपने घर पर ही था और अपनी सिविल सर्विस की तैयारी कर रहा था। "
"तेरे पास क्या सबूत है कि तू उस दिन अपने घर पर ही था ? "त्यागी ने उसकी आँखों में घूरते हुए पूंछा।
"सर आप मेरे मम्मी पापा से पूंछ सकते हैं। "उसने घबराते हुए जवाब दिया।
"तुझे इतना भी नहीं पता की घर वालों की गवाही कोई मायने नहीं रखती, तेरे पास कोई और प्रूफ हो तो बता। "
"नहीं सर, इनके अलावा तो और कोई भी नहीं है। "उसकी आवाज़ में मायूसी साफ टपक रही थी।
"अच्छा ये बता की उस दिन तेरा मोबाइल किस के पास था ? "त्यागी ने बगैर देर किये उसके मुंह पर दूसरा सवाल दे मारा।
"सर था तो मेरे पास ही लेकिन पता नहीं क्यों उस दिन सुबह से शाम तक उसके नेटवर्क में प्रॉब्लम थी, न तो मैं कहीं कॉल कर पा रहा था और न ही किसी की कॉल आ ही पा रही थी। "अनुज अपने दिमाग पर जोर देते हुए बोला।
"आधा सच बोल रहा है तू, हाँ मोबाइल तो तेरे ही पास था लेकिन तू अपने घर पर नहीं था। तू उस दिन यहां इस शहर में था और न ही इस शहर में था बल्कि तू सोनिया के घर भी गया था और फिर उन दोनों माँ बेटी की हत्या भी तूने ही की थी और तब भी ये मोबाइल तेरे ही पास था। "त्यागी ने अपने दांत पीसते हुए कहा।
"न नहीं सर.... ये झूठ है। मैं भला सोनिया को क्यों मरूँगा ? मेरी उससे क्या दुश्मनी थी जो मैं उसे मारता ? मैंने तो आज तक किसी को चांटा तक नहीं मारा। "वो बुरी तरह बिलखते हुए त्यागी के आगे गिड़गिड़ा रहा था।
"साले हमारी सर्विलांस की रिपोर्ट झूठ बोल रही है क्या ? तेरा मकसद आईने की तरह साफ है, तू उस बेचारी सोनिया से एकतरफा प्यार करता होगा और जब तेरी शादी उससे नहीं हुई तो तूने उससे बदला लेने के लिए मौके की तलाश की और जैसे ही तुझे मौका मिला तूने उन दोनों माँ बेटी की हत्या कर दी। अब तुझे फांसी के फंदे से कोई नहीं बचा सकता। "त्यागी ने उसे एक भद्दी सी गली देते हुए बोला।
त्यागी की बात सुनकर उसके पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई, वो दहाड़े मार कर रोने लगा और साथ ही बड़बड़ाने लगा "मैं सच बोल रहा हूँ। मैंने सोनिया को नहीं मारा, मैं तो उसे अपनी बहन मानता था। "

त्यागी उसकी बात सुनकर उखड़ गया और उसे एक जोरदार थप्पड़ मार कर उसे माँ बहन की गाली देते हुए बोला "साले हमें बेवकूफ समझता है। मौत सामने देख कर उसे अपनी बहन बता रहा है हरामजादे हमारे पास तेरे खिलाफ सारे सबूत हैं जो अदालत में तुझे कातिल सिद्ध करने के लिए काफी हैं। "और ये बोलकर त्यागी और बाकी लोग वहां से बाहर निकल आये। पीछे से अनुज की रोती बिलखती आवाज़ बाहर तक आ रही थी जिसमें वो अपने आप को बार बार बेगुनाह बता रहा था।

त्यागी को अपने रूम में आ कर बैठे हुए अभी कुछ देर ही हुई थी कि तभी बाहर खड़े हवलदार ने आ कर उससे कहा "जनाब बाहर आपसे मिलने एक वकील और एक बुजुर्ग आये हुए हैं, वकील अपना नाम देव कोहली बता रहे हैं.. अगर आपकी इजाजत हो तो क्या उन्हें अंदर भेज दूं ? "

"हां, भेज दो उन्हें "देव कोहली नाम सुनकर त्यागी के चेहरे पर मुस्कुराहट खिल गई। देव कोहली का नाम उसके अच्छे दोस्तों की लिस्ट में सबसे ऊपर था। कई केसों में उसकी मदद अदालत में देव ने ही की थी। जिस केस में भी उसकी तरफ से कोई कमजोरी रह जाती तो उसमें देव ही अपने अनुभव से मज़बूती देता। देव कोहली का नाम शहर के काबिल वकीलों में शुमार था।

"कप्तान साब, क्या मैं अंदर आ सकता हूँ ? "रूम के गेट पर खड़े होकर उस शख्स ने हंसते हुए त्यागी से पूंछा।

"अरे यार, पता नहीं तू मुझे छेड़ना कब बन्द करेगा "त्यागी अपनी चेयर से उठ कर उससे हाँथ मिला कर उसे अपने सामने वाली चेयर पर बिठा कर और उसके साथ में आये हुए बुजुर्ग को साथ वाली चेयर पर बैठने का इशारा कर के वापस अपनी चेयर पर बैठ गया।

"हां भाई कोहली अब बता तू आज इधर का रास्ता कैसे भूल गया ? इस गरीब की कैसे याद आ गई ?"त्यागी ने मुस्कुराते हुए उससे पूंछा।

"बताता हूँ, सबसे पहले तू इनका परिचय जा ले। "कोहली ने अपने बराबर में बैठे बुजुर्ग की ओर इशारा कर के बोला।

"इनका नाम ईश्वर चन्द शर्मा है और ये मेरे नज़दीक के जानने वाले हैं और इनका एक परिचय और भी है, ये अनुज के पिता हैं, उसी अनुज के जो कि अभी तेरे लॉकअप में बंद है। ये आज सुबह ही मेरे पास आये हैं और इन्होंने बताया कि इनके निर्दोष बेटे को तुम गिरफ्तार कर के यहां ले आये हो। "कोहली ने गंभीर आवाज़ में त्यागी को बताया।

"यार हर माँ बाप को अपनी औलाद निर्दोष ही लगती है, ये बात तो तू भी मुझसे बेहतर जानता है और रही बात इनके बेटे की तो सारे सबूत उसके खिलाफ जा रहे हैं। अब तू ही बता मेरी कोई जाती दुश्मनी तो है नहीं इनके लड़के के साथ, यार कानून तो अन्धा होता

है... वो तो सबूतों को सूँघता हुआ अपराधी के पास पहुंचता है। "त्यागी ने अपनी मज़बूरी कोहली के सामने खोलकर रख दी।
त्यागी की बात सुनकर देव कुछ देर सोच में पड़ गया और फिर उससे बोला "क्या मैं एक बार उन सबूतों को देख सकता हूँ ? "
"देख वैसे तो ये कानून के खिलाफ है लेकिन तू मेरा जिगरी दोस्त है इसलिए तुझे मना नहीं कर सकता, ले तू अपनी आंखों से देख की हर सबूत चीख चीख कर उसे कातिल ठहरा रहे हैं। "त्यागी ने मेज की दराज़ से एक फ़ाइल निकाल कर उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला।
त्यागी के हाँथ से फ़ाइल ले कर कोहली उसे खोलकर ध्यान से एक एक सबूत को पढ़ने और जांचने लगा। पूरी फ़ाइल को पढ़ कर जांचने के बाद उसे त्यागी की ओर बढ़ाते हुए वो बोला "तेरी फ़ाइल और उसमें मौजूद सारे सबूत तो यही इशारा कर रहे हैं कि अनुज ही कातिल है लेकिन मेरी सिक्स्थ सेंस कहती है कि कहीं न कहीं कुछ न कुछ गड़बड़ तो जरूर है और मैं अनुज और उसके परिवार को कई सालों से जानता हूँ, वो इस टाइप का लड़का नहीं है और न ही उसे इस तरह के संस्कार विरासत में मिले हैं। मैं तुझे हम दोनों की इतनी पुरानी दोस्ती के नाते कह रहा हूँ कि तुझसे कहीं न कहीं कोई चूक जरूर हो रही है इसलिए तू एक बार मेरे कहने से इस केस की फिर से तहकीकात कर, कहीं ऐसा न हो कि कानून के हाँथों कोई बेकसूर मारा जाये। "कोहली ने त्यागी का हाँथ अपने हाँथ में बड़े प्यार से पकड़ते हुए बोला।
"तू इतने भरोसे से कह रहा है तो मैं एक बार फिर से शुरू से इस केस की तहकीकात कर लेता हूँ, क्या पता तेरी बात सच ही निकल जाये और फिर मैं खुद भी नहीं चाहूंगा कि किसी निर्दोष को सज़ा हो जाये। "त्यागी ने मुस्कुराते हुए कोहली को आश्वस्त किया।
त्यागी की बात सुनकर कोहली के चेहरे पर सुकून भरी मुस्कुराहट खिल गई और अनुज के पिता ईश्वर चन्द जी की आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने त्यागी की ओर देख कर अपने दोनों हाँथ जोड़ लिए।
"अरे नहीं अंकल, आपको मेरे आगे हाँथ जोड़ने की कोई जरूरत नहीं है। मैं तो बस अपना फर्ज निभा रहा हूँ और फ़र्ज़ के मुताबिक कानून के हाँथो किसी भी निर्दोष को सज़ा नहीं होनी चाहिए। यदि आप का बेटा निर्दोष है तो दुनिया की कोई ताकत उसे सलाखों के पीछे नहीं डाल सकती। "त्यागी ने उन्हें आश्वत करने का पूरा प्रयास किया।
और फिर कोहली और अनुज के पिता त्यागी से आश्वत हो कर उससे विदा ले कर वहाँ से चले गए।
उनके जाने के बाद त्यागी ने अपने जूनियर आकाश को अपने रूम में बुला लिया, थोड़ी ही देर में वो त्यागी के सामने चेयर पर बैठा था।

त्यागी ने आकाश को अपने वकील दोस्त कोहली और अनुज के पिता के साथ हुई मुलाकात के बारे में सब कुछ कह सुनाया। आकाश भी देव कोहली को अच्छी तरह जानता था इसलिए वो भी इस बात पर सहमत दिखा कि एक बार फिर से उन लोगों को इस केस की दोबारा से तहकीकात करनी चाहिए। वो भी नहीं चाहता था कि जल्दबाजी या लापरवाही से किसी निर्दोष को सज़ा हो जाये।
' ठीक है फिर कल तुम और मैं एक बार फिर से वहीं से इस केस की शुरुआत करते हैं जहाँ से ये केस शुरू हुआ था। "ये बोलते समय त्यागी के चेहरे पर गंभीरता स्पष्ट तौर पर झलक रही थी।

अगले दिन, सुबह 11 बजे उसी बिल्डिंग का वो फ़्लैट जहाँ दो मर्डर्स से इस केस की शुरुआत हुई थी। त्यागी उसी सील्ड फ़्लैट के सामने खड़ा था, उसने अपने सीनियर से उस फ़्लैट की सील खोल कर दोबारा तलाशी लेने की परमिशन ले ली थी और इसीलिए एक हवलदार उस फ़्लैट की सील तोड़कर उसके गेट का लॉक खोल रहा था।
अब त्यागी और उसकी टीम बड़ी ही बारीकी से फ़्लैट के कमरों की तलाशी ले रही थी। वो तीन कमरों वाला फ़्लैट था जिस कमरे में सोनिया की लाश मिली थी उसकी तो उसी दिन ढंग से तलाशी ले ली गई थी, वैसे भी वो कमरा ड्राइंगरूम था इसलिए वहां उन्हें पहले भी कुछ खास नहीं मिला था और अब भी वहां कुछ हाँथ नहीं आया।
त्यागी और उसका जूनियर आकाश दोनों एक साथ बेडरूम में तलाशी ले रहे थे जहां पर दीपक की एक साल की बेटी गुनगुन की लाश मिली थी।
आकाश की आंखे तलाशी लेते हुए डबलबेड के बराबर में रखे बुकशेल्फ पर पड़ी, उसे लगा कि एक बार वहां भी देख लिया जाए और यही सोच कर वो बुकशेल्फ में लगी बुक्स को उलट पलट कर देखने लगा। अभी उसने एक बुक उठा कर उसे खोला ही था कि पता नहीं वो कैसे उसके हाँथ से छूट कर नीचे गिर पड़ी और उसके गिरते ही उसमें से छिटककर एक कागज का टुकड़ा निकल कर बाहर गिर पड़ा। उस कागज़ के टुकड़े पर निगाह पड़ते ही वो चौंक पड़ा, उसने झुक कर उसे उठाया और खोल कर देखा तो उसकी आंखें फैलती चली गईं। उसने तेज़ आवाज़ में त्यागी को पुकारा और उसके हाँथ में वो टुकड़ा पकड़ा दिया। त्यागी ने खोल कर उसे पढ़ा तो उसकी आँखें भी फैलती चली गईं। उसने आकाश से तुरंत दीपक को वहां बुलाने के लिए कहा।
आकाश ने एक हवलदार को दीपक को वहाँ पर बुला कर लाने के लिए भेज दिया। कुछ ही देर में हवलदार दीपक को जो कि अपने फ़्लैट के बाहर खड़ा था बुला लाया।
"दीपक क्या तुम इसके बारे में कुछ जानते हो ? "त्यागी ने वो कागज़ का टुकड़ा उसकी ओर बढ़ाते हुए पूंछा।

उस कागज़ के पुर्जे को हाँथ में लेकर देखा और त्यागी से बोला "हाँ सर, ये तो बीमे की रशीद है। '
"वो तो मैं भी देख रहा हूँ, तुम तो सिर्फ ये बताओ की बीमे की रकम कितनी है और ये बीमा किसके नाम से है ? "सब कुछ जानते हुए भी त्यागी दीपक के मुंह से सुनना चाह रहा था।
"सर... बीमा एक करोड़ का है और ये सोनिया के नाम से है। "सब कुछ उस रशीद पर साफ साफ लिखा होने के बाद भी त्यागी का उससे ये सब पूंछना उसे कुछ अजीब सा लगा।
' बस यही मैं तेरे मुंह से सुनना चाहता था। "त्यागी ने उसकी आँखों में घूरते हुए कहा।
"क.. क्या मतलब ? "एकाएक त्यागी के बात करने की टोन बदलने से वो सकते में आ गया।
"मतलब भी जल्दी ही समझ में आ जायेगा, सबसे पहले तो तू हमें ये बता की तूने ये बीमा कब करवाया था और ये बात तूने हमें क्यों नहीं बताई ? "त्यागी का उसे घूरना अभी भी बदस्तूर जारी था।
"स.. सर ये बीमा मैंने नहीं खुद सोनिया ने ही करवाया था और मुझे ये बात इतनी इम्पोर्टेन्ट नहीं लगी थी कि इस बारे में मैं आपको बताता "दीपक हकलाते हुए बोला।
"बेटा अगर बीमा पांच दस लाख का हो तो सच में वो इतना इम्पोर्टेन्ट नहीं है लेकिन अगर वही रकम सीधे एक करोड़ हो जाये तो वो बात इम्पोर्टेन्ट ही नहीं वेरी इम्पोर्टेन्ट हो जाती है, समझा कुछ ? "त्यागी एक एक शब्द चबाते हुए उससे बोला।
"रशीद देख कर पता चल रहा है कि ये बीमा एक साल पहले ही करवाया गया था और इसी बीच सोनिया का कत्ल भी हो जाता है। अभी तक हम लोगों की खोपड़ी खराब हुई जा रही थी कि आखिर साले ये कत्ल हुए किस वजह से थे ? क्योंकि हर कत्ल के पीछे कोई न कोई मकसद जरूर होता है और हमें इन कत्लों का मकसद ही नहीं पता चल पा रहा था तो भला हम इस केस को कैसे सॉल्व कर पाते ? अब जा कर मकसद मिला है और अब जल्दी ही सॉल्व होगा ये केस। आकाश.. जरा दीपक जी को इज़्ज़त के साथ अपनी जीप में तो बिठाओ, अब ये सरकारी मेहमान हैं, इनकी ख़ातिरदारी हम लोग वहीं पर करेंगे। "त्यागी ने मुस्कुराते हुए आकाश से कहा।
"न नहीं सर आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं, मैंने कुछ नहीं किया है। मैं तो अपनी बीवी से बहुत प्यार करता था, मैं भला उसे कैसे मार सकता हूँ। "दीपक त्यागी के सामने गिड़गिड़ा रहा था लेकिन त्यागी पर उसके गिड़गिड़ाने का कोई असर नहीं हो रहा था।
"वो सब तुझे हम थाने चल कर बतायेंगे कि तू अपनी बीवी का कत्ल कैसे कर सकता है ?"त्यागी ने उसके ऊपर व्यंग्यबाण छोड़ा और आकाश को इशारा किया कि उसे अरेस्ट कर ले।

आकाश त्यागी के इशारे को समझ गया और फिर उसने दीपक को हथकड़ी पहना दी और उसे लगभग घसीटते हुए ले जाकर पुलिस जीप में बिठा दिया।

"आकाश, इसे सच बोलने वाले कमरे में ले जाकर बिठाओ तब तक मैं जरा कप्तान साब को इस केस की प्रोग्रेस दे कर आता हूँ। और हाँ एक बात का ध्यान रखना कि दीपक जी कोई तकलीफ न होने पाये। "त्यागी ने आकाश को उसे इंट्रोगेशन रूम में ले जाने को बोला था और साथ ही तकलीफ शब्द पर कुछ ज्यादा ही ज़ोर दिया था और उस शब्द को सुनकर ही आकाश के चेहरे पर रहस्यमय मुस्कुराहट उभर आई थी।

आम इंसान का खून पुलिस और थाने का नाम सुनकर ही सूख जाता है और अगर उसे ये पता लगे कि वो गिरफ्तार हो चुका है और अब उसे हवालात में हवा और लात दोनों खानी हैं तो उसकी हालत कैसी होती होगी इसका अंदाजा लगाना कोई मुश्किल काम नहीं था। ठीक वैसी ही हालत उस समय दीपक की हो रही थी, उसका खून जमना शुरू हो चुका था और जबान सूख रही थी।

आकाश उसे उस सच बोलने वाले कमरे में ले आया था। मध्यम आकार के उस कमरे में बीचोबीच एक कुर्सी पड़ी हुई थी जिस पर उसने दीपक को बिठा कर उसके हाँथ पीछे की ओर बांध दिये।

"देख अब भी तेरे पास मौका है सब कुछ सच सच बता दे क्योंकि एक बार त्यागी सर ने तुझसे पूंछना शुरू किया तो तू रट्टू तोते की तरह बोलने लगेगा बस तब फर्क इतना होगा कि तेरी आवाज़ तेरे मुंह से न निकलकर कहीं और से निकल रही होगी। "ये बोलकर आकाश ने उसकी और ज्यादा फाड़ दी थी।

"मैं सच कह रहा हूँ कि मैंने कुछ नहीं किया, मैं निर्दोष हूँ। "डर के मारे दीपक के मुंह से बस इतना ही निकल पाया।

"ठीक है, लगता है तू त्यागी सर से प्रसाद पा कर ही अपना मुंह खोलेगा। मैं तो चाह रहा था कि तू अपने पैरों पर चल कर जेल जा लेकिन लगता है कि तू स्ट्रेचर पर वहां जाना चाहता है। "

अभी आकाश दीपक को मानसिक रूप से तोड़ ही रहा था कि तभी वहां त्यागी पहुंच जाता है।

अपने सामने खड़ा त्यागी दीपक को किसी भी तरह से यमदूत से कम नहीं लग रहा था इसीलिए उसे देखते ही वो डर कर गिड़गिड़ाया "सर मैं सच बोल रहा हूँ, मैं निर्दोष हूँ। मैंने अपनी पत्नी को नहीं मारा और अपनी मासूम बच्ची से तो मैं बेहद प्यार करता था। "

उसकी गिड़गिड़ाहट का त्यागी के ऊपर कोई असर नहीं हुआ, उसने उसके गाल पर एक ज़ोरदार थप्पड़ जड़ दिया और फिर उससे बोला "साले इतने दिनों से तू हमारा बेवकूफ

बना रहा है। हरामज़ादे तेरे कारण हम लोग कहाँ कहाँ नहीं भटके ? अपने सीनियर की रोज लताड़ खा रहा हूँ और साले तेरी जगह एक बेकसूर बलि का बकरा बन गया। अगर तू हत्थे नहीं चढ़ता तो भूल में एक निर्दोष को सज़ा हो जाती। और तू साले अब भी निर्दोष बनने का नाटक कर रहा है। "
"सर मैं सच बोल रहा हूँ, मैं अपनी बीवी और बच्ची से बहुत प्यार करता था। मैं तो सपने में भी नहीं सोच सकता था ऐसा करने के लिए। "दीपक त्यागी के सामने बिलख रहा था।
"साले बीमे की रकम के लालच में तूने अपनी बीवी का कत्ल किया और अब हमारे सामने उससे प्यार करने का नाटक कर रहा है। हरामज़ादे कम से कम उस मासूम बच्ची को तो छोड़ देता, उसने तेरा क्या बिगाड़ा था ? "त्यागी ने उसे हिकारत से घूरते हुए बोला।
"सर मैंने उन्हें नहीं मारा और न ही मैं लालची हूँ। मेरा उस बीमे की रकम से कोई लेना देना नहीं है। "इस बार दीपक लगभग चीखते हुए बोला।
"साले हमें चीख के डराना चाहता है। "त्यागी ने पूरी ताकत से उसे एक और थप्पड़ जड़ दिया।
"साले उस बीमे की एक करोड़ की रकम का तू वारिस है कि नहीं ? तो तू बता हरामखोर कि तेरी बीवी के मरने के बाद वो रकम तुझे मिलने वाली थी या फिर मुझे ? "त्यागी ने लाल लाल आंखों से घूरते हुए कहा।
"सर उस बीमे की रकम का मैं अकेला वारिस नहीं हूँ, उसमें कोई दूसरा भी वारिस है जिसे मेरे बाद वो सारी रकम मिलेगी। "दीपक अपनी आवाज़ और अपने आप को संयत करते हुए बोला।
"साले फंसता देख कर झूठी कहानी गढ़ रहा है ताकि हम लोग फिर से तेरे झांसे में आ जायें। "त्यागी उसकी किसी भी बात पर भरोसा करने को तैयार नहीं था।
"सर मैं सच बोल रहा हूँ, आप चाहो तो एक बार बीमे के कागजात चेक कर लो। उसमें आपको नॉमिनी में मेरे अलावा एक और नाम भी दर्ज़ किया हुआ मिलेगा। "
दीपक की आवाज़ और चेहरे पर इतना कॉन्फिडेंस देखकर त्यागी सोच में पड़ गया और फिर उसने एक हवलदार को अपने रूम में भेजकर वो बीमे वाली फ़ाइल वहां मंगवा ली। थोड़ी देर में हवलदार ने वो फ़ाइल ला कर त्यागी के हाँथ में थमा दी।
त्यागी ने वो फ़ाइल खोलकर पढ़नी शुरू कर दी, नॉमिनी वाले पेज को पढ़ते ही उसकी आंखें चौड़ी हो गईं। दीपक सही बोल रहा था वहाँ पर उसके अलावा एक और नाम लिखा था लेकिन वो नाम त्यागी के लिए निपट अंजाना था।
"ये सलोनी कौन है ? त्यागी के पूँछने के तरीके में सवाल से ज्यादा अचम्भा था, उसके लिए इस केस में ये एक नया ट्विस्ट था।

"सर... सलोनी सोनिया की बहन है। "ये बोलकर दीपक ने त्यागी के सिर पर एक और धमाका कर दिया।
"अबे ये अचानक सोनिया की बहन कहाँ से टपक पड़ी ? साले तू कोई चाल तो नहीं चल रहा है हम लोगों को गुमराह करने के लिए ? कहीं ऐसा तो नहीं कि तूने कोई झूठा किरदार खड़ा किया हो सलोनी के रूप में और उसी का नाम जानबूझकर बीमे की नॉमिनी के रूप में लिखवाया हो ताकि जब पुलिस जांच करे तो वो बेवकूफ बन जाये ? "त्यागी का दिमाग केस में आये नये ट्विस्ट से बिल्कुल हिल गया था।
"सर मैं सच बोल रहा हूँ, सलोनी उसी तरह सच है जैसे मैं और आप। "दीपक ने उसे यकीन दिलाने की कोशिश की।
"अगर सलोनी नाम का कोई शख्स है तो वो सामने क्यों नहीं आया ? जब उसकी बहन की हत्या हुई थी तब वो कहाँ थी और वहाँ क्यों नहीं आई ? और तूने भी उसका जिक्र कभी भी क्यों नहीं किया "त्यागी ने उसके सामने सवालों की झड़ी लगा दी।
"सर सलोनी मेंटली रिटायर्ड है और उसका इलाज मेंटल हॉस्पिटल में चल रहा है, इसीलिए वो अपनी बहन की हत्या के समय नहीं आई थी और मुझे लगा था कि एक मेंटली रिटायर्ड व्यक्ति का इस केस से क्या लेना देना इसीलिए मैंने आपको उसके बारे में नहीं बताया था। "
"लेकिन जहां तक मुझे पता है कि एक दिमागी रूप से बीमार व्यक्ति किसी ज़मीन जायदाद या फिर इस तरह बीमे का नॉमिनी नहीं बन सकता तो फिर तूने सलोनी को इस बीमे का नॉमिनी कैसे और क्यों बनवाया था ? "त्यागी ने शंकालु हो कर उससे पूंछा।
"सर ये बात मैं भी जानता हूँ इसीलिए मैंने सोनिया से इस बारे में कहा भी था क्योंकि ये उसी की जिद्द थी कि सलोनी को मेरे बाद नॉमिनी बनाया जाए और जब मैंने उससे ये सवाल किया तो उसने ये कह कर मेरा मुंह बंद कर दिया था कि मान लो अगर तुम्हें कुछ हो जाये और सलोनी इलाज के बाद ठीक हो जाये तो कम से कम हम दोनों के बाद वो इस दुनिया में अकेली होने के बाद भी इस रकम से सही से जीवन यापन तो कर पायेगी। उसके इस जवाब के बाद मैं निरुत्तर हो गया और फिर मैंने उससे कोई बहस नहीं की और जैसे वो कहती गई मैं वैसा करता गया। "
दीपक की बात सुनकर त्यागी थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया और फिर कुछ देर बाद एक और सवाल दाग दिया।
"अच्छा ये सलोनी की ऐसी हालत कब से है और वो हॉस्पिटल में कब से एडमिट है ? "
"सर सलोनी बचपन से ही ऐसी है, शुरुआत में उसका घर पर ही इलाज चलता था लेकिन जैसे जैसे वो बड़ी होने लगी उसकी हालत और ज्यादा खराब होने लगी तो सोनिया के माँ बाप ने उसे मेंटल हॉस्पिटल में एडमिट करवा दिया और फिर जब सोनिया की शादी के बाद

उसके पेरेंट्स की रोड एक्सीडेंट में डेथ हो गई तो हम लोग सलोनी को इसी शहर में ले आये और यहाँ के मेंटल हॉस्पिटल में एडमिट करवा दिया। अब तभी से उसका इलाज यहीं पर हो रहा है। "दीपक ने डिटेल में सब कुछ त्यागी को कह सुनाया।
दीपक की बात सुनकर त्यागी सोच में पड़ गया, उसकी समझ में ही नहीं आया कि अब वो उससे क्या पूंछे। थोड़ी देर सोचने के बाद उसने दीपक से पूंछा "सलोनी किस हॉस्पिटल में है ? मैं उससे अभी मिलना चाहता हूँ, उससे मिलने के बाद ही मैं तय कर पाऊंगा की तू सच बोल रहा है और तू दोषी है या नहीं। "
"सर इसी शहर के आशा किरण हॉस्पिटल में उसका इलाज चल रहा है और अभी हम उससे नहीं मिल सकते क्योंकि अब शाम हो चुकी है और वहाँ मरीजों से सुबह दस बजे से बारह बजे तक ही मिल सकते हैं। "
"कल कौन सा ज्यादा दूर है, जहां मैंने इतने दिन इस केस में लगाये हैं वहाँ आज की रात और सही। ठीक है हम कल वहां चलेंगे। "और ये बोल कर त्यागी वहां से निकलकर अपने रूम में आ गया।

अगले दिन सुबह दस बजे, आशा किरण हॉस्पिटल के सामने त्यागी की जीप अपने दलबल के साथ रुकती है। वहां पर त्यागी साथ में दीपक को भी लाया था। त्यागी जीप से उतरकर ड्राइवर को जीप पार्क करने का इशारा कर के हॉस्पिटल के इन्क्वारी ऑफिस की ओर बढ़ जाता है और उसके पीछे बाकी लोग।
"मुझे आपके हॉस्पिटल इंचार्ज से मिलना है, बता सकती हैं वे मुझे कहाँ मिलेंगे ? "त्यागी ने वहां बैठी रिसेप्शनिस्ट ने कहा।
सामने एक वर्दीधारी इंस्पेक्टर को देखकर उसने ज्यादा सवाल नहीं किये, उसने तुरंत इंचार्ज का रूम नम्बर बता दिया। त्यागी ने उसे मुस्कुरा कर थैंक्स बोला और फिर उस तरफ चल दिया जिधर जाने के लिए उस रिसेप्शनिस्ट ने बोला था।
कुछ देर बाद ही त्यागी उस रूम के बाहर खड़ा था। रूम के बाहर गेट पर लगी नेमप्लेट पर लिखा था डॉ संजीव माथुर । बाकी लोगों को बाहर छोड़कर अपने जूनियर आकाश के साथ त्यागी रूम के अंदर चला गया। अंदर एक 40-42 साल का आदमी फाइलों में उलझा हुआ था, गेट खुलने की आवाज़ सुनकर उसने नज़र उठाई तो सामने वर्दीधारी दो लोगों को देख कर चौंका। वो कुछ बोलता उससे पहले ही त्यागी बोल पड़ा "हैल्लो डॉ, आप ही शायद डॉ संजीव माथुर होंगे। मैं सीनियर इंस्पेक्टर त्यागी हूँ और ये मेरे अस्सिस्टेंट आकाश हैं। सॉरी मैं बगैर अपॉइंटमेंट और परमिशन के आपके रूम में आ गया। मैं इस समय एक बेहद ही इम्पोर्टेन्ट केस पर काम कर रहा हूँ जिसमें की मुझे आपकी हेल्प की जरूरत है, उम्मीद कर सकता हूँ कि आप मना नहीं करेंगे। "

अचानक से दो पुलिसकर्मियों की अपने सामने मौजूदगी और उससे एकाएक हेल्प मांगना अच्छे भले इंसान को शब्दरहित कर देता, ठीक वैसे ही डॉ माथुर का भी हाल था लेकिन जल्दी ही उसने अपने आप को संभाल कर खड़े होकर त्यागी से हाँथ मिलाया और फिर उससे पूंछा "जी हाँ मैं संजीव माथुर ही हूँ। कहिये मैं आपकी किस तरह सेवा कर सकता हूँ ? "

"ओह थैंक यू डॉ, मुझे उम्मीद थी कि आप मना नहीं करेंगे। डॉ मैं यहाँ पर एक डबल मर्डर की तहकीकात के सिलसिले में आया हूँ। मुझे आपके यहाँ एडमिट सलोनी नाम की पेशेंट से मिलना है। "त्यागी अपने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए बोला।

"लेकिन एक पागल भला आपकी इस केस में क्या मदद कर पायेगी ? "डॉ माथुर ने शंकाग्रस्त होते हुए पूंछा।

"डॉ माथुर जैसे मैं आपके पेशे के बारे में मैं कुछ नहीं जानता वैसे ही आप भी हमारे काम को नहीं समझ पाएंगे। वैसे आपकी जानकारी के लिए मैं एक छोटा सा हिंट दे सकता हूँ, मरने वाली सलोनी की सगी बहन थी। "त्यागी ने सपाट चेहरे के साथ डॉ माथुर को जवाब दिया।

"ओह ओके, म मैं समझ गया। मैं अभी सलोनी का इलाज कर रहे डॉ विनोद बंसल को बुलाता हूँ, वे आपकी पूरी हेल्प करेंगे। "डॉ माथुर त्यागी के समझाने के तरीके से समझ गया था इसीलिए उसने और कोई न नुकर नहीं की और इण्टरकॉम से डॉ विनोद बंसल को वहां पर बुला लिया।

त्यागी को बंसल का ज्यादा देर इंतज़ार नहीं करना पड़ा, वो कुछ ही देर में वहां आ गया। डॉ विनोद बंसल की देखने में उम्र तीस के आसपास रही होगी, उसने वहां आते ही सभी का अभिवादन किया और डॉ माथुर द्वारा उसे बुलाने का कारण पता चलते ही उसने त्यागी की ओर मुखातिब हो कर उसे अपने साथ चलने का इशारा किया और फिर वहां से बाहर निकल कर लिफ्ट की ओर बढ़ गया, उसके पीछे पीछे त्यागी आकाश दीपक और हवलदार थे।

लिफ्ट में सभी के आ जाने के बाद डॉ विनोद ने सिक्स्थ फ्लोर का बटन दबा दिया, लिफ्ट तेज़ी से छठे फ्लोर की ओर बढ़ चली।

कुछ देर बाद वे सब सिक्स्थ फ्लोर के मरीजों के गलियारे में चलते हुए एक रूम के बाहर खड़े थे।

"इंस्पेक्टर साब ये सलोनी का रूम है लेकिन वहां अंदर ज्यादा लोग नहीं जा सकते, मैं सिर्फ दो लोगों को ही अंदर जाने की परमिशन दे सकता हूँ। "डॉ बंसल ने अपनी मज़बूरी त्यागी के सामने रख दी।

"ओके डॉ, मैं आपकी बात समझ सकता हूँ। "त्यागी ने उससे कहा और फिर आकाश को अपने पीछे आने का इशारा कर के वो रूम का गेट खोल कर अंदर चला गया।

ज्यादा बड़ा नहीं था वो कमरा, अंदर एक छोटा सा बल्ब जल रहा था जिससे कारण वहां पर कमज़ोर सी पीली रोशनी फैली हुई थी। उस रोशनी में बस इतनी ही ताकत थी कि कमरे में रखी हुई वस्तुओं का आभास मात्र हो रहा था स्पष्ट कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। उतनी रोशनी में त्यागी ने देखा कि कमरे में बीच में दीवार से लगा हुआ एक पलँग पड़ा हुआ था और उस पर एक लड़की बैठी हुई थी जिसकी पीठ उन लोगों की तरफ थी।
उसे देख कर त्यागी ने उसे आवाज़ दी "सलोनी "
लेकिन त्यागी की आवाज़ का उस पर कोई भी नहीं हुआ, ऐसा लगा जैसे उसने त्यागी की आवाज़ सुनी ही न हो। कुछ देर रुक कर त्यागी ने उसे फिर आवाज़ दी, लेकिन इस बार भी उस पर कोई असर नहीं हुआ।

इस बार त्यागी ने आगे बढ़ कर उसके कंधे पर हाँथ रखा और उसे फिर से आवाज़ दी। कन्धे पर किसी का हाँथ महसूस कर के वो पलटी और जैसे ही उसका चेहरा त्यागी की तरफ हुआ वो बुरी तरह चौक गया और दो तीन कदम पीछे हट गया। त्यागी को इस तरह चौंक कर पीछे हटता देख कर आकाश ने भी कारण जानने के लिए उसकी तरफ देखा और वो दृश्य देखकर उसकी हालत भी त्यागी जैसी हो गई।
उन दोनों को संभलने में कुछ वक्त लग गया और जब त्यागी कुछ सामान्य हुआ तो वो बड़बड़ाया "ऐसा कैसे हो सकता है ? सोनिया तो मर चुकी थी, वो मरकर ज़िन्दा कैसे हो गई ? "
उन दोनों के सामने ज़िन्दा और सही सलामत हूबहू सोनिया खड़ी थी। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि जो इंसान मर चुका हो वो उनके सामने ज़िन्दा कैसे खड़ा हो सकता है। जो हालत उस समय उन दोनों की थी ऐसी हालत किसी की भी हो जाती अगर वो ये सब देखता।
जब त्यागी को कुछ भी समझ नहीं आया तो उसने ज़ोर से चिल्लाकर दीपक को वहां पर बुला लिया। त्यागी के चीख कर उसे बुलाने पर दीपक तेज़ी से उस रूम में आ गया।
दीपक को देख कर त्यागी ज़ोर से चीख कर बोला "अबे तू तो कह रहा था कि यहाँ पर सलोनी है लेकिन ये तो सोनिया है। तूने हम लोगों से झूठ क्यों बोला। "
"सर ये सलोनी ही है, उसकी जुड़वा बहन। पहली बार जब मैंने इसे देखा था तो मैं भी आप लोगों की तरह धोखा खा गया था। "दीपक सलोनी की ओर देखते हुए बोला।
दीपक की बात सुनकर त्यागी थोड़ा संयत हुआ और फिर सलोनी को गौर से देखने लगा। उसे देख कर कोई भी नहीं कह सकता था कि वो सोनिया नहीं है, हूबहू वो सोनिया ही दिखती थी। त्यागी ने उससे बात करने की कोशिश की लेकिन वो सपाट सा चेहरा लिये

उसे ऐसे घूरे जा रही थी कि जैसे वो कोई एलियन हो, जब सलोनी की तरफ से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं हुई तो त्यागी सभी के साथ उस रूम से बाहर आ गया।
"डॉ बंसल, मुझे आप से सलोनी के बारे में कुछ बातें करनी हैं। "रूम से बाहर आ कर त्यागी ने डॉ विनोद बंसल से कहा।
"जी जरूर क्यों नहीं, मैं खुद आपसे बात करना चाह रहा था। इसी फ्लोर पर मेरा केबिन है आप वहां पर चल सकते हैं लेकिन मैं चाहूंगा कि आप वहां पर मेरे साथ अकेले चलें। "
"ठीक है डॉ बंसल चलिये आपके केबिन में चलकर बात करते हैं। "डॉ बंसल के कहने के तरीके से त्यागी को लगा कि जरूर कोई इम्पोर्टेन्ट बात है इसीलिए उसने तुरंत हां कर दी। डॉ बंसल का केबिन उस गलियारे के पास ही था इसलिए उन दोनों को वहां पहुंचने में ज्यादा समय नहीं लगा। त्यागी ने आकाश और बाकी लोगों को वहीं पर रोक दिया था और खुद अकेला ही डॉ बंसल के साथ उसके केबिन में आ गया था।
"जी हां डॉ बंसल अब कहिये आप मुझसे क्या कहना चाह रहे थे ? "त्यागी ने डॉ बंसल की आंखों में देखते हुए कहा।
"सर मुझे सलोनी के बारे में कुछ खास बात करनी है "विनोद बंसल ने रहस्यमयी तरीके से बोला।
"हां डॉ बंसल बताइये मैं सुन रहा हूँ। "त्यागी अधीरता से बोला।
"इंस्पेक्टर साब, मैं कुछ दिनों से नोटिस कर रहा हूँ कि सलोनी के व्यवहार में कुछ बदलाव आया है। "
"किस तरह के बदलाव ? "त्यागी के लिए बंसल का सस्पेंस मुश्किल होता जा रहा था।
"सर सलोनी में कुछ दिनों से अजीब से बदलाव आये हैं, पहले वो एकदम शांत रहती थी और ज्यादातर बातें मानती थी लेकिन अब कुछ दिनों से वो सब पर गुस्सा होने लगी है और कई बार तो हिंसक भी और हमेशा अकेली रहना चाहती है। "डॉ विनोद ने अपनी शंका त्यागी के सामने बयां कर दी।
"डॉ ये भी तो हो सकता है कि उसके ट्रीटमेंट में कोई कमी हो रही हो जिसकी वजह से उसके व्यवहार में ये बदलाव आ रहे हों। "त्यागी को ये बात इतनी बड़ी नहीं लगी थी कि जिस पर गंभीर होता।
"सर सिर्फ इतनी ही बात होती तो मैं भी आप की तरह ही सोचता लेकिन उसने अभी कुछ दिन पहले एक ऐसी हरकत की है जिसकी वजह से मुझे उसका व्यवहार अजीब लग रहा है। "
"कौन सी हरकत ? "त्यागी ने गंभीर हो कर पूंछा।
"सर दो तीन दिन पहले की बात है, रात के एक बजे सलोनी अपने रूम से बाहर निकल कर गलियारे के दूसरे छोर पर नर्सों के रिसेप्शन पर लगे टेलीफोन से किसी से बात कर रही थी

कि तभी उधर से उस टाइम पर ड्यूटी कर रहा वार्डबॉय गुजरा तो ये सकपका गई और उसे दिखाने के लिए अजीब अजीब सी हरकत करने लगी। अगले दिन उस वार्डबॉय ने जब ये सब मुझे बताया तो मुझे यकीन नहीं हुआ, मुझे लगा कि वो किसी वजह से झूठ बोल रहा है फिर जब उसने कसम खाई तो फिर मैंने उस रात के सीसीटीवी फुटेज देखे तब मुझे पता चला कि वो सही कह रहा है। ये सब कुछ पता चलने के बाद भी मैंने अभी किसी से इस बारे में बात नहीं की है क्योंकि मैं खुद सलोनी पर नज़र रख कर सच्चाई का पता करना चाहता था। "डॉ बंसल ने सारी बात त्यागी को विस्तार से बता दी।
"ये बात तो सच में गंभीर है। क्या मैं वो फुटेज़ देख सकता हूँ ? "इस बात का पता चलते ही त्यागी के माथे पर बल पड़ गये, वो सोच में पड़ गया कि कोई मेंटली डिस्टर्ब इंसान इस तरह से कैसे व्यवहार कर सकता है ?
"आप मेरे साथ चलिये मैं आपको अभी कंट्रोल रूम में लिये चलता हूँ, वहां पर सीसीटीवी फुटेज का सारा रिकॉर्ड मिल जायेगा। "और ये बोलकर वो अपने केबिन से बाहर आ गया और उसके पीछे पीछे त्यागी भी।

कुछ देर बाद ही त्यागी और उसका जूनियर आकाश ग्राउंड फ्लोर पर स्थित कंट्रोल रूम के अंदर थे बाकी लोगों को उसने बाहर ही रोक दिया था, त्यागी ने बीच रास्ते में आकाश को चुपचाप सारी बातें बता दीं थी और ये सब जानकर वो भी हैरत में पड़ गया था।
कंट्रोल रूम में पहुंच कर डॉ बंसल ने ऑपरेटर से उस रात की फुटेज़ निकालने के लिए कहा। ऑपरेटर ने अपने सामने सिस्टम में उस रात की डेट और टाइम डाली और उन तीनों को सामने मॉनिटर की ओर इशारा कर के बोला "लीजिये ये देखिए। "
तीनों गौर से मॉनिटर को देखने लगे, स्पेशली त्यागी और आकाश।
उस फुटेज़ में सलोनी सधे हुए कदमों से अपने रूम से निकलती हुई दिखाई देती है। बाहर निकल कर वो गलियारे में बड़ी ही सतर्कता से दोनों तरफ देखती है और जब उसे वहाँ कोई नज़र नहीं आता तो वो उस तरफ बढ़ जाती है जिधर नर्सों का रिसेप्शन था। वहाँ पर पहुंच कर वो एक बार फिर इधर उधर देखती है और जब फिर से उसे कोई नज़र नहीं आता तो वो बड़ी ही सावधानी से वहाँ रखे फोन से किसी का नम्बर डायल करती है और उससे बात करने लगती है और साथ ही साथ दोनों तरफ सतर्कता से देखती जाती है और तभी उस तरफ एक वार्डबॉय आता हुआ दिखाई देता है जिसे देखकर वो जल्दी से रिसीवर नीचे रख कर अजीब अजीब सी हरकतें करने लगती है, देखने पर ऐसा ही लगता है जैसे कि कोई पागल ऐसे ही वहाँ रखे फोन से छेड़छाड़ कर रहा हो।
"डॉ बंसल क्या कोई मेंटली रिटायर्ड इंसान इस तरह प्लानिंग कर के किसी को फोन कर सकता है ? "उस फुटेज़ में सलोनी की हरकतों को देख कर त्यागी ने अपनी शंका डॉ बंसल

पर जाहिर कर दी।
"बिल्कुल नहीं इंस्पेक्टर साब, जो मरीज दिमागी रूप से बीमार होगा वो इस तरह की हरकत किसी भी कीमत पर नहीं कर सकता। उसकी ऐसी हरकत की वजह से ही मुझे भी शक हुआ था और इसीलिए मैंने आप से जिक्र किया था। "
"मुझे दाल में कुछ काला लग रहा है, कुछ न कुछ तो गड़बड़ है। मुझे इस मामले की तह तक जाना होगा, डॉ बंसल मुझे इसी समय आपकी पेशेंट से पूंछताछ करनी पड़ेगी। "त्यागी ने स्तिथि की गंभीरता को समझ कर ज्यादा देर करना उचित नहीं समझा।
"इंस्पेक्टर साब, ऑफिशियली तो मैं आपको पूछताछ की परमिशन नहीं दे सकता लेकिन अगर आप चाहे तो अनऑफिशियली पूछताछ कर सकते हैं। आप मेरी बात समझ रहे हैं न मैं क्या कहना चाह रहा हूँ ? "डॉ बंसल ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा।
"डॉ मैं आपकी बात समझ गया, थैंक्स "और फिर त्यागी अपने जूनियर आकाश से मुखातिब हो कर बोला "आकाश तुम थाने में फोन कर के दो लेडीज़ कॉन्स्टेबल बुला लो, शायद उनकी जरूरत पड़े। "
कुछ देर बाद वे सब सिक्स्थ फ्लोर के उस रूम के बाहर थे जिसमें सलोनी थी। त्यागी ने बाकी सभी को बाहर रोक कर अपने साथ आकाश, वो दो लेडीज़ कांस्टेबल और डॉ बंसल को ही रूम में अंदर आने दिया।
रूम के अंदर का माहौल पहले की तरह ही था, सलोनी अब भी उसी तरह उनकी तरफ पीठ कर के बैठी थी।
त्यागी ने उसे एक बार फिर उसे उसके नाम से आवाज़ लगाई लेकिन वो वैसे ही शान्त बैठी रही, लेकिन त्यागी ने इस बार उसे दोबारा आवाज़ न लगा कर उन लेडी कॉन्स्टेबल में से एक से उसे उठाने के लिए इशारा किया। त्यागी का इशारा मिलते ही उस लेडी कॉन्स्टेबल ने आगे बढ़ कर सलोनी का कंधा पकड़ कर उसे त्यागी की तरफ घुमा दिया। सलोनी अचकचा कर उनकी ओर घूम गई और आँखें फाड़ कर उन सभी को ऐसे देखने लगी जैसे सामने चिड़ियाघर के जानवर खड़े हों।
"क्या नाम है तुम्हारा ? "त्यागी ने उससे पूंछा।
लेकिन वो त्यागी के सवाल का जवाब देने की जगह ऐसे दिखाने लगी जैसे उसने कुछ सुना ही न हो और इधर उधर देखने लगी।
त्यागी अपना सवाल एक बार फिर दोहराता है लेकिन इस बार भी वो उसे अनसुना कर देती है।
उसे इस तरह की हरकत करते देख कर त्यागी ने उस लेडी कॉन्स्टेबल को एक बार फिर से इशारा किया।

त्यागी के इशारे पर वो कॉन्स्टेबल सिर हिलाकर आगे बढ़ती है और सलोनी के सिर के बाल पकड़कर उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ रशीद देती है। थप्पड़ की मार इतनी जबरदस्त थी कि सलोनी के मुंह से चीख निकल गई।
"म-मैं मेरा नाम सलोनी है। "अपना गाल सहलाते हुए वो जल्दी से बोल पड़ी।
उसके बोलते ही त्यागी को पक्का यकीन हो गया कि ये पागल नहीं है क्योंकि किसी दिमागी रूप से बीमार व्यक्ति को कितना भी मारो वो इस तरह अपना नाम नहीं बताता।
"देख मुझे सब पता चल गया है कि तू पागल नहीं है इसलिए तेरे लिए अच्छा यही रहेगा कि मैं तुझसे जो भी सवाल करूँ उनका तू सही सही जवाब दे। "त्यागी ने तीखी आवाज़ में उसे धमकाया।
फिर त्यागी ने वो सीसीटीवी फुटेज उसे अपने मोबाइल में दिखाई जो वो उस समय रिकॉर्ड कर लाया था जब वो उन्हें कंट्रोल रूम में देख रहा था। त्यागी ने फुटेज़ मे उसे वहां पर दिखाई जहां पर वो किसी से फोन पर बात कर रही थी।
"अब तू फटाफट बता कि फोन पर किससे बात कर रही थी ? क्या फोन पर दूसरी तरफ दीपक था ? " त्यागी के दिमाग में जबसे फुटेज़ देखी थी तब से यही थ्योरी चल रही थी कि सलोनी और दीपक के बीच जरूर कोई खिचड़ी पक रही थी और उसी खिचड़ी का नतीजा वो था दो मर्डर।
उस फुटेज़ को देख कर सलोनी का चेहरा झक्क सफेद पड़ गया लेकिन बोली वो फिर भी कुछ नहीं, त्यागी के सवाल को सुनकर भी वो मूर्ति बनी खड़ी रही।
उसे फिर से कुछ बोलता न देख कर त्यागी ने उस लेडी कॉन्स्टेबल को इशारा किया। वो कॉन्स्टेबल पहले से ही इशारे के इंतजार में थी इसीलिए हरी झंडी मिलते ही वो सलोनी पर टूट पड़ी, इस बार उसने एक थप्पड़ मार कर ही नहीं छोड़ा.. लगातार तब तक थप्पड़ लगाती रही जब तक सलोनी के मुंह से ही नहीं निकल गया "मुझे मत मारो, म-मैं सब कुछ बताने के लिए तैयार हूँ। "और फिर फूट फूट कर रोने लगी।
त्यागी ने उस कॉन्स्टेबल को रुकने का इशारा किया और फिर उसे कुछ देर ऐसे ही रोने दिया, जब उसकी रोते हुए हिचकी बन्द हो गईं तो त्यागी ने फिर से वही सवाल उसके सामने दोहरा दिया।
कुछ देर तक वो चुपचाप बैठी शून्य में देखती रहती है और फिर अपने आंसू पोंछ कर भर्राए गले से बोलना शुरू करती है।
"उस रात मैंने अजय को फोन किया था। "
उसके मुंह से एक अजनबी नाम सुनकर त्यागी मुंह फाड़ कर ऐसे देखने लगा जैसे उसके सिर पर सींग निकल आये हों।

"कौन अजय ? तू हमारा बेवकूफ बना रही है ताकि तू दीपक को बचा सके। मुझे सब पता है कि तेरे और दीपक के बीच में नाजायज़ सम्बन्ध थे इसलिए तुम दोनों ने मिलकर सोनिया को अपने बीच से कांटे की तरह निकाल फेंका। "त्यागी उसकी नई थ्योरी पर ज़ोर से चीखा।
"नहीं सर मैं झूठ नहीं बोल रही। अजय मेरे साथ कॉलेज में पढ़ता था। "
"फिर से मेरा बेवकूफ बना रही है, तू कॉलेज कब गई थी ? कॉलेज तो सोनिया गई थी। "त्यागी गुस्से से दाँत पीसते हुए बोला।
"सर म-मैं….. स-सोनिया ही हूँ सलोनी नहीं। "वो हकलाते हुए बोली।
"ऐसा कैसे हो सकता है ? तू सोनिया कैसे हो सकती है ? उसकी लाश तो मैं खुद अपनी आंख से देख चुका हूँ। "उसकी बात सुनकर त्यागी की खोपड़ी आश्चर्य के सागर में गोते लगा रही थी और ऐसा नहीं था कि केवल त्यागी की ही ऐसी हालत थी, सलोनी उर्फ सोनिया की बात सुनकर आकाश की हालत भी कुछ त्यागी जैसी ही थी।
"सर जो लाश आपने देखी थी वो लाश मेरी नहीं थी.. वो लाश सलोनी की थी। "सलोनी उर्फ सोनिया त्यागी को झटके पर झटके दे रही थी।
"पहेलियाँ बुझाने से अच्छा रहेगा कि तू मुझे सब कुछ क्लियर बता दे, उसमें तेरा भी फायदा है और हमारा भी। "त्यागी उसके इस तरह बार बार रंग बदलने से अपना आपा खो रहा था। त्यागी की बात सुनकर वो एक लंबी सांस लेती है और फिर बताना शुरू कर देती है।
"सर मैं और अजय एक ही कॉलेज में एक साथ पढ़ते थे। मुझे वो शुरू से काफी पसंद था और मैं उसी से शादी करना चाहती थी लेकिन मेरे पापा इस शादी के खिलाफ थे क्योंकि एक तो वो हमारी बिरादरी का नहीं था और दूसरा उन दिनों बेरोजगार था। इस वजह से पापा ने मेरी शादी मेरी मर्ज़ी के खिलाफ कर दी। लेकिन शादी के बाद भी मैं अजय को भूल नहीं पाई और उससे छुप छुप कर मिलती रही। इसी तरह जब हम एक दिन पास के रेस्टोरेंट में मिले तब अजय ने मुझसे कहा - ' सोनिया इस तरह से हम लोग कब तक मिलते रहेंगे ? मैं चाहता हूँ की तुम हमेशा के लिए मेरे साथ रहो, मैं तुम्हारे साथ शादी करना चाहता हूँ। '
' मैं भी चाहती हूँ कि हम तुम शादी कर के एक साथ रहें लेकिन दीपक के रहते ऐसा कैसे पॉसिबल होगा '
' तुम अगर हिम्मत करो तो मेरे पास एक आईडिया है। "
' बताओ क्या आईडिया है '
' तुम दीपक से बोल कर अपना एक करोड़ का बीमा करवाओ और उस में नॉमिनी दीपक को और दीपक के बाद नॉमिनी अपनी बहन सलोनी को करवा देना। "
' उस सब से हमें क्या फायदा होगा ? '

' यार पहले मेरी पूरी बात तो सुन लो, जब तुम्हारा बीमा हो जायेगा तो कोई तीन चार महीने के बाद तुम्हरा यानी की सोनिया का मर्डर हो जायेगा। '
' तुम हमारे एक होने का आईडिया बता रहे हो या मुझे मारने का प्लान ? '
' यार फिर से बात बीच में ही काट दी, जब तक पूरी बात सुनोगी नहीं तो समझोगी कैसे ? '
' अच्छा बाबा...सॉरी, अब पूरी बात सुनने के बाद ही बोलूंगी। '
' असल में जो मरेगी वो तुम नहीं तुम्हारी जुड़वा बहन सलोनी होगी '
' न- नही मैं अपनी बहन को नहीं मार सकती, तुम कोई और तरकीब सोचो। '
' कोई और आईडिया होता तो मैं तुम्हें ये सब कतई नहीं बताता। तुम खुद ही सोच कर बोलो सलोनी जैसी ज़िन्दगी जी रही है वो कौन सी मौत से बदतर है और फिर अगर तुम बिना अपनी पहचान मिटाये मेरे साथ भाग जाती हो तो क्या तुम्हरा पति तुम्हारा पता नहीं लगायेगा। तुम मेरे साथ भाग कर भी सुख से नहीं रह पाओगी। मेरी इस तरकीब से एक तो तुम्हारी पहचान बदल जाएगी दूसरा तुम्हें तुम्हारे पति से छुटकारा मिल जायेगा और बोनस में एक करोड़ रुपये अलग से मिलेंगे क्योंकि सोनिया के मरने के बाद तुम्हारी पहचान सलोनी होगी। और जब मामला शान्त हो जाएगा तो मैं रोड एक्सीडेंट में तुम्हारे पति दीपक को भी मरवा दूँगा और फिर उसके बाद मैं सेटिंग कर के तुम्हें उस पागलख़ाने से भी निकलवा लूँगा, फिर उसके बाद तुम मैं और एक करोड़ एकसाथ रहेंगे। '
"या तो उस समय मेरा वक्त खराब चल रहा था या फिर मैं उसके प्यार में इतनी अंधी हो चुकी थी कि अपना अच्छा बुरा कुछ भी सोचे बगैर मैं उसके इस खतरनाक आईडिया में शामिल हो गई। "सोनिया अपनी बुरी यादों की कोठरी से बाहर निकलते हुए बोली।
"अपने आईडिया को तुम लोगों ने अमलीजामा कैसे पहनाया, मेरा मतलब है कि मर्डर वाले दिन सलोनी तुम्हारे फ़्लैट पर कैसे पहुंची और फिर मर्डर के बाद तुम पागलखाने कैसे पहुंची ? "इतनी खतरनाक साज़िश को सुनकर त्यागी के शरीर के रोयें भी खड़े हो गए थे।
"सर अजय ने यहाँ पागलखाने के किसी कर्मचारी से सेटिंग कर ली थी उसी ने सलोनी को यहां से बाहर निकालने में और बाद में मुझे उसकी जगह लाने में मदद की थी। "
"यहां तक तो तुम्हारी बात समझ में आ रही है लेकिन एक बात जो मेरी अभी तक नहीं आई कि तुमने अपनी एक साल की मासूम की हत्या क्यों की ? उससे तो तुम लोगों को कोई खतरा भी नहीं था और तुम कैसी जल्लाद हो जो अपनी ही बेटी की हत्या कर देती हो ? "त्यागी ने उसे हिकारत से घूरते हुए ये सवाल पूंछा।
"सर वो मेरी सगी बेटी नहीं थी। मैं दीपक के बच्चे की माँ नहीं बनना चाहती थी, इसीलिए जब शादी के कई सालों तक हमारे कोई बच्चा नहीं हुआ तो दीपक ने बच्ची अनाथ आश्रम से गोद ले ली थी। "सोनिया अपनी नज़रें चुराते हुए बोली।

"सच में तुम लोगों की हैवानियत देख कर तो शैतान भी शर्मा जाये।"त्यागी के एक एक शब्द से घृणा टपक रही थी।
"अच्छा.. अब ये बताओ कि उस बेचारे अनुज को तुम लोगों ने इस केस में क्यों और कैसे फंसाया ? "
"सर अजय कंप्यूटर इंजीनियर है और साथ ही जबरदस्त हैकर भी। ये उसी का आईडिया था कि इन मर्डर्स में किसी दूसरे आदमी को फंसाया जाये क्योंकि अगर दीपक इन हत्याओं में फंसता तो बीमे की रकम किसी को भी नहीं मिलती। इसीलिए अजय ने अनुज का मोबाइल मर्डर वाले दिन हैक कर के उसकी लोकेशन इस शहर में और मर्डर वाली जगह की शो की ताकि पुलिस का शक उस पर जाये और चूंकि वो मुझे पहले से जानता था इसलिए उसके इन मर्डर्स में फंसने के ज्यादा चांस थे। अजय ने प्लानिंग काफी फुलप्रूफ की थी लेकिन हमारी किस्मत ने ही हमें दगा दे दिया। "सोनिया सिर झुकाये अपनी करतूतों का बखान कर रही थी।
उसकी सारी प्लानिंग सुनकर त्यागी उन दोनों की बुद्धि का लोहा मान गया। सच में दोनों ने बड़ी ही जबरदस्त प्लानिंग की थी, अगर उन दोनों की किस्मत खराब न होती तो शायद वे कभी भी पकड़े नहीं जाते और उनकी जगह एक निर्दोष सज़ा काट रहा होता।
"अब सिर्फ एक आखरी सवाल... ये अजय हमें कहाँ मिलेगा ? "त्यागी ने सोनिया की आंखों में आंखें डालते हुए पूंछा।
सोनिया ने बिना हील हुज्जत के अजय का पता बता दिया।
"आकाश जाओ और बताए हुए पते से अजय को गिरफ्तार कर के थाने ले आओ, मैं तुम्हें वहीं पर मिलूंगा। "
"ओके सर "आकाश त्यागी को सेल्यूट ठोंक कर तेज़ी से बाहर निकल गया।
और इधर त्यागी सोनिया को गिरफ्तार कर के थाने ले कर हवालात में बंद करने के बाद अनुज और दीपक को रिहा कर के अपने रूम में आ कर अपनी रिवोल्विंग चेयर पर बैठ कर सामने टेबल पर पैर फैला कर सोचने लगता है "मेरे अब तक के कैरियर में केस तो बहुत से आये लेकिन इस केस जैसा कोई नहीं, अगर मेरी किस्मत साथ न देती तो मैं कभी भी इस केस को सॉल्व नहीं कर पाता। भगवान करे कि मेरे कैरियर में आगे कभी भी ऐसा केस न आये क्योंकि किस्मत हमेशा साथ नहीं देती। "

ऋण

"क्या हुआ ? वो मिलीं क्या आपको ?? "सुहास के घर आते ही उसकी पत्नी नीता के मन में घुमड़ रहे जिज्ञासा के तूफान ने उसको सांस भी नहीं लेने दिया और सीधे उसके सामने अपना सवाल दाग दिया।

लेकिन सुहास ने तो जैसे उसका सवाल सुना ही नहीं, वो तो अपनी धुन में चुपचाप अपनी वर्दी उतारकर सेल्फ में टांगने और घर के कपड़े पहनने में व्यस्त था। क्या बताता वो नीता को की आज भी वो खाली हाँथ वापस आया है। उसके चेहरे पर घोर निराशा ने कब्जा जमा लिया था जिसे देख कर नीता भी उसकी मनोदशा समझ रही थी इसलिये उसने सुहास को दोबारा कुरेदने का प्रयास नहीं किया।
आज फिर सुहास ने रात का खाना नहीं खाया और सीधा बेडरूम में आ कर लेट गया। नीता को उसके दिल में नासूर बन चुके दर्द का एहसास अच्छी तरह से था इसलिये उसने उसके घाव को कुरेदना उचित नहीं समझा, वो भी उसके बगल में आ कर चुपचाप लेट गई। खुली आँखों में सोचते सोचते कब नींद आ गई उसे पता ही नहीं चला। जब सुबह उसकी आंख खुली तो देखा कि सुहास वर्दी पहन कर ऑफिस जाने के लिये तैयार खड़ा था। नीता ने उसे नाश्ते के लिये रुकने को बोला तो वो भावशून्य चेहरे के साथ बोला "रहने दो.. देर हो रही है, वहीं कुछ खा लूंगा। "और फिर वो बिना कुछ सुने ऑफिस के लिये निकल गया। नीता जानती थी कि जब तक वो उसे मिल नहीं जातीं तब तक वो इसी तरह छटपटाता रहेगा। उसने अपनी पांच साल की नौकरी में कई ट्रांसफर करवा लिये थे ताकि वो उन्हें अलग अलग शहरों में ढूंढ सके। लेकिन उसकी बदकिस्मती उसे हर बार निराश कर देती, बड़ी उम्मीद से वो इस शहर आया था कि शायद उसकी किस्मत यहाँ साथ दे जाये और वो उसे मिल जायें।

"यार इन नए एसपी साब ने तो हालत खराब करके रख दी, सुबह से रात तक दौड़वाते हैं। मजाल है जो हम लोग कुछ देर आराम कर पाएं। " सब इंस्पेक्टर विक्रम ने अपने समकक्ष दिलीप से झुंझलाते हुए कहा।
"यार सही कह रहा है तू.. पहले कितने आराम से थाने में बैठ कर ड्यूटी बजाते थे और यहीं बैठे बैठे मलाई मिल जाया करती थी और अब दिन भर कुत्तों की तरह बस रेड लाइट एरिया में उसे ढूंढते रहो जिसे अपने साब ढूँढवा रहे हैं। यार अब तो शहर भर की सारी धंधे वाली भी मुझे शक्ल से पहचानने लगी हैं... किसी दिन बाज़ार में बीवी के सामने किसी ने पहचान कर कुछ बोल दिया तो साला उसी दिन तलाक हो जाएगा.. साब का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा साला अपनी ज़िंदगी झंड हो जाएगी। "दिलीप विक्रम से भी ज्यादा भरा बैठा था इसलिये उसने अपनी सारी भड़ास निकाल दी।
लेकिन वे दोनों इस बात से बेखबर थे कि उनके नए साब यानी कि एस पी सुहास उनकी बात उनके रूम के बाहर खड़ा हो कर सुन रहा है। लेकिन सुहास ने उनकी बात सुनने के बावजूद उन्हें कुछ नहीं कहा। वो वापस अपने ऑफिस में आ गया और उन्हें वहां बुलवा

लिया। थोड़ी देर में दोनों उसके सामने थे, एक ज़ोरदार सैल्यूट ठोंक कर दोनों उसके सामने अलर्ट होकर खड़े हो गए।
सुहास ने दोनों से थोड़ी गुस्से मिश्रित कड़क आवाज़ में पूंछा "क्या प्रोग्रेस है केस में ? कहाँ तक पहुंचे आप लोग ? कुछ सुराग मिला या नहीं ? "
"सर अभी हमें कोई सफलता नहीं मिल पाई है, कोई भी उसके बारे में नहीं जानता। सर इन बदनाम गलियों में कोई भी 55-60 साल की बुढ़िया को जानना नहीं चाहता.. ऐसी जगहों पर सबको मासूम कलियों की दरकार होती है ना कि मुरझाये फूलों की। इसीलिए हमें कोई सुराग नहीं मिल पा रहा। फिर भी हम पूरी कोशिश कर रहे हैं और सर जल्द ही हम आपको कुछ अच्छी खबर देंगे। "विक्रम ने एक सांस में अपनी बात सुहास के सामने बयां कर दी।
सुहास जानता था कि उसने उन्हें भूंसे के ढेर में सुई ढूंढने का एक असम्भव काम सौंपा है इसीलिए उसने विक्रम की बात सुनकर सहमति में अपना सर हिलाया और फिर उसने उन्हें बाहर जाने का इशारा किया। उन दोनों के ऑफिस से बाहर निकलते ही सुहास अपनी पुरानी यादों में खो गया। एक चलचित्र की तरह सब कुछ उसकी आँखों के सामने चलने लगा, जिसमें वो साफ साफ देख पा रहा था कि एक 7-8 साल का बच्चा हाँथ में चाय की केतली और कुल्हड़ लेकर डरते डरते उस कोठे की सीढ़ियां चढ़ रहा है।

"अरे ये इतना छोटा बच्चा यहाँ इतनी सुबह अकेले कैसे आ गया और इसके हाँथो में चाय की केतली और कुल्हड़ क्यों हैं। "एक सुंदर सी 24-25 साल की लड़की जिसका नाम रूपा था ने अपने साथ बैठी लड़कियों से आश्चर्यचकित हो कर पूंछा।
"अरे ये अपने चाय वाले रामदीन को दो दिन पहले उसके खोखे के पास रोता हुआ मिला था। पूँछने पर पता चला कि अनाथ है, बस रामदीन ने तरस खा कर अपने पास रख लिया और अब कल से यही चाय ला रहा है। तू अगर दो दिन से अपने ग्राहक के साथ ना गई होती तो तुझे भी सारा किस्सा पता होता। "साथ वाली लड़कियों में से एक ने अपने जूड़े में से मुरझा चुके गजरे को निकालते हुए जम्हाई लेते हुए बोला।
"अरे इत्ते मासूम से बच्चे को ऊपर वाला कितनी तकलीफ दे रहा है, पता नहीं कहाँ से आया है और कौन होंगे इसके मां बाप। ??? "ये सब बोलते समय रूपा के चेहरे पर दर्द छलक आया था।
"बेटा कहाँ से आया है तू और तेरे घर में कौन कौन हैं ?? "उसने बड़े प्यार से उसके सिर पर हाँथ फिराते हुए पूंछा।
लेकिन उस मासूम के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला, अनजान लोग और अनजान जगह का डर उसकी आवाज़ पर ताला लगा रहा था।

रूपा उसका डर समझ गई और फिर उसने बड़े प्यार से उसे अपनी गोद में बिठा लिया और फिर पुचकारते हुए बोला "बेटा तू बिल्कुल भी मत घबरा... हम सब तेरे अपने हैं, हम सब तुझे खूब प्यार करेंगे "और फिर उसने उसे अपने गले से लगा लिया।
पता नहीं रूपा के आलिंगन में क्या ममत्व था कि उस मासूम के मुँह से एक भर्राया हुआ शब्द निकला "माँ ",
उसके मुंह से निकला वो दुनिया का सबसे प्यारा शब्द रूपा को ममत्व से अंदर तक भिगो गया, उस शब्द ने उसके अंदर की ममता को जगा दिया।
"हाँ बेटा... आज से मैं ही तेरी मां हूँ, अब तुझे किसी रामदीन के पास रोटी के लिये काम करने की जरूरत नहीं है, अब तू यहाँ रहेगा मेरे पास.. मैं तुझे पढवाऊंगी.. काबिल बनाउंगी "रूपा भावुक होते हुए उसे और जोर से गले लगाते हुए बोली।
"अच्छा बेटा ये तो बता की तेरा नाम क्या है "रूपा ने अपनी आंखों के भीगे हुए कोरों को पोंछते हुए बोली।
"सुहास... "वो तुतलाते हुए बोला।
उसका तुतला कर बोलना रूपा को इतना अच्छा लगा कि उसने उसे फिर से अपने आलिंगन में जकड़ लिया।
रूपा को सुहास के रूप में अपनी बेमक़सद ज़िंदगी में एक मक़सद नज़र आ गया था। उसने तय कर लिया कि अब से वो उस अबोध की मां बाप सब कुछ बनेगी। अब रूपा की दुनिया सुहास के इर्दगिर्द सिमट गई थी। रूपा ने बड़े प्रयत्न करके उस का दाखिला एक स्कूल में करवा दिया था, वो चाहती थी कि वो बड़ा हो कर एक कामयाब इंसान बने।
सुहास के लालन पालन के चक्कर में रूपा ने अपने काम पर ध्यान देना भी कम कर दिया था। बच्चे से दूर ना जाना पड़े इसलिए वो बाहर के ग्राहक मना कर देती, बस उतना ही कमाती जितने में उन दोनों मां बेटे की जरूरत पूरी हो जायें।
और फिर एक दिन सुहास जब अपने स्कूल से वापस वहाँ आया तो उसे चारों तरफ भगदड़ और पुलिस नज़र आई। वहाँ पर पुलिस की रेड पड़ी थी। सारी लड़कियों को पुलिस गिरफ्तार कर के थाने ले गई थी उन में से एक रुपा भी थी। बहुत रोई थी वो अपने सुहास के लिए की "मेरा बच्चा स्कूल गया है उसे आ जाने दो तब मुझे कहीं भी ले जाना "लेकिन उन्होंने उसकी एक नहीं सुनी थी और वो लोग उसे जबर्दस्ती थाने ले गए थे।
सुहास को उस भगदड़ में अपनी माँ कहीं नज़र नहीं आई तो वहीं ज़मीन पर बैठ कर सुबक सुबक कर रोने लगा। किसी का हाँथ अपने सिर पर पा कर उसने इस उम्मीद से सिर ऊपर उठाया कि शायद उसकी माँ आ गई लेकिन वहाँ तो वर्दी पहने कोई साहब खड़ा था और वो उससे पूंछ रहा था "बेटा कौन हो तुम ? तुम्हारे माँ बाप कौन हैं ? "

लेकिन डर की वज़ह से उसके मुँह से कुछ नहीं निकला... वो सिर्फ अपनी माँ को याद करके सिर्फ रो रहा था।
जब उससे उसके बारे में कुछ जानकारी नहीं मिल पाई तो उस पुलिस ऑफिसर ने अपने जूनियर को आदेश दिया कि इस बच्चे को किसी अनाथ आश्रम में भेज दिया जाए।
और हालात ने नन्हे सुहास को एक बार फिर से अनाथ बना दिया था।
अनाथ आश्रम में भी वो रूपा को याद करके रोता रहता लेकिन वहां कोई नहीं था जो उसके आंसू पोंछता या उसका सिर प्यार से सहलाते हुए अपने सीने से लगाता। और फिर एक दिन वहाँ एक दंपति बच्चा गोद लेने आये और ना जाने सुहास में क्या देखा कि उसे सीने से लगा कर उसे अपने घर ले गए।
वहाँ सुहास को सब कुछ मिला लेकिन माँ का वो प्यार ना मिल पाया जो उसे रूपा से मिला था। इसीलिए वो अपने अकेलेपन के साथ जीने की कोशिश करने लगा। उसे अपनी मां के वो शब्द याद आते की इसे मैं बड़ा आदमी बनाऊंगी..... और वो उन्हीं शब्दों से अपने अंदर ताकत इकट्ठा करके बड़ा आदमी बनने के सफ़र पर चल पड़ा था।

"साब एक सुराग का पता चला है.... एक सत्तर पिचहत्तर साल का बूढा मिला है जिसे उस बुढ़िया के बारे में जानकारी है, आप कहें तो उसे यहाँ थाने ले आएं। "
विक्रम की आवाज़ सुनकर सुहास चौंक कर अपनी यादों से बाहर आ गया।
"नहीं नहीं उसे यहां मत लाओ... हम ही वहाँ चलते हैं। "
और कुछ देर बाद उनकी सरकारी जीप शहर के एक कोने की झुग्गी बस्ती में जा कर रुकी। विक्रम उसे एक टूटे फूटे झोपड़े के सामने ले आया। अंदर से किसी के बुरी तरह से खाँसने की आवाज़ें आ रही थीं। अंदर जा कर सुहास को उस बूढ़े की शक़्ल कुछ जानी पहचानी लगी, अपनी धुंधली हो चुकी यादों के शीशे पर से उसने धूल की परत हटाई तो उसे याद आया कि ये तो ज़ोरावर था जो उस कोठे पर लठैत था.... उसका काम नई लड़कियों को वहाँ से भागने से रोकना और बिगड़ैल ग्राहकों से लड़कियों को बचाने का और उनसे पैसे वसूलने का था।
सुहास ने उसके पास जाकर जैसे ही उसका नाम लिया वो चौंक कर उसे देखने लगा, उसके उस नाम को वहाँ कोई जानता जो नहीं था।
"साब.... आप मुझे कैसे जानते हैं "ज़ोरावर ने फटी आंखों से पूंछा।
"रूपा याद है तुम्हें ? "सुहास ने उसके सवाल का जवाब ना दे कर अपना सवाल दाग दिया।
रूपा का नाम सुनकर उसकी आँखें एक बार को फैलती चली गईं और फिर अगले ही क्षण उसकी आँखों में दर्द की लकीरें तैर गईं।

"तुम... तुम रूपा को कैसे जानते हो ? " उसने भी सुहास के सवाल का ज़वाब सवाल से दिया।
"ज़ोरावर मैं सुहास हूँ.... रूपा का बेटा "सुहास का जवाब सुनकर ज़ोरावर कम चौंका... विक्रम की आंखे ज़्यादा फटती चली गईं वो चौंक कर सुहास को ऐसे देखने लगा जैसे वो सुहास नहीं कोई एलियन हो।
लेकिन सुहास ने विक्रम की तरफ ध्यान नहीं दिया, उसने दोबारा ज़ोरावर से सवाल किया "बताओ ज़ोरावर मेरी माँ कहाँ है और अब वो किस हाल में है ? "
"बेटा.... उससे ज्यादा बदकिस्मत शायद ही कोई इस दुनिया मे रहा हो, उस दिन जब पुलिस उसे तुझसे दूर लेकर गई तो वो पागल सी हो गई। बस तुझसे मिलने की रट सी लगा ली उसने लेकिन वहाँ उसकी किसी ने नहीं सुनी.... उसे जेल भेज दिया गया... वहाँ भी वो तेरे नाम की रट लगाती और कहती कि मेरा बेटा भूखा है मुझे छोड़ दो मैं उसे खाना खिला कर आ जाऊंगी... लेकिन उसकी दर्दीली पुकार सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था..... कुछ दिन बाद वो पूरी तरह से पागल हो गई.... उसे वहां से पागलखाने भेज दिया गया.... और फिर बेटा बाद में पता चला कि वो तेरा नाम रटते रटते एक दिन इस मतलबी और क्रूर दुनिया को छोड़ कर ख़ुदा के पास चली गई "ये सब बताते हुए उस पत्थर दिल ज़ोरावर की आंखों भी गंगा जमुना की तरह बहने लगी थी।
ज़ोरावर का ज़वाब सुहास के लिये किसी परमाणु बम के धमाके से कम नहीं था, वो धम्म से पास ही पड़ी टूटी फूटी कुर्सी पर गिर पड़ा। पुलिसवाला होने के बावजूद उसे संभलने में कुछ समय लगा।

डोर बेल की आवाज़ पर जैसे ही नीता ने मेन गेट खोला तो सामने सुहास खड़ा था। लाल आंखे और हाँथ में एक पोटली पकड़े हुए, नीता को देखते ही उसकी आँखों का बांध टूट गया... वो उससे चिपटकर फूट फूट कर रो पड़ा और सुबकते हुए सारी बातें उसे बता दी... नीता की भी आंखों से झर झर करके आंसू बहने लगे।
कुछ देर वे ऐसे ही रोते रहे फिर नीता ने सुहास को संभाला और उस पोटली के बारे में पूंछा।
उस पोटली में रूपा की चीजें थीं जो सुहास लौटते समय उस मेंटल हॉस्पिटल से लेता आया था। उसमें उसके कपड़े.. एक मंगलसूत्र.. जो कभी उसके गले तक नहीं पहुंच पाया था और एक बच्चों का लकड़ी का बाज़ा.. जो उसने सुहास को मेले से दिलवाया था... रूपा हर समय उस बाजे को पकड़े रहती और "कहती अभी मेरा सुहास आएगा और देखना इसे वो कितना सुंदर बजायेगा। "

ये सारी बातें सुहास को वहाँ अस्पताल से पता चलीं थीं और इसीलिए वो सारे रास्ते रोता हुआ आया था।
"सुहास... हमें इन सब वस्तुओं को मां की अस्थियां समझकर तुम्हारे हाँथो से गंगा में विसर्जित कर देना चाहिये... इससे जरूर मां की तड़पती आत्मा को मुक्ति मिलेगी "नीता ने सुहास को गले से लगाते हुए बोला।
और फिर अगले दिन वो दोनों अपनी कार से मां का ऋण उतारने और उसे मुक्ति दिलाने हरिद्वार की ओर जा रहे थे।